यन्त्र सिद्धि

यन्त्र सिद्धि



हिन्द पुस्तक भण्डार
खारी बावली, दिल्ली - 110006

यन्त्र-सिद्धि



कृपया शान्ति के लिए सोचें—

यह पुस्तक लोक-कल्याण के लिए प्रकाशित की गई है अतः किसी का अनिष्ट करने के लिए इसका कोई प्रयोग न करें।

★कुए ठण्डा पानी पीने के लिए बनाए जाते हैं अगर कोई दुर्बुद्धि इसमें गिरकर आत्महत्या करे तो इसमें कुआँ बनवाने वाले का क्या दोष।

★यह तन्त्र मन्त्र केवल श्रद्धा रखने पर ही प्रयोग में आते हैं। अत बिना श्रद्धा के कोई कार्य न करें।

★कृपया पुस्तक को प्रयोग करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को पढ़ लें।

यन्त्र-सिद्धि

वशीकरण, आकर्षण, स्तम्भन, विद्वेषण, मारण, उच्चाटन, शान्ती-करण एवं मोक्षकरण सम्बन्धी शास्त्रोक्त, लोकप्रचलित एवं इस्लामी पद्धति के यन्त्रों की सिद्धि, साधन तथा प्रयोग-विधि सहित ३१५ यन्त्रों का अभूतपूर्व संकलन-ग्रन्थ

●

लेखक

राजेश दीक्षित



हिन्द पुस्तक भण्डार

खारी बावली, दिल्ली - 110006

प्रकाशक

हिन्द पुस्तक भण्डार, दिल्ली-110006

संबद्ध संस्था

पुस्तक महल, दिल्ली-110006

बिक्री केन्द्र

1. गली केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार दिल्ली-110006
   फोन: 265403, 268292
2. खारी बावली, दिल्ली-110006
   फोन: 239314
3. 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
   फोन: 268293

प्रशासनिक कार्यालय

F-2/16, अन्सारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 276539, 272783, 272784

संस्करण 1986



मुद्रक:

बत्रा आर्ट प्रिन्टर्स, नारायणा, फेज़ I, नई दिल्ली 110028

यंत्र-सिद्धि

'यन्त्र-सिद्धि' नामक यह पुस्तक हमारे द्वारा लिखित एवं सम्पादित है। इस पुस्तक में ११ परिच्छेद हैं, जिनमें ३१५ यन्त्रों को संकलित किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक के पहले परिच्छेद में 'यन्त्र-साधन से पूर्व आवश्यक ज्ञातव्य विषयों का विस्तृत वर्णन है। साधक को उचित है कि किसी भी यन्त्र का साधन करने से पूर्व इस परिच्छेद में वर्णित सभी विषयों का एकाग्रचित्त से अनुशीलन करे, तदुपरान्त निर्देशानुसार आचरण करता हुआ यन्त्र-साधन की क्रिया में प्रवृत्त हो। इस परिच्छेद में निर्देशित आवश्यक-ज्ञान के अभाव में किसी भी साधक को सफलता प्राप्त नहीं हो सकती, इसे निश्चित समझ लेना चाहिए।

★ पुस्तक के दूसरे परिच्छेद से नवें परिच्छेद तक शास्त्रोक्त वशीकरण, आकर्षण, स्तम्भन, विद्वेषण, मारण, उच्चाटन, शान्तीकरण और मोक्षकरण सम्बन्धी विभिन्न यन्त्रों के स्वरूप, लेखन-सामग्री, पूजन-विधि एवं साधन की क्रियाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है। इन परिच्छेदों में वर्णित सभी यन्त्र सम्यक् विधि से साधित किये जाने पर विशेष लाभदायक सिद्ध होंगे, ऐसा समझना चाहिए।

★दसवें परिच्छेद में प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित तथा लोक में प्रचलित विभिन्न यन्त्रों का एकत्र वर्णन किया गया है। इसमें कोष्ठक वाले यन्त्रों की अधिकता है। इन यन्त्रों के साथ लेखन-सामग्री, पूजन-विधि आदि का संक्षिप्त विवरण दिया गया है, अतः इस सम्बन्ध में प्रथम परिच्छेद में वर्णित निर्देशानुसार कार्य करना चाहिए।

★ ग्यारहवें परिच्छेद में विभिन्न आकृति तथा कोष्ठकों वाले शास्त्रोक्त, लोक-प्रचलित एवं इस्लामी मत के यन्त्रों का एकत्र वर्णन किया गया है। जिन यन्त्रों के साथ लेखन-पूजनादि की विधि नहीं दी गई है, उनके विषय में प्रथम परिच्छेद में वर्णित निर्देशानुसार ही कार्य करना चाहिए।

★ सम्यक् विधान एवं विश्वासपूर्वक साधित यन्त्र फलदायक सिद्ध होते हैं। साधन की क्रिया में तनिक-सी भी त्रुटि होने पर वे निष्फल हो जाते हैं, अतः यन्त्र-साधन के समय धैर्यवान विश्वासी, पवित्र, संकल्पवान, ब्रह्मचारी एवं विधि-पालक रहना अनिवार्य है।

★ सभी यन्त्र 'मन्त्र शास्त्र' के ही अन्तर्गत गिने जाते हैं। कुछ यन्त्रों के प्राथ मन्त्रोच्चारण अथवा मन्त्र का जप करना भी आवश्यक होता है। ऐसे यन्त्रों के साथ मन्त्रों का भी यथास्थान वर्णन किया है। यन्त्र-साधन की भाँति ही मन्त्र-साधन की दिशा में भी पर्याप्त ध्यान देना अपरिहार्य है।

★ आशा है, हमारे इस श्रम को पाठकों का स्नेह प्राप्त होगा।

महोली की पौर,
मथुरा

राजेश दीक्षित

यन्त्र सिद्धि

अभिचारो भवेल्कल्पे ह्यविश्वासान्न संशयः
संशयेन कृतं यंत्रं विपरीतं प्रजायते ॥

[कल्प में अविश्वास करने से निस्सन्देह अभिचार हो जाता है और सन्देह पूर्वक किया हुआ कार्य विपरीत फलदायक होता है, इस लिए साधक को अविश्वास नहीं करना चाहिए।]

समर्पण

ज्योतिर्विद,

आचार्य पं० दीनानाथ चतुर्वेदी 'सुमनेश' मथुरा
आचार्य पं० बैजनाथ लवानियाँ, आगरा
पं० रामगोपाल शर्मा भारद्वाज, फरिहा (मैनपुरी)
को सस्नेह समर्पित

अपि तन्त्रविरुद्धं वा गुरुणा कथ्यते यदि ।
स्वमतं सदृशं वेदैर्म्महारुद्र वचो यथा ।।
सर्व्वं गुर्वाज्ञया कार्यं तत्त्वस्यागमनं बिना ।
अद्वैतं देवतैश्वर्य्यं न द्वैतं गुरुणा सह ।।
ना द्वैतं प्लवते कार्यं न समोऽस्तीह भूतले ।।
गुरुर्गतिः गुरुर्देवो गुरुर्देवी तथा प्रिये ।
स्वर्गलोके मर्त्यलोके नागलोके च वर्तते ।।

× × ×

यात्राशायां गुरोः स्थानं नित्यं प्रातश्च तन्मुखः ।
गुरुं तद्दयितां पुत्रान्पुत्रीरुद्दिश्य मानवः ।
प्रणमेद्भक्तिसंयुक्तः स सिद्धो नात्र संशयः ।।

पाठक सावधान रहें

१. परोपकारी, सच्चे, ईमानदार, पवित्र हृदयी एवं शुद्ध आचरण वाले व्यक्ति ही इसकी सिद्धियों से लाभ उठा सकते हैं।

२. इन तन्त्र मन्त्रों को बीमारी या इलाज में उस दशा में प्रयोग न करें जिससे दूसरों को हानि पहुँचे अथवा कोई सरकारी कानून के विरुद्ध हो।

३. नए जमाने के वे व्यक्ति इनका इस विद्या में विश्वास नहीं कदापि इस पुस्तक को न छुएँ। दुरुपयोग करने पर लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है।

४. अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए या दूसरों का अनिष्ट करने के लिए कभी भी इस पुस्तक का प्रयोग न करें।

५. परमपिता परमेश्वर में विश्वास रखें, सच्ची लगन से पाठ करें और विश्वास रखें कि सिद्धि आपको अवश्य मिलती है। क्योंकि सिद्धि कार्यकर्त्ता पर निर्भर है।

६. यह ध्यान रखें—

→पुस्तक में जहाँ मृत्यु शब्द का प्रयोग किया गया है वहाँ इसका अर्थ इतनी बड़ी हानि से है जिसमें दुश्मन मृत्यु के समान ही रह पाए।

→बलि देना या खून देना शब्द का अर्थ है थोड़ी उंगली काटकर टैस्टिंग के बतौर खून लेना।

→किसी का अनिष्ट करने के लिए पुस्तक का कोई योग आपको लाभ नहीं पहुँचा सकता।

→जहाँ 'मारना' शब्द प्रयोग है वहाँ इसका अर्थ जीवन समाप्त करने के बजाय 'हानि या नुकसान' समझें।

लेखक

विषय-सूची

(३) आकर्षण यन्त्र

(४) स्तम्भन यन्त्र

(११) विविध यन्त्र

यन्त्र-सिद्धि

१

यन्त्र-साधन से पूर्व आवश्यक ज्ञातव्य

यन्त्र-साधन से पूर्व उन सब विषयों की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए, जो यन्त्र-सिद्धि के लिए आवश्यक हैं। सम्बन्धित विषयों की जानकारी और तदनुसार आचरण किए बिना यन्त्र-साधन द्वारा अभीप्सित फल की प्राप्ति नहीं की जा सकती।

यन्त्र-साधन के लिए उपयुक्त वार, तिथि, नक्षत्र, राशि, ग्रह, मुहूर्त, दिशाशूल, स्थान, आसन, क्रिया-प्रक्रिया आदि का ध्यान रखना पड़ता है। इनमें से कुछ बातों का ज्योतिष विद्या से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। वैसे भी ज्योतिष-विद्या एवं यंत्र-विद्या अन्योन्याश्रित हैं। समुचित विधि-विधान के अभाव में यन्त्र निष्फल हो जाते हैं। अतः हम सर्वप्रथम उन प्रारम्भिक विषयों के सम्बन्ध में ही लिख रहे हैं, जिन्हें प्रत्येक साधक को हर समय स्मरण रखना चाहिए।

विश्वास की भावना

यन्त्र-साधन के लिए सबसे पहली आवश्यकता साधक का विश्वासी होना है; अर्थात् जब साधक किसी यन्त्र-सिद्धि का आयोजन करे तो उसके सम्बन्ध में अपने मन में किसी भी प्रकार का सन्देह उत्पन्न न होने दे। अविश्वासी साधक द्वारा किए गए यन्त्र-सिद्धि के प्रयोग न

केवल निष्फल होते हैं, अपितु विपरीत फल देने वाले, अर्थात् लाभ के स्थान पर हानि पहुँचाने वाले, हो जाते हैं। इसलिए किसी भी यन्त्र का साधन करते समय साधक को उसके प्रति पूर्ण आस्थावान् रहना चाहिए।

कर्म के प्रकार और प्रयोग

तांत्रिक कर्म के ६ प्रकार कहे गए हैं—(१) शान्तीकरण, (२) वशीकरण, (३) स्तंभन, (४) विद्वेषण, (५) उच्चाटन और (६) मारण।

उक्त ६ प्रकारों के ९ प्रयोग कहे गये हैं—

(१) मारण, (२) मोहन, (३) स्तम्भन, (४) विद्वेषण, (५) उच्चाटन, (६) वशीकरण, (७) आकर्षण, (८) यक्षिणी-साधन और (९) रसायन क्रिया।

उक्त सभी प्रकार के प्रयोगों के सम्बन्ध में प्रस्तुत ग्रन्थ 'महा इन्द्र-जाल' के विभिन्न खण्डों में प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत 'यन्त्र-सिद्धि' खण्ड में केवल यन्त्रों द्वारा सिद्ध किए जाने वाले कार्यों का वर्णन किया गया है।

यन्त्रों द्वारा सिद्ध किए जाने वाले कार्यों को ८ भागों में बाँटा गया है। यथा—(१) वशीकरण, (२) आकर्षण, (३) स्तम्भन, (४) विद्वेषण, (५) मारण, (६) उच्चाटन, (७) शान्तिकर्म और (८) मोक्षकर्म।

१. **वशीकरण**—किसी स्त्री, पुरुष अथवा पशु-पक्षी आदि को वश में करने के लिए जो साधन किए जाते हैं, उन्हें 'वशीकरण' कहा जाता है।

२. **आकर्षण**—किसी को अपनी ओर आकर्षित करने (खींचने) के लिए जो साधन किये जाते हैं, उन्हें 'आकर्षण' कहा जाता है।

३. **स्तम्भन**—किसी प्राणी अथवा पदार्थ को स्तम्भित कर देने (रोक देने) के लिए जो साधन किए जाते हैं, उन्हें 'स्तम्भन' कहा जाता है।

४. **विद्वेषण**—किन्हीं दो प्राणियों में झगड़ा कराने के लिए जो साधन किए जाते हैं, उन्हें 'विद्वेषण' कहा जाता है।

५. **मारण**—किसी प्राणी की मृत्यु के लिए जो साधन किए जाते हैं, उन्हें 'मारण' कहा जाता है।

६. **उच्चाटन**—किसी प्राणी अथवा वस्तु को भगाने, हटाने आदि के लिए जो साधन किए जाते हैं, उन्हें 'उच्चाटन' कहा जाता है।

७. **शान्तिकर्म**—उपद्रवों की शान्ति के लिए जो साधन किए जाते हैं, उन्हें 'शान्तीकरण' कहते हैं।

८. **मोक्षकर्म**—बन्धन-मुक्ति के लिए जो साधन किए जाते हैं, उन्हें 'मोक्षकर्म' कहा जाता है।

यन्त्रों के मुख्य भेद

यन्त्रों के दो मुख्य भेद हैं। पहला वह, जिसमें केवल यन्त्र का प्रयोग किया जाता है और उसी से कार्य की सिद्धि हो जाती है। दूसरा वह, जिसमें यन्त्र के साथ-साथ मन्त्र का भी जप करना पड़ता है। प्रस्तुत पुस्तक में दोनों ही प्रकार के यन्त्रों का वर्णन किया गया है। जिन यन्त्रों के साथ मंत्र का जाप आवश्यक है, वे मन्त्र-जाप किए बिना निष्फल रहते हैं।

यन्त्र-बीज तथा मंत्रों के प्रकार

यन्त्र-बीज तथा मन्त्र चार प्रकार के होते हैं—

(१) सिद्ध, (२) साध्य, (३) अरि, और (४) सुसिद्ध।

९, १, ५ में सिद्ध; ६, १०, २ में साध्य; ३, ७, ११ में सुसिद्ध एवं ४, ८, १२ में रिपु संज्ञक होते हैं। अर्थात्, अपनी राशि से मंत्र को

अथवा यंत्र की राशि नवीं, पहली और पाँचवीं हो तो सिद्ध; छठी, दसवीं और दूसरी हो तो साध्य; तीसरी, सातवीं और ग्यारहवीं हो तो सुसिद्ध तथा चौथी, आठवीं और बारहवीं हो तो शत्रु होता है।

'सिद्ध' कुछ काल में सिद्ध होता है; 'साध्य' सिद्ध होता भी है और नहीं भी होता; 'अरि' मूल को काटता है तथा 'सुसिद्ध' तत्काल फल देता है।

समय, वार, मास आदि का विचार

समय—वशीकरण और आकर्षण के लिए प्रातः १० बजे तक का समय, विद्वेषण के लिए मध्याह्न का समय, उच्चाटन और शान्तीकरण के लिए दिन के तीसरे प्रहर का समय तथा स्तम्भन और मारण के लिए सन्ध्या तथा रात्रि का समय श्रेष्ठ रहता है। मोक्ष कर्म के लिए समय का कोई बन्धन नहीं है।

ऋतु—यों तो ऋतुओं का परिवर्तन प्रति दो मास के बाद होता है, परन्तु सूक्ष्म रूप से प्रत्येक दिन-रात की ६० घड़ी (ढाई घड़ी का एक घण्टा होता है) में छहों ऋतुएँ १०-१० घड़ी के लिए भोग करती हैं। प्रातः ६ से १० बजे तक वसन्त, १० से २ बजे तक ग्रीष्म, मध्याह्न २ से ६ बजे तक वर्षा, सायं ६ से रात्रि १० बजे तक शिशिर, रात्रि १० से २ बजे तक शरद्, रात्रि २ से प्रातः ६ बजे तक हेमन्त ऋतु रहती है।

हेमन्त ऋतु में शान्तिकर्म, बसन्त ऋतु में वशीकरण, ग्रीष्म ऋतु में विद्वेषण, वर्षा ऋतु में उच्चाटन, शिशर ऋतु में स्तम्भन एवं शरद् ऋतु में मारणकर्म करना उचित है।

तिथि—शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावस्या तक ३० दिन होते हैं (इनमें प्रारम्भ के १० दिन उत्तम, मध्य के १० दिन मध्यम तथा अन्त के १० दिन निकृष्ट कहे जाते हैं।

वार—शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ के पहले गुरुवार, सोमवार एवं रविवार—ये तीनों दिन अत्यन्त शुभ होते हैं। इनमें जिस कार्य को

भी आरम्भ किया जाता है, वह शीघ्र सिद्ध होता है।

रविवार, सोमवार एवं गुरुवार को वशीकरण, आकर्षण, धन-प्राप्ति, गर्भ-स्थिति, शरीर-बल, आरोग्य-प्राप्ति आदि के लिए किए जाने वाले कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं।

शुक्रवार और बुधवार के दिन स्तम्भन, विद्वेषण, भूतादिक दोष-निवारण, वस्तु-विवेचना आदि के लिए किए जाने वाले कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं।

शनिवार और मंगलवार के दिन उच्चाटन, मारण, धन-हानि, भय, बन्धन, गर्भ-खण्डन आदि के लिए किए जाने वाले कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं।

मास—फाल्गुन, ज्येष्ठ, भाद्रपद और मार्गशीर्ष (अगहन) के महीने 'उत्तम' कहे गए हैं। इनमें वशीकरण, आकर्षण, शान्तिकर्म आदि करने चाहिए।

पौष, चैत्र, आषाढ़ एवं आश्विन (क्वार) के महीने 'मध्यम' कहे गए हैं। इनमें स्तम्भन, विद्वेषण आदि कर्म करने चाहिए।

माघ, वैशाख, श्रावण और कार्तिक के महीने 'अधम' कहे गए हैं, इनमें मारण, उच्चाटन आदि कर्म करने चाहिए।

मोक्षकर्म के लिए सभी महीने शुभ हैं।

सूर्य-चन्द्र की प्रबलता—कृष्ण पक्ष की प्रारम्भिक नौ तिथियों में अर्थात् प्रतिपदा से नवमी तक सूर्य प्रबल रहता है तथा शेष छै तिथियों में अर्थात् दशमी से अमावस्या तक चन्द्रमा प्रबल रहता है। इसी तरह शुक्ल पक्ष की प्रारम्भिक नौ तिथियों में, अर्थात् प्रतिपदा से नवमी तक, चन्द्रमा प्रबल रहता है और शेष छै तिथियों में, अर्थात् दशमी से पूर्णिमा तक, सूर्य प्रबल रहता है।

सूर्य की प्रबलता की तिथियों में चरकार्य एवं चन्द्रमा की प्रबलता की तिथियों में स्थिर कार्य करने चाहिए। थोड़ी देर के कार्यों को—जैसे घोड़े पर चढ़ना, नाव पर चढ़ना आदि को 'चर' एवं अधिक

समय के कार्यों को—जैसे रोग से छुटकारा पाने के लिए चिकित्सा आदि—को 'स्थिर' कहते हैं।

राशि-विचार

राशियाँ १२ होती हैं—

(१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुला, (८) वृश्चिक, (९) धन, (१०) मकर, (११) कुंभ, (१२) मीन।

ये राशियाँ २७ नक्षत्रों के संयोग से बनती हैं। सत्ताईस नक्षत्र इस प्रकार हैं—

(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिर, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) अश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वा-फाल्गुनी, (१२) उत्तरा-फाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाँति, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़, (२१) उत्तराषाढ़, (२२) श्रवण, (२३) धनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वा-भाद्रपद, (२६) उत्तरा-भाद्रपद, (२७) रेवती।

'अभिजित्' नामक एक अट्ठाईसवाँ नक्षत्र भी माना जाता है। इसकी स्थिति 'उत्तराषाढ़' के बाद एवं 'श्रवण' से पहले मानी गई है।

उक्त सभी नक्षत्रों के चार-चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण के लिए एक-एक अक्षर निश्चित किया गया है। प्रथम नक्षत्र 'अश्विनी' से आरम्भ करके क्रमशः सभी नक्षत्रों के नौ-नौ चरण की एक-एक राशि होती है। 'अभिजित्' को 'श्रवण' के साथ ही मिला दिया जाता है।

नीचे दिए गए कोष्ठक में नक्षत्रों के चरण, प्रत्येक चरण के अक्षर और नौ-नौ चरणों से बनने वाली प्रत्येक राशि को प्रदर्शित किया गया है। इससे यह भली भाँति पता चल जाता है कि किस नाम के

व्यक्ति का किस नक्षत्र के किस चरण में जन्म हुआ है और उसकी कौन सी राशि है।

यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि वैसे तो मनुष्य का जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो, उसी के उस समय के विद्यमान चरण के अक्षर के अनुसार उसका नाम रक्खा जाना चाहिए, परन्तु अधिकांश में ऐसा होता नहीं है। लोगों का जन्म किसी अन्य नक्षत्र में हुआ होता है और उनका पुकारने का नाम कुछ दूसरा ही होता है। ऐसी स्थिति में जो पुकारने का नाम हो अर्थात् जिस नाम से व्यक्ति प्रसिद्ध हो, उसी के अनुसार उसका नक्षत्र और तदनुसार राशि मानकर ही चलना चाहिए, क्योंकि सभी व्यावहारिक कार्यों में बोले जाने वाले नाम के अनुसार ही राशि को मान्यता दी जाती है।

राशि जानने के लिए नाम के आदि-अक्षर को ही ग्रहण किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का नाम 'रामलाल' है तो नाम के आदि-अक्षर 'रा' के अनुसार उसका नक्षत्र 'चित्रा' होगा और उसका जन्म 'चित्रा' नक्षत्र के तीसरे चरण का माना जायगा तथा उसकी राशि 'तुला' होगी।

नक्षत्रों के अक्षर इस प्रकार होते हैं—

(१) अश्विनी—चू, चे, चो, ला।
(२) भरणी—ली, लू, ले, लो।
(३) कृत्तिका—अ, इ, उ, ए।
(४) रोहिणी—ओ, बा, बी, बू।
(५) मृगशिर—वे, वो, का, की।
(६) आर्द्रा—क, घ, ङ, छ।
(७) पुनर्वसु—के, को, हा, ही।
(८) पुष्य—हू, हे, हो, डा।

(६) अश्लेषा—डी, डू, डे, डो।
(१०) मघा—मा, मी, मू, मे।
(११) पूर्वाफाल्गुनी—मो, टा, टी, टू।
(१२) उत्तराफाल्गुनी—टे, टो, पा, पी।
(१३) हस्त—पू, ष, ण, ठ।
(१४) चित्रा—पे, पो, रा, री।
(१५) स्वाँति—रू, रे, रो, ता।
(१६) विशाखा—ती, तू, ते, तो।
(१७) अनुराधा—ना, नी, नू, ने।
(१८) ज्येष्ठा—नो, या, यी, यू।
(१६) मूल—ये, यो, भा, भी।
(२०) पूर्वाषाढ़—भू, धा, फा, ढ़ा।
(२१) उत्तराषाढ़—भे, भो, जा, जी।
(२२) अभिजित्—जू, जे, जो, खा।
(२३) श्रवण—खी, खू, खे, खो।
(२४) धनिष्ठा—गा, गी गू, गे।
(२५) शतभिषा—गो, सा, सी, सू।
(२६) पूर्वाभाद्रपद—से, सो, दा, दी।
(२७) उत्तराभाद्रपद—दू, थ, भ, ञ।
(२८) रेवती—दे, दो, चा, ची।

राशि-ज्ञान-कोष्ठक

राशि का नाम	राशि के नक्षत्र	राशि के अक्षर
मेष	अश्विनी, भरणी, कृत्तिका का पहला एक चरण।	चू, चे, चो, ला; ली, लू, ले, लो; आ
वृष	कृत्तिका के पिछले तीन चरण; रोहिणी मृगशिर के पहले दो चरण।	इ, उ, ए; ओ, वा, वी, वू; वे, वो
मिथुन	मृगशिर के पिछले दो चरण; आर्द्रा, पुनर्वसु के पहले तीन चरण।	का, की; कू, घ, ङ, छ; के, को हा
कर्क	पुनर्वसु का अन्तिम एक चरण, पुष्प-अश्लेषा।	ही; हू, हे, हो, डा; डी, डू, डे, डो
सिंह	मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी का पहला एक चरण।	मा, मी, मू, मे; मो, टा, टी टू; टे
कन्या	उत्तरा फाल्गुनी के पिछले तीन चरण, हस्त, चित्रा के पहले दो चरण।	टो, पा, पी; पू, ष, ण, ठ; पे, पो
तुला	चित्रा के अन्तिम दो चरण; स्वाँति, विशाखा के पहले तीन चरण।	रा, री; रू, रे, रो, ता; ती, तू, ते
वृश्चिक	विशाखा का एक अन्तिम चरण; अनुराधा, ज्येष्ठा।	तो; ना, नी, नू, ने; नो, या, यी, यू
धन	मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़ का पहला एक चरण।	ये, यो, भा, भी; भू, धा, फा, ढ़ा; भे
मकर	उत्तराषाढ़ के अन्तिम तीन चरण, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा के पहले दो चरण।	भो, जा, जी; जू, जे, जो, खा; खी, खू, खे, खो; गा, गी
कुंभ	धनिष्ठा के अन्तिम दो चरण; शतभिषा, पूर्वा-भाद्रपद के पहले दो चरण।	गू, गे; गो, सा, सी, सू; से, सो, दा
मीन	पूर्वाभाद्रपद का अन्तिम एक चरण; उत्तराभाद्रपद, रेवती।	दी; दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

राशियों के स्वामी और उनका स्वभाव आदि

(१) रवि, (२) चंद्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) गुरु, (६) शुक्र और (७) शनि—ये सात ग्रह बारह राशियों के स्वामी होते हैं।

नीचे के कोष्ठक में, किस राशि का स्वामी कौन सा ग्रह है, उसका कौन सा स्थान है, कौन सी जाति है और क्या स्वभाव है, यह प्रदर्शित किया गया है—

राशियों के स्वामी और उनका स्वभाव जानने का कोष्ठक

राशि का नाम		स्वामी	स्थान	स्वभाव	जाति	प्रभाव
१	मेष	मंगल	पूर्व	चर	आतशी	शरीर का शुभाशुभ
२	वृष	शुक्र	दक्षिण	स्थिर	खाकी	घर का धन
३	मिथुन	बुध	पश्चिम	द्विस्वभाव	वादी	भाई, बहिन
४	कर्क	चन्द्र	उत्तर	चर	आवी	माता, पिता, आरोग्य
५	सिंह	सूर्य	पूर्व	स्थिर	आतशी	सन्तान, बुद्धि
६	कन्या	बुध	दक्षिण	चर	खाकी	शत्रु, रोग
७	तुला	शुक्र	पश्चिम	स्थिर	वादी	स्त्री, यात्रा
८	वृश्चिक	मंगल	उत्तर	द्विस्वभाव	आवी	मृत्यु, रोग
९	धन	गुरु	पूर्व	द्विस्वभाव	आतशी	धर्म, ज्ञान
१०	मकर	शनि	दक्षिण	चर	खाकी	राज्य
११	कुंभ	शनि	पश्चिम	स्थिर	वादी	द्रव्य, लाभ
१२	मीन	गुरु	उत्तर	द्विस्वभाव	आवी	व्यय

पंचक विचार

(१) धनिष्ठा, (२) शतभिषा, (३) पूर्वा-भाद्रपद, (४) उत्तरा-

भाद्रपद और (५) रेवती—इन पाँच नक्षत्रों को 'पंचक' कहा जाता है। इन नक्षत्रों में कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

किस दिन और किस समय, कौन सा नक्षत्र होगा, यह बात पंचाँग (पत्रा) से जानी जा सकती है।

नक्षत्र विचार

किसी विशेष दिन में, किसी विशेष नक्षत्र के होने पर कौन सा कार्य करना लाभदायक रहता है, इसे नीचे दिए गए कोष्ठक में प्रदर्शित किया गया है।

नक्षत्र-विचार-कोष्ठक

दिन	नक्षत्र	किए जाने वाले कार्य
चन्द्र	स्वाँति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।	हाथी, घोड़ा, नाव पर सवारी, यात्रा आदि।
मंगल	पूर्वा-फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वा-भाद्रपद, भरणी, मघा।	धातु, अग्नि में जलाना, विष देना, शस्त्र मारना आदि।
बुध	विशाखा, कृत्तिका।	यज्ञ, हवन, यंत्र, अग्नि के कार्य आदि।
गुरु	हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्।	स्थिर कार्य, दुकान, व्यापार, रति, शिल्प, विद्या, कुश्ती आदि।
शुक्र	मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा।	गाना, वस्त्र धारण, क्रीड़ा, वशीकरण, मित्र-मिलाप आदि।
शनि	मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा।	मंत्र-विद्या, जादू, मारण, उच्चाटन, घोडा फेरना आदि।
रवि	पूर्वा-फाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी।	बीज बोना, भवन निर्माण, स्थिर कार्य, गद्दी पर बैठना, ग्राम बसाना आदि।

यदि किसी संक्रान्ति में रविवार के दिन सप्तमी तिथि हो तो, उस दिन किया हुआ कार्य अवश्य सिद्ध होता है।

संक्रान्ति, भद्रा तिथि, रिक्ता तिथि, अशुभ और शुभ तिथियों के विषय में किसी विद्वान् पंडित से जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। इन सब बातों का उल्लेख पंचांग में रहता है।

दिशा-शूलविचार

किसी कार्य की सिद्धि के लिए जाते समय दिशाशूल का विचार करना आवश्यक है।

शनिवार और सोमवार को पूर्व दिशा में, शुक्रवार और रविवार को पश्चिम दिशा में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर दिशा में तथा बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा में दिशाशूल रहता हैं। अतः इन दिनों में वर्णित दिशाओं में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

योगिनी-विचार

विभिन्न तिथियों में योगिनी का वास नीचे लिखे अनुसार रहता है—

प्रतिपदा को पूर्व में, द्वितीया को उत्तर में, तृतीया को अग्नि-कोण में, चतुर्थी को नैर्ऋत्य कोण में, पंचमी को दक्षिण में, षष्ठी को पश्चिम में, सप्तमी को वाचव्य कोण में, अष्टमी को ईशान कोण में, नवमी को पूर्व में, दशमी को उत्तर में, एकादशी को अग्नि कोण में, द्वादशी को नैर्ऋत्य कोण में, त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्दशी को पश्चिम में, पूर्णिमा को वाचक कोण में तथा अमावस्या को ईशान कोण में।

पीठ पीछे की तथा बाँई ओर की योगिनी शुभ फल देने वाली तथा सामने और दाँई ओर की अशुभ फल देने वाली होती है। अतः यात्रा के समय योगिनी का विचार भी कर लेना चाहिए।

चन्द्रमा का विचार

मेष, सिंह, धन राशि का चन्द्रमा पूर्व में, मिथुन, तुला, कुंभ का पश्चिम में, मकर, वृष, कन्या का दक्षिण में तथा कर्क, मीन, वृश्चिक का उत्तर में रहता है। किस दिन किस राशि का चन्द्रमा है, यह बात पंचाँग से जान लेनी चाहिए।

अपनी राशि का चन्द्रमा कल्याणकारक होता है, दूसरी राशि का मन को सन्तोष देने वाला, तीसरी राशि का धन-सम्पत्ति देने वाला, चौथी राशि का झगड़ा कराने वाला, पाँचवी राशि का ज्ञान और बुद्धि को बढ़ाने वाला, छठी राशि का उत्तम लाभ को दिलाने वाला, सातवीं राशि का राज-सम्मान दिलाने वाला, आठवीं राशि का दुःख और मृत्यु को देने वाला, नवीं राशि का धर्म की वृद्धि करने वाला, दसवीं राशि का सुख उत्पन्न करने वाला, ग्यारहवीं राशि का सब प्रकार की सिद्धि देने वाला तथा बारहवीं राशि का हानिकारक होता है।

पहली, दूसरी, तीसरी तथा पाँचवीं राशि का चन्द्रमा मस्तक पर रहता है, यह सुखदायक होता है। चौथी, आठवीं, बारहवीं राशि का चन्द्रमा पाँवों पर रहता है, यह घर-घर घुमाता है। छठी, नवीं राशि का चन्द्रमा पीठ पर रहता है, यह हानि करता है। सातवीं, दसवीं, ग्यारहवीं राशि का चन्द्रमा हृदय पर रहता है, यह भी सुखदायक होता है।

नन्दा, भद्रा आदि तिथियों का विचार

प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी को 'नन्दा' तिथि कहते हैं। द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी को 'भद्रा' तिथि कहते हैं। तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी को 'जया' तिथि कहते हैं। चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी को 'रिक्ता' तिथि कहते हैं तथा पंचमी, दशमी और पूर्णिमा अथवा अमावस्या को 'पूर्णा' तिथि कहते हैं।

शुक्रवार को नन्दा, बुधवार को भद्रा, मंगलवार को जया, शनिवार को रिक्ता और गुरुवार को पूर्णा तिथियाँ हों तो 'सिद्धियोग' बनता है। इसके विपरीत रविवार अथवा गुरुवार को नन्दा, चन्द्रवार अथवा गुरुवार को भद्रा, बुधवार को जया, शुक्रवार को रिक्ता एवं शनिवार को पूर्णा तिथि हों तो 'मृत्यु योग' बनता है।

'सिद्धि योग' में कार्य-साधन करने से सिद्धि होती है एवं 'मृत्यु योग' में कार्य-साधन करने से हानि होती है।

ऋरणी-धनी का विचार

लेने वाले को ऋरणी और देने वाले को धनी कहा जाता है। यदि साधक धनी हो तो कार्य अवश्य सिद्ध होता है। यदि ऋरणी हो तो सिद्ध नहीं होता अथवा कठिनाई से सिद्ध होता है।

ऋरणी-धनी के विचार के लिए वर्गों के नाम, अक्षर तथा अंकों का मिलान करके देखना चाहिए। नीचे दिए गए कोष्ठांक में यह प्रदर्शित किया गया है कि किस नाम वाले व्यक्ति का कौन सा वर्ग होता है। प्रत्येक नाम के आदि-अक्षर से वर्ग को जानना चाहिए।

वर्ग-ज्ञान-कोष्ठक

वर्ग	नाम के अक्षर				
गरुड़	अ	इ	उ	ऋ	ए
बिलाव	क	ख	ग	घ	ङ
सिंह	च	छ	ज	झ	ञ
श्वान	ट	ठ	ड	ढ	ण
सर्प	त	थ	द	ध	न
मूषक	प	फ	ब	भ	म
मृग	य	र	ल	व	
मेंढा	श	ष	स	ह	

कौन सा वर्ग किस वर्ग से प्रबल अथवा निर्बल होता है, यह नीचे दिए गए कोष्ठक में प्रदर्शित किया गया है। अपने वर्ग से पाँचवाँ वर्ग शत्रु, चौथा मित्र तथा तीसरा सम होता है।

यदि ऋरणी-धनी दोनों एक ही वर्ग के हों तो श्रेष्ठ होता है, तथा यदि धनी का वर्ग प्रबल हो तो अत्यन्त श्रेष्ठ होता है। इसके विपरीत यदि ऋरणी का वर्ग प्रबल हो तो कार्य सिद्ध होने में विलम्ब होता है।

वर्ग-प्रावल्य कोष्ठक

वर्ग				वर्ग			
पहले का	दूसरे का	प्रबल	निर्बल	पहले का	दूसरे का	प्रबल	निर्बल
गरुड़ १	गरुड़	सम	सम	बिलाव १०	श्वान	श्वान	बिलाव
गरुड़ २	बिलाव	गरुड़	बिलाव	बिलाव ११	सर्प	बिलाव	सर्प
गरुड़ ३	सिंह	गरुड़	सिंह	बिलाव १२	मूषक	बिलाव	मूषक
गरुड़ ४	श्वान	गरुड़	श्वान	बिलाव १३	मृग	बिलाव	मृग
गरुड़ ५	सर्प	गरुड़	सर्प	बिलाव १४	मेंढ़ा	बिलाव	मेंढ़ा
गरुड़ ६	मूषक	गरुड़	मूषक	बिलाव १५	बिलाव	सम	सम
गरुड़ ७	मृग	गरुड़	मृग	सिंह १६	श्वान	सिंह	श्वान
गरुड़ ८	मेंढ़ा	गरुड़	मेंढ़ा	सिंह १७	सर्प	सिंह	सर्प
बिलाव ९	सिंह	सिंह	बिलाव	सिंह १८	मूषक	सिंह	मूषक

वर्ग पहले का	वर्ग दूसरे का	प्रबल	निर्बल	वर्ग पहले का	वर्ग दूसरे का	प्रबल	निर्बल
सिंह १९	मृग	सिंह	मूषक	सर्प २८	मेंढ़ा	सर्प	मेंढ़ा
सिंह २०	मेंढा	सिंह	मेंढ़ा	सर्प २९	मूषक	सर्प	मूषक
सिंह २१	सिंह	सम	सम	सर्प ३०	सर्प	सम	सम
श्वान २२	श्वान	सम	सम	मूषक ३१	मूषक	सम	सम
श्वान २३	सर्प	श्वान	सर्प	मूषक ३२	मृग	सम	सम
श्वान २४	मूषक	श्वान	मूषक	मूषक ३३	मेंढ़ा	सम	सम
श्वान २५	मृग	श्वान	मृग	मृग ३४	मृग	सम	सम
श्वान २६	मेंढ़ा	श्वान	मेंढ़ा	मृग ३५	मेंढ़ा	मेंढ़ा	मृग
सर्प २७	मृग	सर्प	मृग	मेंढा ३६	मेंढा	सम	सम

किस वर्ग के व्यक्ति का कौनसा वर्गांक है और वह किस का ऋणी-धनी है, इसे नीचे दिए गए कोष्ठक से भलि-भाँति जाना जा सकता है। इस कोष्ठक में वर्गांक के अतिरिक्त अक्षरों के अंक भी दिए गये हैं। विधि कोष्ठक के नीचे प्रदर्शित की गई है।

ऋणी-धनी का कोष्ठक

वर्गांक	वर्ग का नाम	वर्गों का अक्षर					गुणक अंक	व्यवस्था
१	गरुड़	अ	इ	उ	ए	ऋ	८	जैसे किसी व्यक्ति का नाम 'रामचन्द्र' है, तो उसका वर्ग 'मृग' होगा और उसका वर्गांक ७ तथा गुणक-अंक ३ होगा। इसी तरह प्रत्येक नाम के आदि-अक्षर से उसका वर्ग, वर्गांक तथा गुणन-अंक जान लेना चाहिए।
२	बिलाव	क	ख	ग	घ	ङ	५	
३	सिंह	च	छ	ज	झ	ञ	६	
४	श्वान	ट	ठ	ड	ढ	ण	७	
५	सर्प	त	थ	द	ध	न	७	
६	मूषक	प	फ	ब	भ	म	१	
७	मृग	य	र	ल	व		३	
८	महिष	श	ष	स	ह		०	

ऋणी-धनी को जानने की रीति यह है—

'रामचन्द्र' नामक किसी धनवान व्यक्ति के यहाँ 'बालकराम' नामक एक व्यक्ति नौकरी करना चाहता है तथा रामचन्द्र उसे अपने

यहाँ अवश्य नौकर रख ले, इस हेतु यन्त्र-साधन के द्वारा उपाय करना चाहता है, ऐसी स्थिति में उसे ऋणी-धनी का विचार निम्नानुसार करना चाहिए—

'रामचन्द्र' का वर्गांक कोष्ठक के अनुसार ७ तथा 'बालकराम' को वर्गांक ६ है।

'रामचन्द्र' के वर्गांक ७ को २ से गुणा करके एक ओर रख लिया जाय तथा 'बालकराम' के वर्गांक ६ को २ से गुणा करके दूसरी ओर रख लिया जाय। स्थिति इस प्रकार होगी—

रामचन्द्र	बालकराम
७×२=१४	६×२=१२

अब प्रत्येक के गुणा किए हुए वर्गांक में दूसरे का वर्गांक जोड़कर अलग-अलग ८ का भाग दिया जाय। जैसे—

१४ रामचन्द्र का वर्गांक गुणा करने के बाद	१२ बालकराम का वर्गांक गुणा करने के बाद
६ बालकराम का वर्गांक	७ रामचन्द्र का वर्गांक
८)२०(२	८)१९(२
१६	१६
४ शेष	३ शेष

आठ का भाग देने के बाद जो शेष बचे, उसे 'काकिणी' कहा जाता है। उक्त हिसाब में रामचन्द्र की काकिणी ४ तथा बालकराम की काकिणी ३ है।

जिस व्यक्ति की काकिणी अधिक हो, वह ऋणी होता है तथा जिसकी काकिणी कम हो वह धनी होता है। इस नियम से 'रामचन्द्र' की काकिणी अधिक है, अतः रामचन्द्र ऋणी है और 'बालकराम' की काकिणी कम है, अतः बालकराम राम 'धनी' है।

अस्तु, ऋणी रामचन्द्र को धनी बालकराम का ऋण चुकाने के लिए उसे अपने यहाँ नौकरी देनी ही पड़ेगी। अर्थात् यदि बालकराम

रामचन्द्र के यहाँ नौकरी करने जाता है और इस कार्य के लिए यन्त्र-साधन करता है तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी। इसके विपरीत यदि रामचन्द्र स्वयं बालकराम के यहाँ नौकरी करने जाता है तो बालकराम उसे नौकर नहीं रख सकेगा।

इसी नियम से प्रत्येक नामों में ऋणी-धनी का विचार कर लेना चाहिए।

आसन का विचार—

बैठने की मुद्राएँ कई प्रकार की होती हैं, जिन्हें आसन कहा जाता है। इन आसनों के सम्बन्ध में जानकारी योग-विषयक पुस्तकों अथवा योगविद्या के ज्ञाताओं द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

पुष्टिकर्म के लिए 'पद्मासन' से बैठना चाहिए। शान्ति-कर्म के लिए 'स्वस्तिकासन', विद्वेषण-कर्म में कुक्कुटासन, उच्चाटन-कर्म में अर्द्ध-स्वस्तिकासन, मारण तथा शान्ति-कर्म में विकटासन एवं शान्ति-कर्म में भद्रासन से बैठना चाहिए।

मारण-प्रयोग के लिए भैंसे के चमड़े के आसन पर बैठना चाहिए, विद्वेषण-प्रयोग के लिए घोड़े के चमड़े का आसन, बन्धन-मुक्ति-प्रयोग के लिए हाथी के चमड़े का आसन, वशीकरण-प्रयोग के लिए मेंढ़े के चमड़े का आसन, आकर्षण-प्रयोग के लिए बाघ के चमड़े का आसन (बाघम्बर) तथा उच्चाटन-प्रयोग के लिए ऊँट के चमड़े का आसन व्यवहार में लाना चाहिए।

यदि किसी समय उपयुक्त आसन सुलभ न हो, तो उस स्थिति में कुश के आसन का उपयोग किया जा सकता है।

जप की दिशाओं का नियम—

वशीकरण यंत्र को पूर्व दिशा की ओर मुँह करके, अभिचारकर्म के लिए दक्षिण की ओर धन-प्राप्ति की अभिलाषा से पश्चिम की ओर तथा शान्ति-कर्म में उत्तर दिशा की ओर मुँह करके जप करना

चाहिए। उत्तर दिशा की ओर मुंह करके जप करने से आयु की शान्ति तथा पुष्टि होती है।

कूर्म-चक्र का विचार

कूर्म-चक्र को देखकर, कूर्म के मस्तक पर आसन बिछाकर बैठने से मन्त्र शीघ्र सिद्ध होता है :

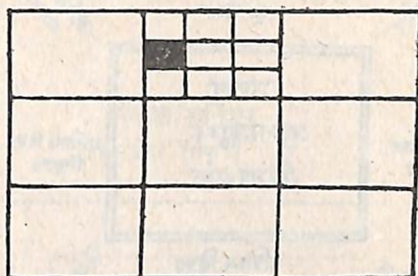
कूर्म चक्र की विधि इस प्रकार है—

जिस स्थान पर पूजन के लिए बैठे उसके नौ भाग करे। फिर स्थान के नाम से मस्तक के अक्षर को मिलाकर, अक्षर को जिस भाग में देखे, उसके भी नौ भाग कर ले। फिर पूर्व अक्षर में जो मात्रा हो, उसी मात्रा के स्थान में आसन बिछाये। उदाहरण के लिए—'कोठे' का पहला अक्षर 'क' कूर्म के मस्तक पर है तो उस स्थान के नौ भाग

ईशान कोण दाँया हाथ
पूर्व
मुख
आग्नेय कोण बाँया हाथ
कखगघङ
चछजझञ
उत्तर
ष श स य र ल व
कूर्मचक्र
दक्षिण
पफबभम
तथदधन
पश्चिम
पूँछ
वायव्य कोण दाँया पाँव
नैऋत्य कोण बाँया पाँव

करके देखे कि 'ओ' की मात्रा उत्तर दिशा वाले बीच के स्थान में हैं। बस, इसी स्थान को कूर्म का सिर जानकर वहां आसन बिछाना

चाहिए। नीचे के दूसरे चक्र में सही स्थान को काले रंग में दिखाया गया है।



कूर्म-चक्र में जितने भी स्थान हैं, उन सबको कूर्म का सिर ही समझना चाहिए। जहाँ भी अक्षर ठीक बैठता हो, वहीं आसन बिछा देना चाहिए। ऊपर दिए गए दो चित्रों से कूर्म-चक्र की स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

वार के अनुसार बैठने की विधियाँ

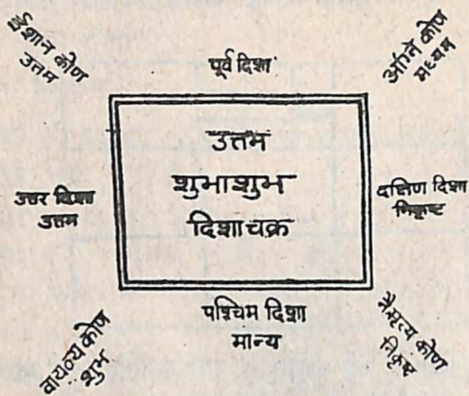
यन्त्र लिखने तथा मन्त्र जपने के लिए जिस दिन बैठे, उस दिन पूर्व दिशा में मुँह रक्खे। दूसरे दिन अग्निकोण में, फिर दक्षिण में। इसी तरह सातों दिन प्रत्येक दिशा को बदलता रहे। ईशानकोण को खाली रहने दे।

शुभ कार्य हो तो चन्द्रमा, शुभ दिन एवं शुभ दिशा को सामने अथवा दाईं ओर रक्खे। योगिनी, दिशाशूल तथा निष्कृष्ट वार को पीठ पीछे अथवा बाईं ओर रक्खे।

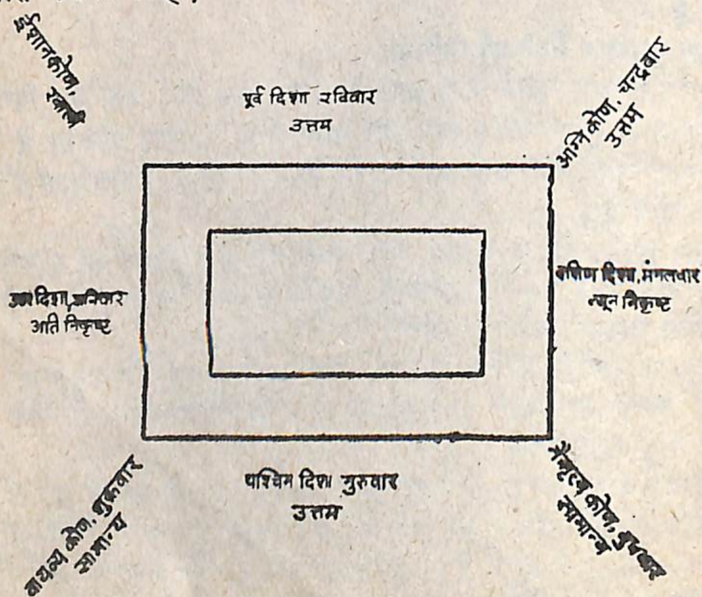
निकृष्ट कार्य हो तो योगिनी, निकृष्ट वार एवं दिशाशूल को सामने अथवा दाईं ओर रक्खे। चन्द्रमा तथा मध्यम वार को पीछे अथवा बाईं ओर रक्खे।

मध्यम कार्य हो तो चन्द्रमा और मध्यम वार को सामने अथवा दाईं ओर रक्खें, योगिनी को पीछे की ओर रक्खे। शुभ वार यदि कोण में हो तो सामने के कोण में और निकृष्ट वार हो तो दिशा में रक्खे। शुभ वार हो तो सामने की दिशा में निकृष्ट वार को देखे।

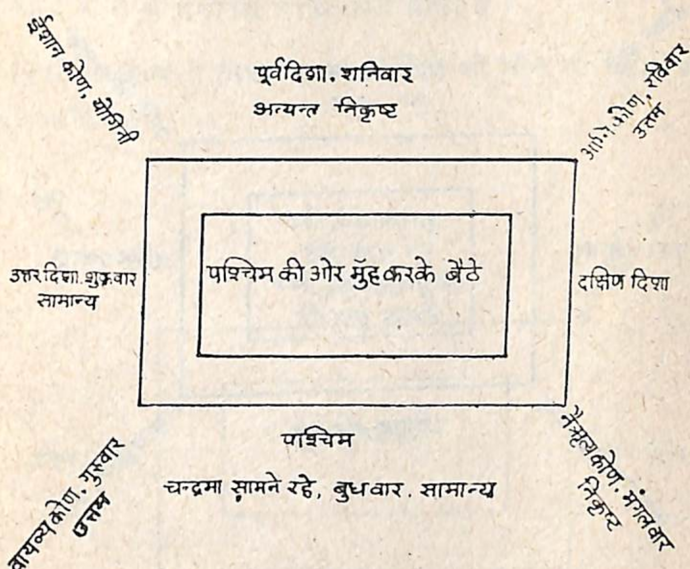
नीचे के चित्र से इस विषय को भली-भाँति समझ लेना चाहिए—



किसी कार्य के लिए रविवार को बैठे तो नीचे प्रदर्शित की गई स्थिति रखनी चाहिए—

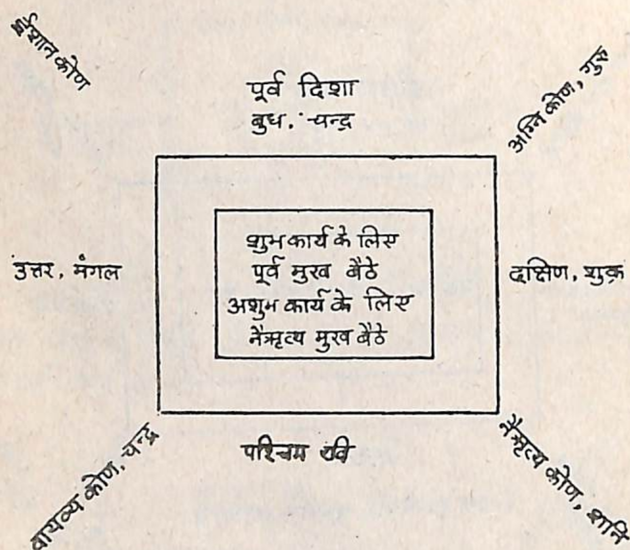


किसी कार्य के लिए शनिवार को बैठे तो नीचे प्रदर्शित की गई स्थिति रहनी चाहिए—



पश्चिम की ओर मुँह करके बैठने से चन्द्रमा, सामान्य दिशा एवं सामान्य वार सामने, शुक्र सामान्य वार दाँये, योगिनी ईशान कोण में, पीठ पीछे के दिन सामान्य, अत्यन्त निकृष्ट दिन शनिवार पीठ पीछे, उत्तम वार चन्द्र बाईं ओर शुक्र को देखता है। योगिनी की दृष्टि बाइ ओर मंगल पर रहती है तथा बृहस्पति रविवार को देखता है।

किसी अधिकार की वृद्धि के लिए बुधवार के दिन बैठे और नीचे लिखी स्थिति हो तो कार्य बहुत शीघ्र सिद्ध होता है—



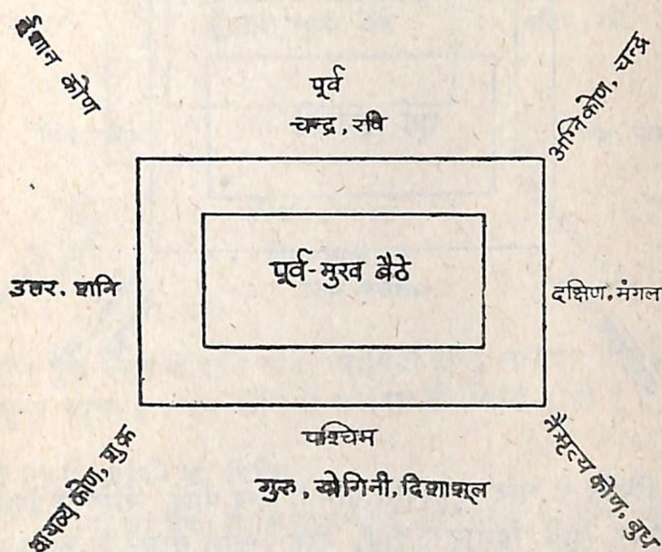
उक्त स्थिति में पूर्व-मुख बैठने से चन्द्रमा और बुध सामने रहते हैं। रवि पीछे की ओर बुध को देखता है। शुक्र, गुरु दायें रहते हैं। मंगल बायें रहता है। योगिनी और शनि पीठ पीछे रहते हैं।

ईशान-मुख बैठने से चन्द्र, बुध, गुरु दायें, योगिनी बायें, शनि पीछे और मंगल भी बाईं ओर तुल्य रहते हैं।

मारण, उच्चाटन का आरम्भ करना हो तो नैऋत्य-मुख बैठने से शनि सामने, योगिनी दायें, बृहस्पति बायें और चन्द्रमा बाईं ओर रहते हैं।

किसी अधिकार की प्राप्ति के लिए कहीं जाने का उपाय करना हो तो रविवार के दिन बैठना चाहिए। मुँह पूर्व की ओर, चन्द्रमा और रवि सामने, बृहस्पति, योगिनी दिशाशूल सहित पीठ पीछे, शनि बाईं ओर रहने से मनोरथ शीघ्र सिद्ध होता है।

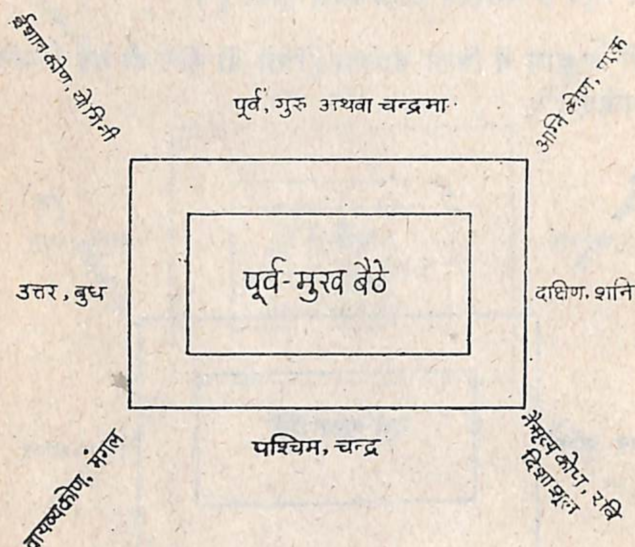
किसी के काम में विघ्न डालना हो तो भी नीचे दी गई स्थिति से बैठना चाहिए।



उक्त स्थिति में योगिनी सामने, शनि दायें, दिशाशूल बायें, बुध, शुक्र पीछे, रवि, चन्द्र, उत्तम तथा शुक्र पर मंगल की दृष्टि रहती है।

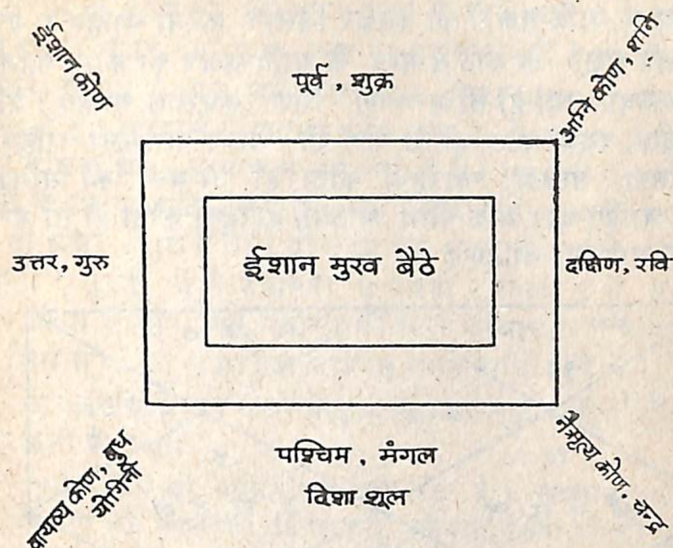
किसी मनोरथ, वैर और क्रोध के लिए शुक्ल पक्ष की पहली बृहस्पति को बायें स्वर में बैठना चाहिए। मुँह पूर्व की ओर तथा

योगिनी शुभ कोण में और शुभ दिशा में हो, तो बहुत शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।



इस स्थिति में चन्द्र, बृहस्पति सामने, चन्द्र पीछे, योगिनी ईशान में, शनिश्चर बायें, दिशाशूल दायें, शुक्र, मंगल सामने के कोण में, रवि और योगिनी आमने-सामने के कोणों में तथा बुध और शनि आमने-सामने की दिशाओं में रहते हैं।

किसी को बिगाड़ने का उपाय करना हो तो नीचे लिखी स्थिति में बैठना चाहिए—



ईशान-मुख बैठने से शनि दायें, योगिनी बायें, चन्द्रमा पीछे और सामने शून्य रहता है। इस रीति से मनोरथ की सिद्धि होती है।

मन्त्र की प्रकृति जानने की विधि

पहले बनाया जा चुका है कि यन्त्र-बीज तथा मन्त्रों के चार प्रकार होते हैं। यहाँ उसी विषय को विस्तारपूर्वक समझाया जाता है—

(१) सिद्ध—इस प्रकृति का मन्त्र समय पाकर कार्य को सिद्ध करता है।

(२) साध्य—इस प्रकृति का मन्त्र कार्य को बनाता भी है और नहीं भी बनाता है।

(३) सुसिद्ध—इस प्रकृति का मन्त्र कार्य को बहुत शीघ्र बनाता है।

(४) अरि—इस प्रकृति का मन्त्र कार्य को बिगाड़ देता है।

नीचे दिए गए बारह कोठे वाले मन्त्र में अपने नाम के आदि-अक्षर तथा मन्त्र के आदि-अक्षरों को देखकर मिलान करना चाहिए। यदि अपने आदि-अक्षर के कोठे से मन्त्र के आदि-अक्षर का कोण पहला, पाँचवाँ अथवा नवाँ हो तो मन्त्र को 'सिद्ध' समझना चाहिए। यदि दूसरा, छठा, दसवाँ कोठा हो तो मन्त्र को 'साध्य' समझना चाहिए। यदि तीसरा, सातवाँ, ग्यारहवाँ कोठा हो तो मन्त्र को 'सुसिद्ध' समझना चाहिए और यदि चौथा, आठवाँ, बारहवाँ कोठा हो तो मन्त्र को 'अरि' समझना चाहिए।

अठ: भज १२
१ अ क ड म
आ ख ट य २
अठ व म ११
ख ट म ल ३
१० औ ज फ क्ष
४ ट घ त ल
९ ओ झ प ह
७ ग छ ध व
५ उ ङ थ व
८ श ज न स
६ ठ च द श

मन्त्र सुसिद्ध हो तो उसके जप से सुख-प्राप्ति होती है। यदि मन्त्र में तीन या चार बीज हों तो लोम-प्रतिलोम की राह से जो बीज सुसिद्ध हो, उसे मन्त्र के आदि में लगाना चाहिए।

उदाहरण के लिए—बेनीराम कशह मन्त्राक्षर को जपना चाहता है, तो लोम-प्रतिलोम करने से इसकी छः सूरतें बनेंगी, जो इस प्रकार होंगी—

कशह	कहश	शहक	शकह	हकश	हशक
१	२	३	४	५	६

इन छः सूरत में तीनों अक्षर कशह १२ कोठे वाले यन्त्र में हैं। बेनीराम के आदि का 'ब' अक्षर यन्त्र के ११वें कोठे में है तथा मन्त्र का पहला अक्षर 'क' उक्त यन्त्र के पहले कोठे में है तो ग्यारहवें से तीसरा सुसिद्ध है अतः अति उत्तम है। दूसरा अक्षर श यन्त्र के छठे कोठे में है। ग्यारहवें से आठवाँ अरि होता है, अतः वह अतिनिकृष्ट है। तीसरा अक्षर ह यन्त्र के नवे कोठे में है। ग्यारहवें से नवाँ सुसिद्ध होने के कारण अति उत्तम है। इस प्रकार इस मन्त्र में आदि-अन्त के दो अक्षर उत्तम हैं तथा मध्य का एक अक्षर निकृष्ट है, अस्तु ऊपर लिखी ६ सूरतों में से २ अथवा ५ अथवा १ अथवा ६ में से जिसका जप किया जायेगा, वह मनोरथ को सिद्ध करेगा और ३ अथवा ४ में से जिस सूरत का जप किया जायेगा, उससे हानि पहुँचेगी।

इसी विधि से सब मन्त्रों के बारे में जान लेना चाहिए।

षट् कर्मों के देवता

शान्ति-कर्म की अधिष्ठात्री देवी रति है। स्तम्भन की लक्ष्मी, वशीकरण की सरस्वती, विद्वेषण की ज्येष्ठा, उच्चाटन की दुर्गा तथा मरण की देवी भद्रकाली है। अतः जो कर्म करना हो, उसकी अधिष्ठात्री देवी का आरम्भ में पूजन एवं ध्यान करना आवश्यक है।

वर्ण-विचार

आकर्षण, क्षोभन तथा वशीकरण में लाल रंग का, शान्ति-कर्म में श्वेत रंग का, स्तम्भन में पीले रंग का, उच्चाटन में धूम्रवर्ण का, विद्वेषण में गहरे लाल रंग का तथा मारण-कर्म में कृष्ण (काले) वर्ण का ध्यान करना चाहिए,

षट्कर्मों की दिशाएँ

शान्तिकर्म की ईशान, वशीकरण की उत्तर, स्तम्भन की पूर्व, विद्वेषण की नैर्ऋत्य, उच्चाटन की वायव्य तथा मारण की स्वामिनी आग्नेय दिशा है। जैसा कर्म करना हो, उसी के अनुरूप दिशा में मुँह करके बैठना चाहिए।

जप के भेद

जप तीन प्रकार के होते हैं—

(१) वाचिक, (२) उपांशु, (३) मानसिक।

वाचिक—जप करते समय दूसरे को शब्द सुनाई दे, उसे 'वाचिक' कहते हैं।

उपांशु—जप करते समय स्वयं को तो शब्द सुनाई दे, परन्तु दूसरे को सुनाई न दे, उसे 'उपांशु' कहते हैं।

मानसिक—जिस जप में केवल ओठ तथा जिह्वा हिलती हुई दिखाई दे और मन ही मन जप किया जाय, शब्द सुनाई न दे, उसे 'मानसिक' कहते हैं।

'मारण' आदि कर्मों में 'वाचिक', शान्ति तथा पुष्टि-कर्मों में 'उपांशु' एवं मोक्ष-कर्म में 'मानसिक' जप करना श्रेष्ठ है।

मन्त्रों के लिंग भेद

'स्वाहा' अन्त वाले मन्त्र स्त्री-लिंग, 'नमः' अन्त वाले नपुंसक तथा 'हुं फट्' अन्त वाले पुल्लिग संज्ञक होते हैं।

विद्वेषण, उच्चाटन, बंधन आदि में 'हुँ' पद का जप, छेदन में 'फट्' का, अभीष्ट तथा ग्रह-निवारण में 'हुं फट्' का, आयन और बोधन में 'वौषट्' का, अग्नि-कर्म में 'स्वाहा' का तथा सब प्रकार के पूजन में 'नमः' पद का प्रयोग करना चाहिए।

वशीकरण तथा शान्ति-कर्म में पुल्लिग संज्ञक, क्षुद्र कर्म में स्त्री-संज्ञक तथा अन्यत्र नपुंसक संज्ञक मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।

कलश-स्थापन के प्रकार

शान्ति-कर्म में नवरत्नों से अलंकृत स्वर्ण-कलश की स्थापना श्रेष्ठ होती है। स्वर्ण-कलश के अभाव में चाँदी अथवा ताँबे के कलश की स्थापना करनी चाहिए।

अभिचार-कर्म में लोहे का कलश, विद्वेषण में काँच का कलश, मोहन में चाँदी का कलश तथा उच्चाटन में मिट्टी का कलश श्रेष्ठ माना गया है।

यदि किसी अवसर पर विशेष धातु का कलश उपलब्ध न हो तो ताँबे के कलश की स्थापना करनी चाहिए, क्योंकि ताँबे का कलश सभी कार्यों के लिए उत्तम माना जाता है।

हवन की सामग्री

शान्ति-कर्म में दूध, घी, तिल, गूलर, तथा पीपल की लकड़ी अथवा अमरबेल और खीर का प्रयोग हवन में करना चाहिए। पुष्टि-कर्म में घी, बेलपत्र अथवा चमेली के फूलों का हवन करे। कन्या-प्राप्ति की इच्छा रखने वाला खीर का हवन करे। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए कमलगट्टा, दही अथवा घृतप्लुत अन्न का हवन करे। समृद्धि के लिए घी. बिल्वपत्र और तिल का हवन करे। आकर्षण के लिए चिरौंजी और बिल्वफल का हवन करे। उच्चाटन के लिए कौए के पंख का हवन करे। वशीकरण के लिए राई और लवण का हवन करे। मोहन के लिए धतूरे के बीजों का हवन करे तथा मारण के लिए विष और रुधिर का हवन करना चाहिए।

अन्य विशिष्ट विधियाँ मन्त्रों के साथ दी गई हैं।

हवन की मुद्रा

हवन करने की मुद्रा तीन प्रकार की होती हैं—

(१) शूकरी, (२) हंसी, (३) मृगी।

शूकरी—हाथ को सिकोड़ कर जो आहुति दी जाती है, उसे 'शूकरी मुद्रा' कहते हैं।

हंसी—कनिष्ठिका अंगुली को छोड़कर जो आहुति दी जाती है, उसे 'हंसी मुद्रा' कहते हैं।

मृगी—कनिष्ठिका और तर्जनी अंगुली के योग से जो आहुति दी जाती है, उसे 'मृगी मुद्रा' कहा जाता है।

माला का निर्णय

पुष्टि और वशीकरण के लिए मोती अथवा हीरा की माला से जप करना चाहिए। आकर्षण के लिए मतवाले हाथी के दाँत की माला

से जप करना चाहिए। विद्वेषण तथा उच्चाटन के लिए बहेड़े की माला से जप करना चाहिए। मारण के लिए जिस मनुष्य की मृत्यु बुद्ध में न हुई हो, उसके दाँत अथवा अपने आप मरे हुए गदहे के दाँत की माला से जप करना चाहिए। धार्मिक कामनाओं के लिए मणि अथवा शंख की माला से जप करना चाहिए। सब कार्यों की सिद्धि के लिए कमलगट्टे की माला से जप करना चाहिए। रुद्राक्ष की माला पर किया हुआ जप सब प्रकार के फलों को देता है। स्फटिक, मणि, मोती, रुद्राक्ष एवं पुत्रजीवी की माला-पर जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

शान्ति तथा पुष्टि-कर्म में कमल, नाल का सूत्र, आकर्षण तथा उच्चाटन-कर्म में घोड़े की पूँछ के बालों का सूत्र, मारण में मनुष्य की नसों का सूत्र तथा अन्य कार्यों के लिए माला में कपाल के सूत्र का प्रयोग करना चाहिए।

सत्ताईस दाने की माला सिद्धि देने वाली होती है। अभिचार-कर्म में पन्द्रह दाने की माला फलदायक होती है तथा एक सौ आठ दानों की माला सब कार्यों के लिए शुभ कही गई है।

मोती की माला में सत्ताईस मोती, बहेड़े की माला में पन्द्रह बहेड़े तथा रुद्राक्ष की माला में एक सौ आठ रुद्राक्ष होने चाहिए।

शान्ति, स्तम्भन तथा वशीकरण में अँगूठे तथा मध्यमा उँगली से माला फेरनी चाहिए। आकर्षण में अँगूठे तथा अनामिका उँगली से माला फेरनी चाहिए। विद्वेषण और उच्चाटन में अँगूठा तथा तर्जनी उँगली से माला फेरनी चाहिए। मारण प्रयोग में अँगूठा एवं कनिष्ठा उँगली द्वारा माला फेरनी उचित है।

यन्त्र-साधन की विधि

साधक को चाहिए कि वह विश्वासपूर्वक, स्नानादि से पवित्र होकर शुद्ध मन से कुल-देवता का पूजन करके एकान्त में उत्तम यन्त्र को लिखे। फिर तीन दिन तक विधि-विधान से पूजन करता रहे

और ब्रह्मचर्य धारण कर पृथ्वी पर शयन करे। इस अवधि में अधिष्ठातृ देवता साधक को स्वप्न में यह बता देता है कि उसका साधन सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध अथवा अरिभाव का है। यदि स्वप्न न हो तो प्रयोग को असिद्ध समझना चाहिए। स्वप्नावस्था में देवता के मुख से जैसा सुने, उसी के अनुसार विधि-विधानपूर्वक कार्य आरम्भ करने से सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

यन्त्र-लेखन के समय साधक के नाम के अन्त में षष्ठी विभक्ति लगाकर लिखना चाहिए। बीच में बीजों को लिखे, नीचे साध्य के नाम के अन्त में द्वितीया विभक्ति लगाकर लिखे। दोनों ओर नीचे 'कुरु-कुरु', उसके नीचे वियदयुक्त सर्गबीज (अः) को लिखे। फिर ईशानादि चारों कोनों में, 'हंसः' 'सोऽहं' और प्रणव बीज के चारों ओर दिग्बीजों को। प्रत्येक दिशा में यंत्र गायत्री के तीन वर्णों को लिखे। यन्त्र-गायत्री यह है—

"यंत्रराजाय विद्महे महामन्त्राय धीमहि। तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्।"

इस यन्त्र-गायत्री के द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्रों के वर्णों से यन्त्र को चारों ओर से वेष्टित करे। इस प्रकार सावधानी से यंत्र को लिखकर सुवर्णादि से यंत्र को वेष्टित करके यन्त्र की प्रतिष्ठा करे, सर्वतोभद्र मण्डल में, आठों दलों में, कलशों की स्थापना कर, उसके ऊपर यंत्र को रखे। मंडल के चारों कोनों में चार कलश स्थापित करे तथा प्रत्येक कलश पर हाथ रखकर—

'आँ ह्रीं क्रौं'

इन तीन अक्षरों वाली विद्या में कूर्च-बीजों को लगाकर हजार बार जपे। फिर उस यंत्र को चारों कलशों के जल द्वारा अभिषेक के यंत्रों द्वारा अभिषिक्त कर, गंध-पुष्पादि से पूजन कर, यंत्र में प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्रों द्वारा यंत्र-देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करके, यंत्र-गायत्री

के द्वारा षोडशोपचार पूजन कर, ब्राह्मण, सुवासिनी तथा कन्याओं को भोजन कराये और उन्हें दक्षिणा देकर, उनका आशीर्वाद ग्रहण करे। तदुपरान्त जिस अंग में यन्त्र को धारण करने का निर्देश किया गया हो, उस अंग में यन्त्र को धारण करे।

जहाँ किसी विशिष्ट वस्तु पर यंत्र लिखने का विधान न दिया गया हो, वहाँ यन्त्र को भोजपत्र पर लिखना चाहिए। जहाँ यन्त्र को लिखने के लिए द्रव्य का विधान न हो, वहाँ केशर, गोरोचन, कपूर, कस्तूरी, गजमद, चन्दन, अथवा अगर—इनमें से किसी वस्तु के द्वारा यन्त्र को लिखना चाहिए।

जहाँ किसी लेखनी का विधान न हो, वहाँ सोने की सलाई से यन्त्र को लिखना चाहिए। जहाँ किसी में भरकर यन्त्र को धारण करने का उल्लेख न हो, वहाँ सोने के ताबीज में अथवा अभाव में ताँबे के ताबीज में यन्त्र को भरकर धारण करना चाहिए। जहाँ किसी विशिष्ट अंग में धारण करने का उल्लेख न हो, वहाँ यन्त्र को दाँईं भुजा में धारण करना चाहिए।

मित्रता के लिए यन्त्र लिखना हो तो मिश्री अथवा गाय के घृत को मुँह में रखकर लिखना चाहिए तथा अगर, तगर, चन्दन-चूरा, गूगल, मिश्री, गाय का घृत, शहद, कपूर, दालचीनी, जायफल एवं मेवा को एकत्र करके धूप देनी चाहिए।

यदि मारण-उच्चाटन के लिए लिखना हो तो सेंधा नमक और नीम का पत्ता मुँह में रख लेना चाहिए और इन्हीं की धूप देनी चाहिए।

जिह्वा-स्तम्भन के लिए लिखना हो तो मुँह में मोम रख लेना चाहिए और उसी की धूनी देनी चाहिए।

यदि स्वप्न बन्द करने के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुँह में नमक रखना चाहिए और उसी की धूनी देनी चाहिये।

जिस यन्त्र के साथ जिस मंत्र के जप का निर्देश किया गया है, उसका विधिपूर्वक जप करना चाहिए। यन्त्र-साधना की अवधि में

हर प्रकार की अपवित्रता, हर प्रकार के मैथुन तथा हर प्रकार के अविश्वास एवं सन्देह से दूर रहना चाहिए।

जो साधक एकाग्रचित्त, विश्वासपूर्ण एवं सन्देह-रहित होकर विधि-विधान से साधना करते हैं, उन्हें इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

त्रिलोह की व्याख्या

इस पुस्तक में यन्त्रों को भरने के लिए 'त्रिलोह के ताबीज' का प्रयोग हुआ है। 'त्रिलोह' से सोना, चाँदी और ताँबा धातुएँ समझनी चाहिए।

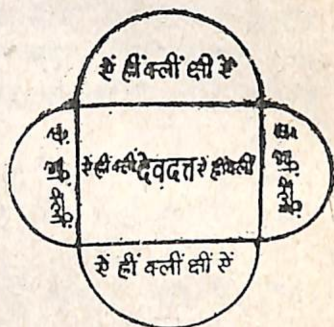
२

वशीकरण यन्त्र

इस परिच्छेद में वशीकरण यन्त्रों की विधियों का वर्णन किया जा रहा है। उपयुक्त यन्त्र का विधिपूर्वक साधन करने से मनोरथ की प्राप्ति होती है।

स्त्री-वशीकरण 'कामराजयन्त्रम्'

गोरोचन, कुंकुम, लाल चन्दन और कस्तूरी—इन सब वस्तुओं को एकत्र कर, भोजपत्र के ऊपर, चमेली की कलम से एक अंगुल के अन्तर से कर्णिका-युक्त दो रेखाओं के ऊपर-नीचे दो आकार की कल्पना करे। तदुपरान्त कर्णिकाओं में 'ऐं, ह्रीं, क्लीं'—इन बीजों को पूर्ण कर, उक्त दोनों दलाकारों में 'ऐं, ह्रीं, क्लीं, क्षीं, ऐं इन बीजों को लिखकर, रेखाओं के भीतर 'ऐं' ह्रीं, क्लीं' इन बीजों को आदि-अंत में लगा कर अनुस्वार-युक्त 'साध्य व्यक्ति' के नाम को लिखे।



उक्त प्रकार से जो यन्त्र का स्वरूप बनेगा उसे चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ पर जिस व्यक्ति के लिए साधन करना हो उसका नाम लिखा जाना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद लकड़ी के तख्ते के ऊपर राई से कामदेव की प्रतिमा बनाकर, उक्त यंत्र को, उस प्रतिमा के हृदय-भाग में

स्थापित करे और गंध, पुष्प, धूप, दीप, फल, नैवेद्य आदि शुभ वस्तुओं द्वारा, सायंकाल के समय, सिद्धि होने तक, प्रत्येक रात्रि में वक्ष्यमाण मन्त्र का उच्चारण करते हुए कामदेव का पूजन करे।

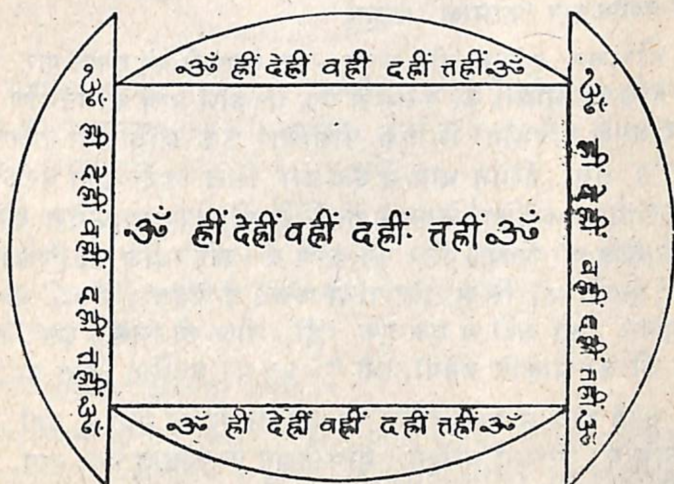
मन्त्र यह है—

"कामोऽनंगः पुष्पशरः कन्दर्पो मीनकेतनः। श्रीविष्णु-तनयो देवः प्रसन्नो भव में प्रभो।"

इस मंत्र का पाठ करते हुए राई से बनी प्रतिमा के उदर में काम-देव का पूजन करे। यह कामराजाख्य मंत्र तथा यंत्र-साधन स्त्रियों को वश में करता है।

स्त्री-वशीकरण 'मदनमर्दन-यन्त्रम्'

घोड़े के रक्त से भोजपत्र के ऊपर मदनकाष्ठ की कलम से एक अंगुल के अन्तर से दो तिरछी रेखाएं खींच कर, उनके आदि और



अन्त में कमलदल का आकार लगाकर, उक्त रेखाओं के ऊपर-नीचे के दोनों भागों में कुछ गोलाई से युक्त दो रेखाएं खींचे। फिर 'ॐ

ह्लीं देह्लीं वह्लीं दह्लीं त्तह्लीं भ्रों', इन ग्यारह बीजों को प्रत्येक कोष्ठ में स्थापित कर, यन्त्र को पूर्ण करे। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे पृ० ५३ पर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र-निर्माण के उपरान्त मदन-काष्ठ से कामदेव की एक प्रतिमा का निर्माण करे, जिसके हृदय में एक ऐसा छिद्र हो, जिसमें उक्त यन्त्र सुविधापूर्वक प्रविष्ट हो सके। तत्पश्चात् लाल चन्दन, माला आदि शुभ वस्तुओं से यन्त्र का पूजन कर, यन्त्र को उक्त प्रतिमा के हृदय में स्थापित कर इक्कीस दिन तक पूजन करे तथा जिस स्त्री को वश में करना हो, उसका ध्यान करता रहे।

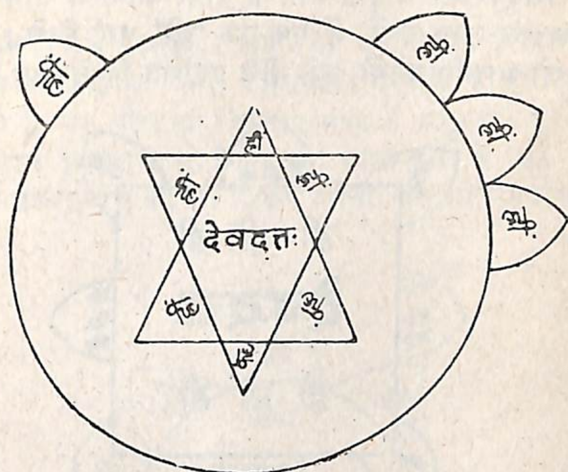
इस 'मदन-मर्दन' यन्त्र के साधन से अभिलाषित स्त्री वश में हो जाती है। यन्त्र-साधन की अवधि में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन, पृथ्वी पर शयन, हल्का भोजन, अशुभ कार्य एवं अपवित्रता से बचाव, पवित्र वस्त्र-धारण तथा विधिपूर्वक प्रतिमा-पूजन आदि कार्य आवश्यक हैं।

स्त्री-वशीकरण 'कामाक्ष' यन्त्रम्

गोरोचन, कुंकुम और कपूर—इन वस्तुओं को एकत्र कर, भोज-पत्र के ऊपर चमेली की कलम से एक षट्कोण यन्त्र का निर्माण करे। फिर उसके बहिर्भाग में एक गोलाकार चक्र खींचे तथा दक्षिणभाग में तीन तथा ईशान भाग में एक दल लिख कर उक्त षट्कोण के भीतर 'साध्य व्यक्ति' के नाम को लिखे। तदुपरान्त प्रत्येक कोण में ह्लीं' बीज को लिखे। लिर पूर्व कोण में 'क्रों' बीज को लिखकर दो 'ह्लीं' बीजों को लिखे तथा पाँचों कोणों में केवल एक 'क्रों' बीज को लिखकर उक्त दलों में एक-एक 'ह्लीं' बीज को लिखे। इस विधि से यंत्र की जो आकृति बनेगी, उसे पृ० ५५ पर प्रदर्शित किया गया है।

उक्त यन्त्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा गया है, वहाँ साध्य के नाम को लिखना चाहिए। यन्त्र-लेखन के पश्चात् गंध, पुष्प, नैवेद्य आदि पदार्थों से यन्त्र का पूजन कर, श्वेत वस्त्र धारण कर, यन्त्र को सामने रखकर रात्रि के समय साध्य स्त्री का चिन्तन-स्मरण करना

चाहिए। इस तरह सात दिनों तक पूजन आदि क्रियाएँ करके, अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों की स्त्रियों को विविध प्रकार के व्यंजनों



का भोजन कराके यथाशक्ति दक्षिणा देकर 'कामाक्षा प्रीयताम्' वाक्य का उच्चारण करे। तदुपरान्त त्रिलोह के ताबीज में उक्त यंत्र को बन्द करके दाईं भुजा में धारण करे।

यह 'कामाक्ष यंत्र' मानिनी स्त्रियों तक को वश में करने वाला है। जो व्यक्ति इस यंत्र को धारण करता है, उसे देखकर राजस्त्रियाँ भी कामज्वर से पीड़ित होकर उसके पास चली आती हैं, साधारण स्त्रियों की तो बात ही क्या है।

स्त्री-सौभाग्यकर 'ललिता यंत्रम्'

गोरोचन, कुंकुम, कस्तूरी और लाल चंदन—इन चारों वस्तुओं को एकत्र कर—भोजपत्र के ऊपर चतुष्कोण-वेष्टित एक चौकोर यन्त्र को लिखकर, ईशान आदि चारों कोनों में कमल दल स्थापित करे। फिर यन्त्र के भीतर तीन रेखा तिरछी लिखकर ऊपर-नीचे की दो

रेखाओं में तीन-तीन 'ह्रीं' बीज स्थापित कर, बीच की रेखाओं में, अनुस्वार-युक्त अर्थात् द्वितीया विभक्ति के एकवचनान्त पति के नाम को लिखे। तदुपरान्त बाहरी भाग के चारों कोनों में तीन-तीन 'ह्रीं' बीज लिख कर उक्त दलों में एक-एक 'ह्रीं' वर्ण लिखे। इस प्रकार यन्त्र की जो आकृति बनेगी, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।



यंत्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य का नाम लिखना चाहिए। यन्त्र लिखने के पश्चात् कृष्णपक्ष की त्रयोदशी में रात्रि के समय उत्तर की ओर मुँह करके सात रात्रि तक नियमपूर्वक अनेक प्रकार के भोग एवं गंधादि से यन्त्र का पूजन कर सात सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन कराता चाहिए तदुपरान्त वक्ष्यमाण यंत्र का उच्चारण करके विसर्जन करना चाहिए। मन्त्र यह है—

"शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रीयतामिति। रूपं देहि यशोदेहि सौभाग्यं देहि मे श्रियम्। भगवति वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्पवर्धनम्।"

इस यन्त्र को धातु-निर्मित ताबीज में भरकर कंठ में धारण करने वाली स्त्री सौभाग्य-रूप आदि से युक्त होकर अपने पति को अत्यन्त

प्रिय हो जाती है। यह स्त्रियों का दौर्भाग्यनाशक एवं सौभाग्यवर्द्धक है। इसे 'संमोहन-यंत्र' तथा 'ललिताख्य यंत्र' भी कहा जाता है।

स्त्री-सौभाग्यकर 'सौभाग्यवर्द्धकं यंत्रम्'

गोरोचन से एक गोलाकार चक्र को भोजपत्र के ऊपर खींचकर अष्टदल से वेष्टित करे तथा गोलाकार यन्त्र के भीतर पूर्व आदि चारों भागों में 'सां' बीज को लिखकर मध्य में अनुस्वार-युक्त साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखे तथा आठों दलों में 'ह्रीं' बीज को लिखे। इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।



यन्त्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य के नाम के अक्षरों को लिखे।

यन्त्र-लेखन के पश्चात् तीन रात्रि तक यन्त्र का गंधादिकों से पूजन करे तथा चौथे दिन विधानपूर्वक तीन सौभाग्यवती स्त्रियों का पूजन कर, उन्हें भोजनादि कराके आशीर्वाद प्राप्त करे।

सौभाग्यवतियों के पूजन के समय वक्ष्यमाण यन्त्र का उच्चारण करता रहे। मन्त्र यह है—

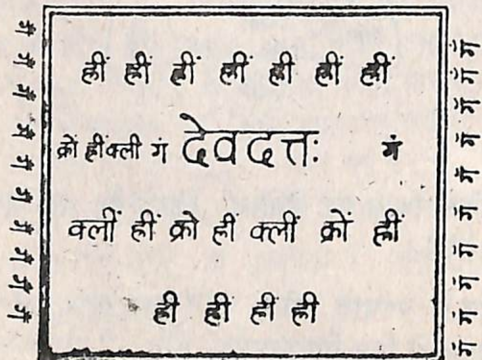
"अनंगवल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयतामिति ।
एनं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे ॥"

इस प्रकार यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करने के उपरान्त इसे किसी धातु के ताबीज में रखकर कंठ में धारण करे।

जो स्त्री इस यंत्र को धारण करती है, उसका पति उसके वशीभूत होकर दास-तुल्य हो जाता है। यदि उक्त क्रियाओं के करने पर भी पति सौभाग्यमद से दर्पित स्त्री को कुछ न समझे तो स्त्री को चाहिए कि वह शुक्ल पक्ष की प्रत्येक चतुर्दशी में देवी रति की प्रीति के लिए एक सौभाग्यवती स्त्री को भोजन कराके पुनः यन्त्रराज का पूजन करे। इस विधि से पति का गर्व नष्ट हो जाता है और वह अपनी स्त्री के वशीभूत रहता है।

पति-वशीकरण 'गणपति यन्त्रम्'

अनामिका उँगली का रुधिर हाथी का मद, जावक (महावर) तथा गोरोचन—इन चारों वस्तुओं को मिलाकर, चमेली की लकड़ी की



कलम से भोजपत्र के ऊपर ऐसा यंत्र लिखे जैसा कि पृष्ठ ५८ पर प्रदर्शित किया गया है। जिस स्थान पर देवदत्तः, लिखा है, वहाँ साध्य के नाम को लिखे।

यंत्र लिखने के उपरान्त किसी स्वच्छ खेत से काली मिट्टी लाकर उसकी गणपति की मूर्ति बनाए और उस मूर्ति के ऊपर में यंत्र को रख दे। तत्पश्चात् धूप दीप, पुष्पमाला आदि से विधिपूर्वक पूजन करते हुए निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करे—

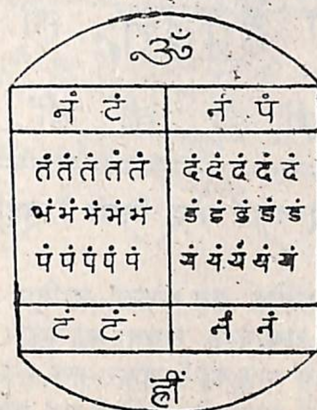
"देवदेव गणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत।
'देवदत्तं' महावश्यं यावज्जीव कुरु प्रभो।"

उक्त मन्त्र में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य के नाम का उच्चारण करे। फिर एक हाथ-भर गहरा गढ्ढा खोदकर उसमें मूर्ति को रख दे तथा ऊपर से मिट्टी भर कर दबा दे।

इस यन्त्र के प्रताप से तथा गणेशजी की कृपा से साध्य व्यक्ति जब तक जीवित रहता है, तब तक वह साधक के वशीभूत रहता है।

वशीकरण-यन्त्रम्

नीचे के चित्र में जिस स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है उस

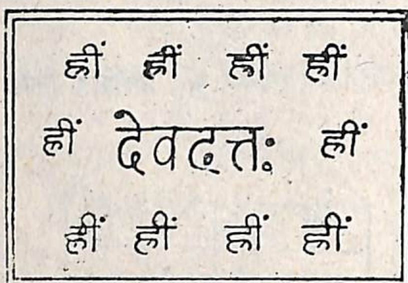


स्वरूप के यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखे। तदुपरान्त विधिवत पूजन करके धातु के ताबीज में रखकर भुजा में बाँध ले।

जो व्यक्ति इस यन्त्र के ताबीज को अपनी भुजा में बाँधता है, उसे देखने वाले व्यक्ति उसके वशीभूत हो जाते हैं।

राजा-वशीकरण 'बीजसंपुटयन्त्रम्

गोरोचन, केशर, लाल चन्दन तथा अनामिका उँगली का रक्त—इन द्रव्यों को एकत्र कर, भोजपत्र के ऊपर दो रेखा से युक्त चतुष्कोण यन्त्र लिखे। उस यन्त्र के बीच में तीन रेखाओं की कल्पना करके, पहली पंक्ति में चार 'ह्रीं'कार वर्ण लिखे, दूसरी पंक्ति में 'ह्रीं'कार से पुटित साध्य के नाम को लिखे। तदुपरान्त तीसरी पंक्ति में फिर चार 'ह्रीं'कार लिखे अर्थात् १० 'ह्रीं'कार वर्ण एवं एक साध्य का नाम लिखे। इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, नीचे प्रदर्शित किया गया है।



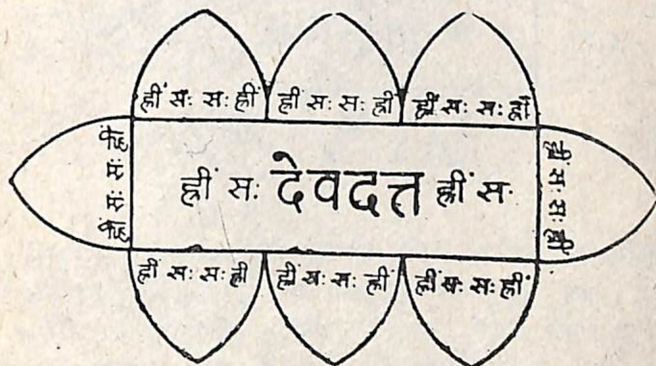
यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य के नाम को लिखना चाहिए।

इस यन्त्र का उपयोग तब करना चाहिए, जिस समय राजा अत्यन्त क्रुद्ध होकर अर्थ दण्ड अथवा कारागार का दण्ड देने की इच्छा करे। उस समय यन्त्र को लिखकर पुष्प, नैवेद्य आदि शुभ द्रव्यों से पूजन करके कुमारी, ब्राह्मणी, योगिनी एवं सुवासिनी को सम्मान-

पूर्वक नमस्कार करके भोजन कराना चाहिए। तदुपरान्त इस यन्त्र को मुट्ठी में दबाकर राजदरबार में जाने से राजा का क्रोध तुरन्त शान्त हो जाता है। राजा को प्रसन्नता प्रदान करने वाले इस वशी-करण यन्त्र को 'बीज संपुट यन्त्र' कहा जाता है।

राजा-मोहन 'दुष्टमुखस्तम्भनयन्त्रम्'

गोरोचन और कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर एक चौकोर लम्बी रेखा खींचकर कर्णिका से युक्त करे। तदुपरान्त ऊपर नीचे के भाग में तीन दल स्थापित कर 'ह्रीं' सः सः ह्रीं' इस प्रकार प्रत्येक दल के भीतर उक्त चार बीजों को लिखकर, रेखा के मध्य भाग में 'ह्रीं सः' इन दो बीजों से पुटित कर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। इस मन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित किए चित्र के अनुसार होगा—



यन्त्र के तैयार हो जाने पर इसे शराव संपुटित कर सात दिन तक पूजन करे। इस मन्त्र द्वारा राजा का कोप दूर होता है तथा दुष्ट अनुयायी राज-पुरुषों का मुँह बन्द होता है। यह कार्य को सिद्ध करने वाला श्रेष्ठ यन्त्र है।

स्वामी-वशीकरण यन्त्रम्

गोरोचन से भोजपत्र पर दक्षिण, उत्तर को बढ़ी हुई दो तिरछी रेखा खींचे तथा दक्षिण-उत्तर भाग में दो कर्णिका निर्माण कर, ऊर्ध्व भाग तथा अधोभाग में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। तदुपरान्त 'श्री' और 'ओंकार' को लिखकर कर्णिका तथा बीज के दल के विसर्ग सहित क्षकार अक्षर की कल्पना कर बाकी सभी स्थानों में 'श्री' अक्षर को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

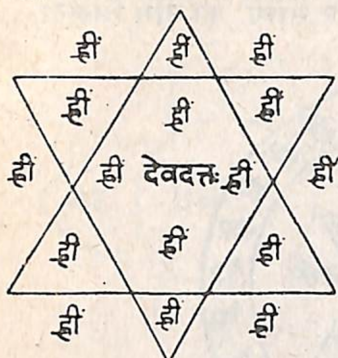


यन्त्र-निर्माण के बाद उसे शराव-संपुट में बन्द कर अग्नि में पुटित करे। जब वह ठण्डा हो जाय तब उसको खोलकर यन्त्र की भस्म का पान करे। इस यन्त्र के प्रयोग से साध्य व्यक्ति जीवन भर वशीभूत रहता है। स्वामी को वश में करने का यह श्रेष्ठतम यन्त्र है।

सर्व-वशीकरण दिक्स्तम्भनयन्त्रम्'

गोरोचन और कुंकुम इन दोनों वस्तुओं से भोजपत्र पर षट्कोण दिव्य यन्त्र लिखे। फिर पूर्व तथा पश्चिम—इन दो कोणों में दो

ह्लींकाराक्षर लिखे। इनके अन्तराल में ६ ह्लींकाराक्षर और लिखे। इस प्रकार आठ ह्लींकार हुए। फिर षट्कोण यन्त्र के भीतरी भाग में ह्लीं-काराक्षर संपुटित साध्य के नाम को लिखे तथा अन्य चार कोणों को भी चार ह्लींकाराक्षर से वेष्टित कर यन्त्रराज को पूर्ण करे। इस प्रकार कुल १६ ह्लीं-कार अक्षर होंगे।



इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा उसे बाईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इसमें देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को शराव-सम्पुट में रखकर भक्ति भाव से पूजन करे तथा दूसरे दिन शराव (मिट्टी का शकोरा) में से निकाल कर शुभ मुहूर्त में यत्नपूर्वक अपनी शिखा में बाँधे। फिर शीघ्रतापूर्वक मौन रह कर काल तथा फल का चिन्तन करे। यह दिव्य स्तम्भन यन्त्र श्रेष्ठ वशीकरण तथा लोक में साध्य भाव को प्राप्त कराने वाला है।

धनी-वश्यकर 'मायामययन्त्रम्'

गोरोचन और कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर षट्कोण यन्त्र लिखकर उसके ऊपर एक गोलाकार चक्र बनाये तथा उससे थोड़े अन्तर पर एक चक्र और खींचें। इस षट्कोण के बीच में साध्य व्यक्ति का नाम लिखे तथा कोष्ठ और कोष्ठों के प्रान्त भाग में 'क्लीं' बीज को स्थापित कर दोनों गोलाकार रेखाओं के भीतर २५ ह्लींकार बीजों को लिख कर चक्र की भाँति वेष्टित करे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इसमें 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य का नाम लिखना चाहिए।

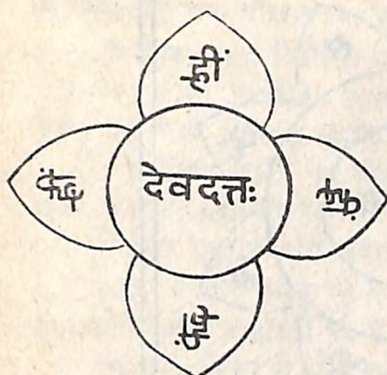


इस यन्त्र को लिखने के पश्चात् सात दिन तक विधानपूर्वक पूजन करके महामाया देवी का पूजन करना चाहिए तथा मार्कण्डेय पुराण में वर्णित देवी-माहात्म्य का ७ दिन तक जप करना चाहिए। तदुपरान्त खीर, शहद तथा घृत—इन द्रव्यों से प्रत्येक श्लोक की आहुति देते हुए, पूर्णाहुति से हवन करना चाहिए। अन्त में तीन कन्याओं को भोजन कराके, यन्त्र को त्रिलोह् के ताबीज में बन्द कर, दण्ड (कंधा) अथवा गले में धारण करने से धनी व्यक्ति वशीभूत हो जाता है और वह अपने दिए हुए धन (ऋण) का तकाजा बन्द करके, व्यवहार के लिए और अधिक धन दे देता है। यह 'मायामय' नामक यन्त्र अत्यन्त प्रभावकारी है।

सेवक-वशीकरण 'पिशाचियन्त्रम्'

गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर पूर्वादि चारों दिशाओं में कमल दल से युक्त करें। फिर चक्र के भीतर

सेवक के नाम के अक्षरों को लिखकर पूर्वादि चारों दिशाओं में 'ह्रीं'-कार बीजों को स्थापित कर दे। इस प्रकार जो यन्त्र बनेगा, उसके स्वरूप को बाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर सेवक का नाम लिखना चाहिए।



इस यन्त्र को पुष्पादिक से पूजन कर दही के भीतर रख देना चाहिए।

इस यन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब कोई सेवक क्रुद्ध होकर सम्पूर्ण धन आदि को प्रकट कर विनाश करने के लिए प्रस्तुत हो और स्वामी उसका निषेध करने में स्वयं को असमर्थ पाता हो। ऐसी स्थिति में यह यन्त्र सेवक को वशीभूत कर स्वामी की हानि करने से रोक देता है।

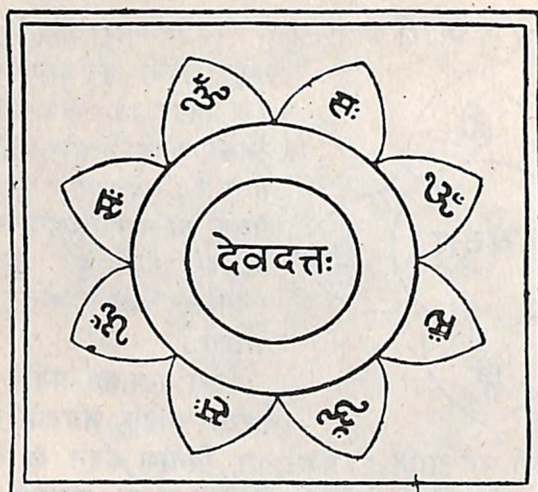
दुष्ट-मुख-स्तंभक 'दुष्टमोहनयन्त्रम्'

अपने रुधिर से भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर उसे अष्ट दल से विभूषित करे, तदुपरान्त उसे चतुष्कोण की दो रेखाओं से युक्त कर, चक्र के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम को लिख कर, प्रत्येक कोण में विसर्ग मिलाकर पूर्वादि चारों दिशाओं में प्रणव को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा उसे पृ० ६६ पर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र के मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य के नाम को लिखना चाहिए।

'दुष्टमोहन' नामक इस यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके, इसे २१ दिन तक दूध में स्थापित करके रखना चाहिए।

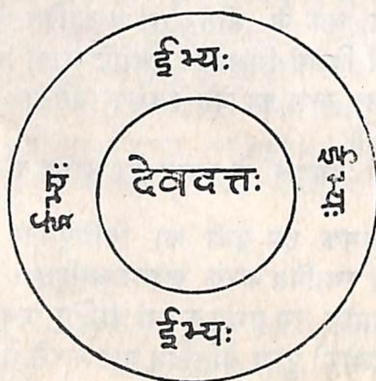
इस यन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब राजकुल में रहने वाले पिशुन (चुगलखोर) पुरुष प्रतिदिन घात करने में उद्यत रहते हों।



इस यन्त्र के प्रभाव से उन पिशुन लोगों का मुख-स्तम्भन हो जाता है और वे किसी प्रकार की चुगली आदि नहीं कर पाते।

दुष्टमोहनकर 'कण्टकयन्त्रम्'

श्मशान की भस्म लाकर, आक के दो पत्तों पर अलग-अलग एक गोलाकार चक्र खींचकर उसके भीतर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें।



फिर 'ईम्य:' विसर्ग-मिश्रित इन दो बीजों को पूर्ण आदि चारों दिशाओं में लिखकर, एक गोलाकार चक्र और खींचें, ताकि उक्त चक्र मध्यवर्ती हो जाय। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनता है, उसे पृ० ६६ पर नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिख जाने पर दोनों पत्रों को संपुट में लेकर, कांटों से छेदकर कृष्ण पक्ष की रात्रि में पूजन करके श्मशान-भूमि में खोदकर गाढ़ दें तथा भूतादि बलि-प्रदान करें।

उक्त क्रिया करके 'हे काल-रात्रि ! प्रसन्न होओ' शब्द का उच्चारण कर, ब्राह्मणों को दक्षिणा दे।

इस यन्त्र-क्रिया से अति बलवान शत्रु भी जो घात करने की इच्छा रखता है, वशीभूत होकर अनुकूल बन जाता है। यह 'दुष्टमोहन कालकण्टक' नामक यन्त्र शत्रु के स्वभाव में परिवर्तन करने तथा उसे वशीभूत करने के लिए प्रसिद्ध है।

दुष्टवश्यकर 'कालानल यन्त्रम्'

गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर तीन रेखा से मिश्रित चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर 'ह्रीं' बीज की रेखा के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम के जितने अक्षर हों, उतने अक्षर लिखकर अन्त में 'ईं' बीज को लिखना चाहिए—अर्थात्, इस यन्त्र में ह्रीं बीजों की कोई निश्चित गणना नहीं है।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बना है, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।

ह्रीं(दे) ह्रीं(व) ह्रीं(द) ह्रीं(त्त) ईं

इस यन्त्र को लिखने के अनन्तर वृक्ष के नीचे से धूलि लाकर एक रासिका प्रतिमा का निर्माण कर, उस प्रतिमा के हृदय भाग में यन्त्र को स्थापित कर, गंधादिक से पूजन करके कृष्ण पक्ष चतुर्दशी की रात्रि में चूल्हे की कबँट में खोदकर उक्त प्रतिमा को 'महाकालाय स्वाहा' मन्त्र पढ़ते हुए गाढ़ दे। तदुपरान्त बकरे के रुधिर से मिले हुए भात से दिक्पालों की प्रसन्नता के लिए बलिदान करके उक्त पदार्थ में घी और लाल फूल मिलाकर 'ओं महाकालायेति' मन्त्र से १०८ बार आहुति देकर हवन करे।

इस 'कालानाल यन्त्र के प्रयोग से साध्य दुष्ट व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

दुष्टवश्यकर 'उच्छिष्टपिशाचयन्त्रम्'

अपने रक्त और गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर दो रेखा वाले चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर, उसके भीतरी भाग में 'ह्रीं' बीज रेखा



के मध्य साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखकर पूर्व आदि चारों दिशाओं में 'ओ३म आकर्षय स्वाह वाक्य को यन्त्र के भीतर ही इस

इस प्रकार लिखे कि साध्य का नाम मध्यगत हो जाय। यन्त्र के चारों कोनों में दो-दो त्रिशूल भी लिखने चाहिए।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे पृ० ६८ पर दिया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को लिखने के उपरान्त गन्धादि से पूजन कर 'श्रो३म् श्राकर्षय स्वाहा' इस मन्त्र को पढ़कर, यन्त्र के टुकड़े करके उस मार्ग में डाल दे, जिस मार्ग में होकर दुष्ट प्रकृति वाला मनुष्य श्राता-जाता हो।

इस मन्त्र के प्रभाव से श्रति क्रूर प्रकृति वाला दुष्ट पुरुष भी शी वशीभूत हो जाता है। वाणिज्य करने वाले व्यक्ति को श्रपने धनी (ऋणदाता) के प्रति श्रथवा श्रन्य दुःखदाई व्यक्तियों के प्रति इस साधन का प्रयोग फलदायक होता हैं। यह 'उच्छिष्ट-पिशाच' नामक यन्त्र निश्चित लाभकारी है।

सर्ववशीकरण 'जगद्वश्यकरं यन्त्रम्'

केशर, कस्तूरी, लाल चन्दन श्रौर गोरोचन से, भोजपत्र के ऊपर, चमेली की लकड़ी की कलम से दो रेखायुक्त एक चौकोर यन्त्र को लिखे। यन्त्र के भीतर तीन तिरछी रेखाएँ खींचकर पहली रेखा में 'श्रो३म्' वं, जें, ह्रीं, डं', दूसरी रेखा में 'दैं, डं, ह्रीं, श्रो३म, डं' तथा तीसरी रेखा में 'वं, डं, जगत्, वं, श्रो३म्, ह्रीं' बीजों को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाईं श्रोर प्रदर्शित किया गया है।

ॐ वं जे ह्रीं डं
दैं डं ह्रीं ॐ डं
वं डं जगत् वं ॐ ह्रीं

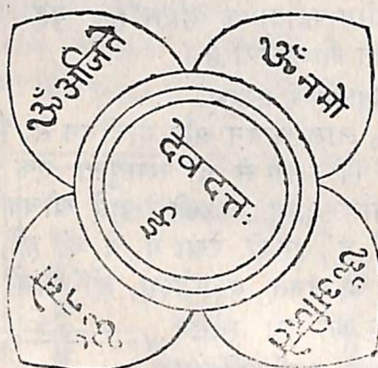
यन्त्र लिखने के बाद तीन दिन तक गन्ध, पुष्प श्रादि से पूजन कर, त्रिलोह के ताबीज में भर कर भुजा में धारण करे। जब तक यह यन्त्र भुजा में बँधा रहेगा, तब तक सब को वशीभूत करता रहेगा।

देवाराधन के समय प्रतिदिन नियमपूर्वक इस यन्त्र का पूजन अवश्य करते रहना चाहिए।

सर्ववशीकरण 'यावज्जीवं जनवश्यकरं यन्त्रम्'

कपूर, कुंकुम, गोरोचन और कस्तूरी—इन सब वस्तुओं के द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं युक्त एक गोलाकार चक्र को लिखे। पूर्व आदि चारों दिशाओं को कमल-दल से वेष्टित कर यंत्र के मध्य में साध्य व्यक्ति के नामाक्षरों को अन्त में ईंकार लगाकर लिखे तथा पूर्व-पश्चिम दलों में 'ओं अजिते' तथा उत्तर-दक्षिण के दलों में 'ओ३म् नमो' लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।



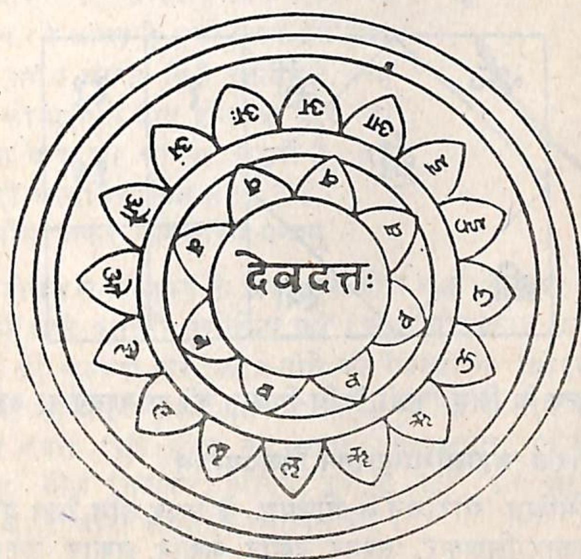
इसमें 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र का तीन दिन तक गंध, पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करे। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करे तथा चौथे दिन एक ब्राह्मण को भोजन कराके प्रातःकाल के समय त्रिलोह (सोना, चाँदी और ताँवा) के ताबीज में वेष्टित कर भुजा अथवा कण्ठ में धारण करे।

यह यन्त्र सभी जीवों को वश में करने वाला है। इसे धारण करने वाला व्यक्ति स्वजनों में दर्शनीय तथा दूसरे लोगों में अत्यन्त सम्माननीय होता है।

सर्वजनमोहन 'महामोहन यन्त्रम्'

काँसी के पात्र को लाकर भस्म (राख), गोमय आदि से शुद्ध करे, तदुपरान्त उसमें भोजपत्र रखकर, जाति वृक्ष की लकड़ी की कलम बनाकर गोरोचन तथा चन्दन से लिखना आरम्भ करे। बीच में साध्य के नाम को लिखे। फिर एक गोल आकार खींचे। उस गोल आकार के ऊपर अष्टदल कमल बनाकर, उनके भीतर 'व' अक्षर को भर दे। फिर कमल दल के ऊपर एक और गोल आकार बनाये। उसके ऊपर सोलह दल कमल लिखे। प्रत्येक कमल को क्रमानुसार अकारादि वर्णों से पूर्ण कर दे। फिर उस सोलह दल कमल के ऊपर भी तीन गोलाकार रेखाएँ खींचे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है—



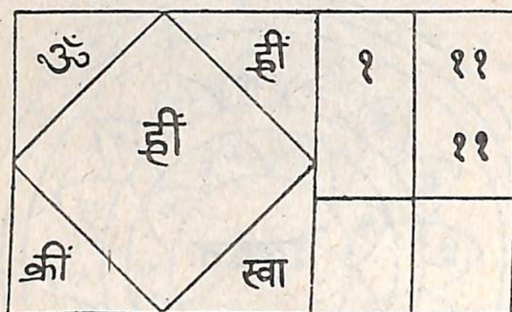
उक्त यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के पश्चात् मालती, चमेली, श्वेतकमल आदि सुगंधित द्रव्यों तथा श्वेत पुष्पों से विधिपूर्वक पूजन करना चाहिए। इस प्रकार सात दिन तक पूजन करने के उपरान्त त्रिलोह के तावीज में बन्द कर शिर, भुजा अथवा कंठ में विश्वासपूर्वक धारण करना चाहिए।

इस 'महामोहन' नामक यन्त्र के धारण करने वाले स्त्री अथवा पुरुष के समक्ष सभी व्यक्ति सेवक की भाँति वशोभूत हो जाते हैं।

सास-श्वसुर-वशीकरण यन्त्रम्

नीचे जिस यन्त्र का स्वरूप प्रदर्शित किया गया है, उसे गेहूँ की रोटी पर लिखकर काली कुतिया को खिलाये तो सास वश में होती है और काले कुत्ते को खिलाये तो श्वसुर वश में होता है।



इस यन्त्र के लिए किसी विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है।

सौभाग्यकारक 'महासौभाग्यजननं विजययन्त्रम्

जल-मिश्रित गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर तीन रेखा युक्त एक अर्द्ध चन्द्राकार लिखकर, 'सकार, हकार, ककार, लकार, उकार और ईकार इन छः अक्षरों को ईकार में गर्भित कर, उक्त अर्द्ध-चन्द्राकार के बीच में स्थापित करे।

इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है।

इस यन्त्र में किसी साध्य विशेष का नाम लिखने की आवश्यकता नहीं है।

यन्त्र लिखने के उपरान्त गन्ध-पुष्प आदि से विधिवत् पूजन करके स्वर्ण के तावीज में भर कर पुरुष को दाईं भुजा में और स्त्री को कण्ठ में धारण करना चाहिए।

यह 'विजय यन्त्र' मनुष्यों को सौभाग्य देने वाला, दौर्भाग्य-नाशक तथा सब लोगों को वशीभूत कर सौभाग्यजनक भाव को धारण करने वाला है। जो पुरुष इस यन्त्र को हर समय धारण किये रहता है, वह स्त्रियों को अत्यन्त प्रिय होता है और जो स्त्री इस यन्त्र को धारण करतीं है, वह पति को अत्यधिक प्रिय होती है।

ह्रीं
क
ल
ड
ई

नारी-सौभाग्यकर 'कमलाख्य यन्त्रम्'

गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर एक गोल चक्र खींचकर उसके बहिर्भाग को अष्ट दलों से सुशोभित करे। उक्त गोलाकार के भीतर तीन रेखाओं की कल्पना कर, ऊपर-नीचे की रेखाओं में 'ओ३म, ह्रीं' इन दो बीजों को आदि में मिश्रित कर, साध्य व्यक्ति के नाम को लिखकर अन्त में केवल 'ह्रीं' बीज को लगाए। तत्पश्चात् पूर्व आदि चारों ओर 'जूं' बीज लिखकर, 'ओ३म, ह्रीं, जूं' ह्रीं' इन चार बीजों को ईशान आदि चारों कोनों में स्थापित करे।

इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे पृ० ७४ पर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र-लेखन के उपरान्त गन्ध , पुष्प, ताम्बूल, नैवेद्य आदि पदार्थों से तीन दिन तक पूजन करे तथा 'हे लोकेश ! प्रीयताम्' इस वाक्य



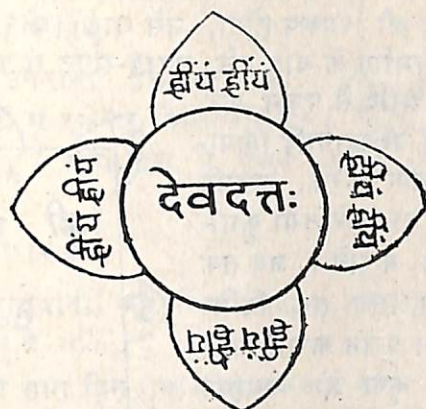
का उच्चारण कर एक स्त्री-पुरुष को भोजन कराए । तदुपरान्त उक्त यन्त्र को कच्चे धागे में लपेटकर त्रिलोह के ताबीज में बन्द कर कण्ठ में अथवा हार में मिलाकर धारण करे ।

इस यन्त्र का प्रयोग केवल स्त्रियों को करना चाहिए । इसके प्रभाव से उन्हें श्रेष्ठ सौभाग्य की प्राप्ति होती है । वन्ध्यास्त्री गर्भ धारण कर उत्तम पुत्र को जन्म देती है । मृत-वत्सा श्रेष्ठ पुत्र को प्राप्त हो, जीवित पुत्रवाली होती है । यह 'कमलाख्य यन्त्र' श्री ब्रह्मा जी द्वारा कल्पित है, अतः इसके धारण करने से सभी उत्तम फलों की प्राप्ति होती है ।

विवाद-विजय यन्त्रम्

कुंकुम से भोजपत्र पर एक गोलाकार चक्र को खींचकर चार कमल दलों से युक्त कर बीच में साध्य व्यक्ति का नाम लिखे तथा

'ह्रीं' और 'यं' इन दो बीजों को प्रत्येक दल में स्थापित करे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है।



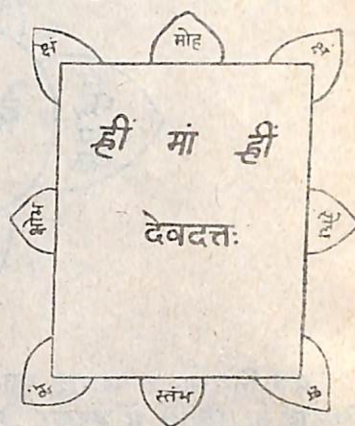
यंत्र-निर्माण के पश्चात् धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजन कर त्रिलोह के ताबीज में भरकर दूध के भीतर डालकर किसी मुकद्दमे के लिए जाय, तो उसमें विजय प्राप्त होती है।

यह 'विवाद-विजय' नामक मन्त्र झगड़े-मुकद्दमे आदि में विजय प्रदान कराने वाला तथा देवताओं द्वारा पूजित है।

व्यवहार-विवाद-जयदं यंत्रम्

भोजपत्र पर दो रेखा मिश्रित चतुष्कोण यन्त्र खींचकर उसके चारों कोनों में तथा पूर्वादि चारों दिशाओं में कमलदल स्थापित करे। इस प्रकार आठ दल होंगे। तदुपरान्त उक्त यन्त्र के भीतर दो तिरछी रेखा कल्पित करें। ऊपर की रेखा में ह्रीं, मां, ह्रीं इन बीजों को लिखकर नीचे की पंक्ति में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। आठों दलों को वक्ष्यमाण बीजों से पूर्ण करें। दक्षिण दल में 'रोध' बीज को,

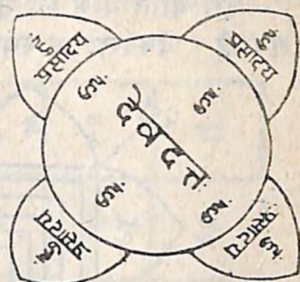
नैऋ त्य कोण में 'क्षं' बीज को, पश्चिम दिशा में 'स्तंभ' बीज को, वायक कोण में 'क्षं' बीज को, उत्तर में 'क्षोभ' बीज को, ईशान कोण में 'क्षं' बीज को, पूर्व में 'मोह' बीज को, तथा अग्नेय कोण में 'क्षं' बीज को रक्खे। इस प्रकार आठ दलों में द्वादश बीजों को रक्खे। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे बाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र-निर्माण के बाद उसे शराव-संपुट में रखकर अष्टगंध, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर, आठों दिशाओं में बलिदानादि क्रियाओं को विधिपूवक करके, इन्द्रादि लोकपालों की पूजा करे तथा कुमारियों को भोजन करावे। जब तक कार्य सिद्ध न हो, तब तक विधि-विधान से मंत्र का पूजन करता रहे।



इस मंत्र की कृपा से, व्यवहार तथा विवाद में विजय, राज्य सभा में सम्मान तथा लोक में उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

क्रोधशमनं जामदग्न्ययन्त्रम्

गोरोचन से ताड़पत्र पर लोहे के काँटों से सोमवार के दिन एक गोलाकार चक्र लिखकर पूर्वादि चारों दिशाओं में कमलदल स्थापित करे तथा उक्त गोलाकार चक्र के भीतर तीन रेखाओं को कल्पित कर, पहली और तीसरी रेखा में 'हुं' बीज को लिखे। बीच की पंक्ति के आदि और अन्त में हुंकार मिश्रित अन्त में अनुस्वार से युक्त साध्य व्यक्ति का नाम लिखे। उक्त दलों में भी दो-दो रेखाओं की कल्पना कर, पहली रेखा में 'हुं' बीज को लिखे तथा नीचे की रेखा में 'प्रसादय' इन अक्षरों को लिखे।



इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे बाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

लेखन के उपरान्त इस यन्त्र को कुम्हार की मिट्टी में रखकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ते हुए गन्धादिक से पूजन करना चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

"अक्रोधः सत्यवादी जमदग्निर्दृढव्रतः। रामस्य जनकः साक्षात् सत्त्वमूर्ते नमोस्तु ते ॥"

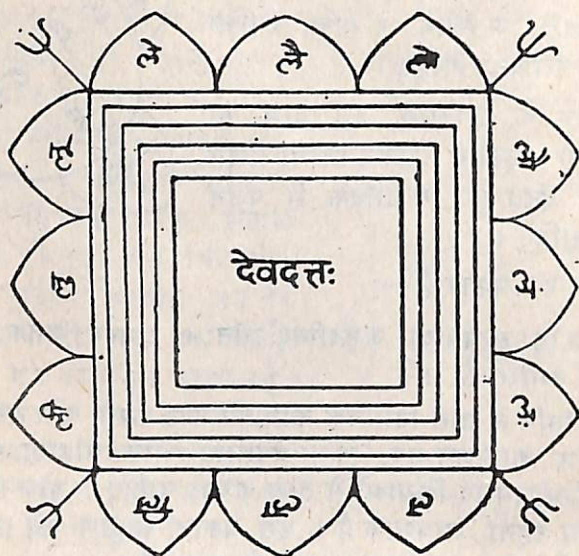
इस विधि से सात दिन तक क्रोध को नष्ट करने वाले इस 'जामदग्न्य यन्त्र' का पूजन कर, किसी वेदज्ञाता श्रेष्ठ ब्राह्मण का पूजन कर, उसे भोजनादि क्रियाओं से तृप्त करना चाहिए। भोजन में दही, चावल का रहना आवश्यक है। इस प्रकार ब्राह्मण की तृप्ति से, साध्य व्यक्ति के हृदय का क्रोध दूर हो जाता है।

मित्र, बन्धु अथवा किसी शत्रु के क्रुद्ध हो जाने पर इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। यह क्रोध को दूर कर प्रसन्नता को प्रदान करता है।

क्रोधशमनं 'महामृत्युञ्जययन्त्रम्'

भोजपत्र के दो टुकड़ों के ऊपर लोहे की कलम से अलग-अलग सात रेखाओं वाला चतुष्कोण खींचकर, ऊपर के चारों भागों में तीन-तीन कमलदल बनाए तथा चारों कोनों में त्रिशूल लगा दे। तदुपरान्त उक्त यन्त्र के मध्य में साध्य मनुष्य का नाम लिखे तथा ईशान कोण से आरम्भ करके प्रत्येक दल में ल, ला, लि, ली, लु, लू, ले, लै, लो, लौ, लं, लः—इन बारह अक्षरों को लिखे।

इस भाँति यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य का नाम लिखे।



उपर्युक्त विधि से दो यन्त्रों को लिखकर, उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बठे तथा दोनों मन्त्रों को मिलाकर पृथ्वी पर रक्खी हुई एक भारी शिला से दबा दे।

इस क्रिया को करने के उपरान्त साधक जब साध्य व्यक्ति के सामने पहुँचेगा, तो उसका क्रोध दूर हो जायेगा और साध्य व्यक्ति प्रसन्न होकर साधक को क्षमा कर देगा।

यह 'महामृत्युञ्जय' नामक यन्त्र प्राणों की रक्षा करने वाला तथा एक बार काल के क्रोध को भी शान्त कर देने वाला है।

सर्वसिद्धिदाता पन्द्रह का यन्त्र

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९—ये अंक १५ का यन्त्र लिखने में प्रयुक्त होते हैं। इस यन्त्रराज की अपार महिमा है। पन्द्रह के

यन्त्र के अनेक स्वरूप होते हैं, जिनमें से कुछ रूपों को नीचे प्रदर्शित किया गया है।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

६	१	८
७	५	३
२	९	४

८	३	४
१	५	९
६	७	२

२	७	६
९	५	१
४	३	८

६	७	२
१	५	९
८	३	४

२	९	४
७	५	३
६	१	८

इस यन्त्र को कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन बरगद की कलम से भोजपत्र पर एक सहस्र लिखने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अगर की कलम से एक सहस्र मन्त्र पृथ्वी पर लिखने से मनुष्य बन्धन से छूट जाता है तथा स्वामी से मित्रता होती है।

पीपल की कलम से लिखने पर दरिद्रता का नाश होता है।

गोमूत्र, मैनसिल, कपूर, तगर और गोरोचन की स्याही बनाकर, पीपल की जड़ की कलम से भोजपत्र पर एक सहस्र यन्त्र लिखने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

बेलपत्र का रस, हरताल और मैनसिल—इनको घोलकर, बेल की कलम से दो सहस्र मन्त्र एकान्त और शुभस्थान में बैठकर पृथ्वी पर लिखने से मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है।

आक के पत्तों के रस से आक के पत्ते पर १०८ यन्त्र लिखकर कीलर के वृक्ष में बाँध देने से इन्द्र के समान प्रबल शत्रु को भा ज्वर और देहशूल का शिकार बनना पड़ता है।

हल्दी को पानी में घिसकर, उसके द्वारा १०८ यन्त्र पत्थर पर लिखकर बैरी की चौखट में गाढ़ देने से, उसके बेटे, भाई, सम्बन्धी आदि से कलह हो जाती है।

ओंगा के रस से भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँध देने से तिजारी, चौथैया आदि हर प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।

भाँगरे के रस से भोजपत्र पर लिखकर भुजा और हृदय पर धारण करने से शास्त्रार्थ में विजय होती है।

इस पन्द्रह के यन्त्र की सवा लाख गोली आटे को बनाकर मछलियों को डालने से सब मनोकामनाओं की सिद्धि होती है। मछलियों को गोलियाँ डालते समय निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ते रहना चाहिए—

"ओ३म् ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुलसेवनाय स्वाहा।"

सन्तान-प्राप्ति की इच्छा हो तो इस यन्त्र को शतावर के पत्तों पर लिखना चाहिए। भाग्य-वृद्धि के लिए बरगद के पत्तों पर लिखना चाहिए, धन-प्राप्ति के लिए कमल-पत्र पर लिखना चाहिए। काम और अर्थ के लिए काँसी के पत्र पर लिखना चाहिए तथा भोजन के लिए केले के पत्ते पर लिखना चाहिए।

सभी कार्यों की सिद्धि के लिए इस मन्त्र को चमेली की कलम से लिखना चाहिए। आकर्षण के लिए जामुन की कलम, स्तम्भन के लिए बरगद की कलम, वशीकरण के लिए कुश की कलम तथा शुभ कार्य के लिए सोने अथवा चाँदी की कलम द्वारा केशर, चन्दन, अगर, कपूर और कस्तूरी से इस मन्त्र को लिखना चाहिए।

३

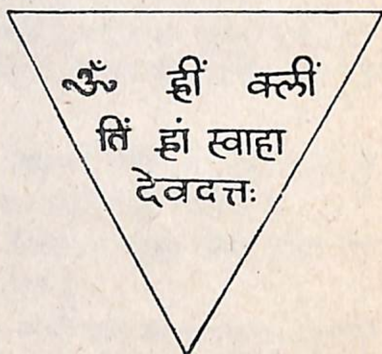
आकर्षण-यन्त्र

इस परिच्छेद में आकर्षण-यन्त्रों की विधियों का वर्णन किया गया है। उपयुक्त यन्त्र का विधिपूर्वक साधन करने से अभिलाषा की पूर्ति होती है।

मानिनी-आकर्षण 'कामराजयन्त्रम्'

दायें हाथ की अनामिका उँगली के रक्त से बायें हाथ की हथेली पर एक त्रिकोण यन्त्र को लिखे। उस यन्त्र के भीतर तीन पंक्तियों की कल्पना कर, प्रथम पंक्ति में 'ओं, ह्रीं, क्लीं'—इन बीजों को, दूसरी पंक्ति में 'तिं, ह्रां, स्वाहा'—इन चार वर्णों को तथा तीसरी पंक्ति में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाँईं ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

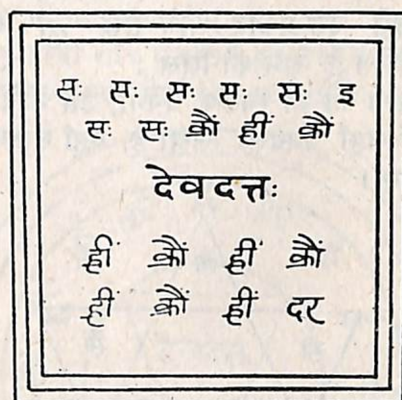


यन्त्रनि-र्माण के उपरान्त गंध, पुष्प आदि से पूजन करके जिस स्त्री को आकर्षित करना हो, उसका चिन्तन करना चाहिए।

इस यन्त्रराज के प्रभाव से साध्य स्त्री एक प्रहर के भीतर ही आकर्षित होकर, प्राप्त होती है। 'कामराज' नामक यह यन्त्र देवताओं का भी दुर्लभ है।

देशान्तरस्थ-पुरुष-आकर्षक 'मणिभद्रयन्त्रम्'

गोरोचन, कुंकुम तथा लाल चन्दन से भोजपत्र पर तीन रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर, उक्त यन्त्र के भीतर पाँच रेखाओं की कल्पना करे। पहली रेखा में पाँच विसर्ग-युक्त 'सकार' बीजों को लिखकर अन्त में 'हकार' बीज को लिखे। दूसरी पंक्ति में 'सः, सः, क्रों, ह्रीं, क्रों' इन पाँच बीजों को लिखे। तीसरी रेखा में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। चौथी रेखा में 'ह्रीं, क्रों, ह्रीं, क्रों, इन चार बीजों को लिखे तथा पाँचवीं रेखा में 'ह्रीं, क्रों, ह्रीं, दर' इन पाँच बीजों को लिखकर यन्त्र की पूर्ति करे।



इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के उपरान्त गन्धादि से विधिपूर्वक पूजन करके, उसे लाल रंग के सूत से बाँधे। तदुपरान्त अपने शरीर के उबटन से मनुष्याकार मूर्ति बनाकर, उस मूर्ति के हृदय में यन्त्र को रक्खे तत्पश्चात् उबटन से आच्छादित कर त्रि-संध्या में तीन दिन तक,

खैर (कत्थे) की अग्नि में तपते हुए नीखे लिखे मन्त्र का जप करे—

'ओ३म् देवदत्तं वेगेन आकर्षय माणिभद्र स्वाहा ।'

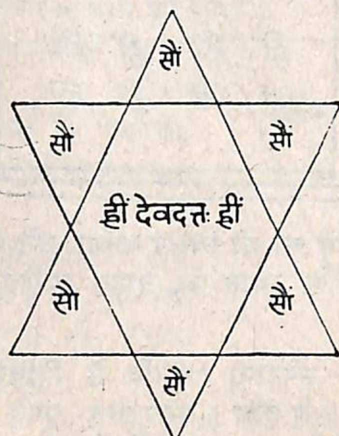
यह तापन मन्त्र है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

इस विधि से माणिभद्र देशान्तर में स्थित पुरुष को आकर्षित करते हैं। वीर भगवान् माणिभद्र ने स्वयं भी तापन, शोषणादि क्रियाओं के द्वारा इस मंत्रेश्वर का पूजन किया है।

आकर्षक त्रैपुराख्यं यन्त्रम्

जल-मिश्रित गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर एक षट्कोण यन्त्र को लिखकर, प्रत्येक कोण में 'सौं' बीज को लिखे तथा यन्त्र के मध्यभाग में 'ह्रीं देवदत्तः ह्रीं' इस प्रकार आगे-पीछे 'ह्रीं' बीज को लगाकर बीच में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



यन्त्र-निर्माण के उपरान्त उसका गन्धादिक से विधिपर्वक पूजन

करके घृत के मध्य स्थापित करे तथा निम्नलिखित मन्त्र का जप करते हुए त्रिपुरा से प्रार्थना करे।

मन्त्र यह है —

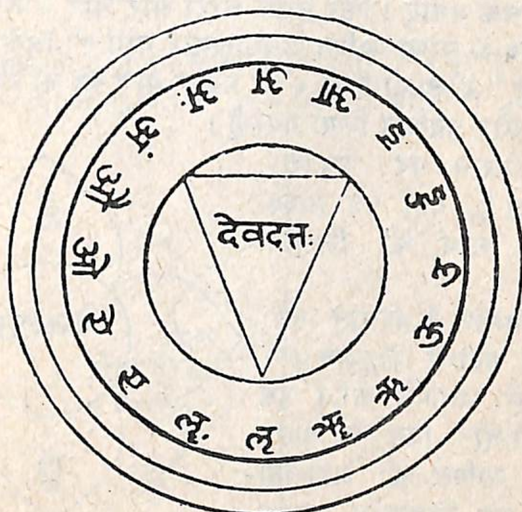
"आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम् ।
ऐ त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम् ।"

उक्त मन्त्र में 'जहाँ' देवदत्त शब्द आया है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करे।

इस विधि के करने से 'त्रैपुर यन्त्र' के प्रभाव से सातवें दिन आकर्षण होता है।

नर-नारी-आकर्षण 'देवमातृकं यन्त्रम्

लाख का रस, हल्दी और मजीठ—इन वस्तुओं के द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक त्रिकोण-युक्त गोलाकार चक्र खींचे, उससे थोड़े अन्तर



पर एक और गोलाकार चक्र खींचे, फिर उसके समीप ही एक अन्य गोलाकार चक्र को दो रेखाओं से संयुक्त करके खींचे। फिर त्रिकोण

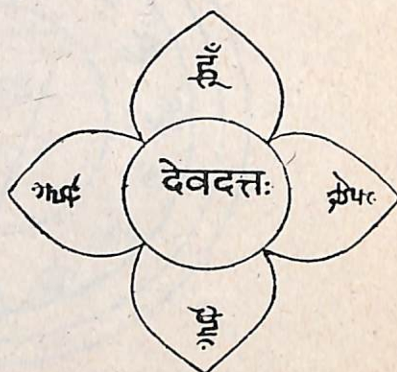
के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखकर, दोनों गोलाकारों के भीतर अकारादि सोलह स्वरों को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे ऊपर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, उस स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-लेखन के पश्चात् साध्य व्यक्ति के पाँव के नीचे की धूलि लाकर एक पुतली बनाये और उसके योनि-भाग में उक्त यन्त्र को विधिपूर्वक पूजन करने के उपरान्त प्रतिष्ठित करे। इस क्रिया के करने से साध्य व्यक्ति आकर्षित होकर समीप चला आता है। इस यन्त्र के द्वारा पुरुष को स्त्री एवं स्त्री को पुरुष की प्राप्ति होती है। इस 'देवमातृक' संज्ञक यन्त्र को अत्यन्त गुप्त रखना चाहिए।

मित्रदर्शन यन्त्रम्

लाल चंदन और अपने रक्त को मिलाकर भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र बनाए। फिर उसके चारों ओर चार कमलदल खींचे। चक्र के बीच में साध्य व्यक्ति के सानुस्वार नाम को लिखे तथा चारों दलों में 'ह्रूँ' बीज को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है।



जिस स्थान पर 'देवदत्तः' लिखा हुआ है, वहाँ पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के पश्चात् गंध, पुष्प आदि पदार्थों से पूजन कर, उसे घृत में स्थापित करे। इस क्रिया से दो-तीन दिन के भीतर ही साध्य व्यक्ति का आकषरण होता है। यह 'मित्रदर्शन' नामक यंत्र अभिलाषा की पूर्ति करने वाला एवं परम गोपनीय है।

४

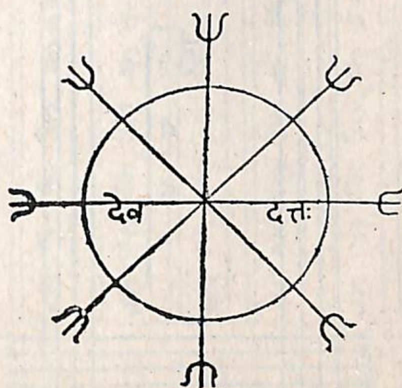
स्तम्भन यन्त्र

इस परिच्छेद में स्तम्भन-यन्त्रों की विधियों का वर्णन किया गया है। उपयुक्त यन्त्र का विधिपूर्वक साधन करने से साधक की इच्छा पूरी होती है।

शत्रुमुखस्तम्भनं यन्त्रम् (१)

अपने घर की दीवार पर खड़िया मिट्टी से एक गोलाकार चक्र खींचकर आठों दिशाओं में त्रिशूल लगाकर मध्य में साध्य व्यक्ति का नाम लिखे।

इस प्रकार के यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित किया गया है। देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



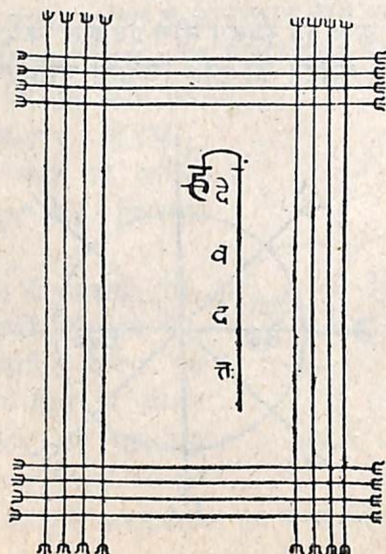
इस यन्त्र का श्वेत पुष्प, फल, सुगन्ध, मनोहर श्वेत वस्त्र आदि से पूजन कर, एक ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए तथा 'श्री शिवः प्रीयताम्' इस मन्त्र का जाप करते रहना चाहिए।

इस मन्त्र के प्रभाव से शत्रु का मुँह बन्द हो जाता है। और मुकदमे आदि में विजय तथा प्रताप की प्राप्ति होती है।

शत्रुमुखस्तम्भनं यन्त्रम् (२)

खड़िया मिट्टी से शिला-संपुट के भीतर चार रेखाओं वाले चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर प्रत्येक कोण की रेखा को त्रिशूल, युक्त करे। फिर यन्त्र के भीतर अर्द्धचन्द्रीकार और एक बिन्दु को ऊपर के भाग में लगाकर एक ही 'ह्रीं' बीज को लिखे तथा उस 'ह्रीं' बीज की मात्रा से मध्य में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए तथा ईकार मात्रा को उसी अनुपात से छोटा-बड़ा रखना चाहिए।

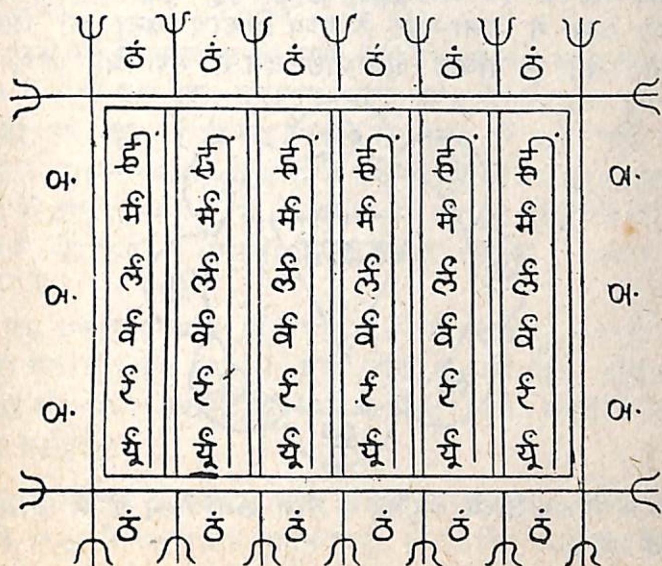


यन्त्र लिखने के पश्चात् उसका गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे तथा शराव-संपुट में रखकर स्थापित करे। इस क्रिया को करके एक ब्राह्मण को भोजन कराये तथा 'श्री विद्या प्रीयताम्' कहकर उससे आशीर्वाद प्राप्त करे।

इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाता है और किसी प्रकार से अनर्गल अथवा हानिकारक शब्द नहीं कह पाता।

शत्रुमुखगतिमतिस्तम्भक 'जिह्वावेधनयन्त्रम्'

गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर दो रेखा वाले षट्कोण यन्त्र को लिखकर प्रत्येक कोण की रेखा को त्रिशूल-युक्त करके अन्तराल में 'ठ' कार बीजों को लिखे। फिर प्रत्येक कोण के भीतर 'ह, य, ल, व, र, य' इन सब वर्णों को ऊपर-नीचे स्थापित कर, योजनापूर्वक अन्त में ऊकार स्वर को मिलाकर बिन्दु तथा रेफ को ऊपर के भाग के में लिखकर ईकार स्वर को मिलाये।



इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे पृ० ८९ पर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र को लिखने के उपरान्त विधिपूर्वक पूजन करे तथा निश्चिन्त मन से वक्ष्यमाण मन्त्र का जप करे। मन्त्र इस प्रकार है—

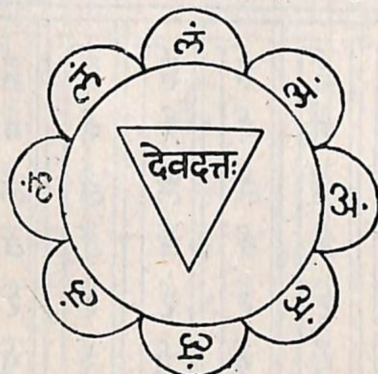
ओ३म् ह्ल्र्यूं लललल अमुकस्य मुखं स्तम्य स्तम्भ ठः ठः ठः ठः ठः ठः स्वाह॥"

मन्त्र में 'अमुकस्य' के स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। त्रिसंध्या काल में तीन दिन तक इस मन्त्र को एक सौ आठ बार अथवा सौ बार यत्नपूर्वक जपना चाहिए तथा त्रिसंध्याकाल में स्वर्ण की कान्ति के समान पीले वर्ण वाले फूलों से पूजन करे।

इस क्रिया द्वारा शत्रु की बुद्धि और गति का स्तम्भन होता है तथा शत्रु मूकभाव को प्राप्त होता है।

प्रतिवादि-मुख-स्तम्भक 'वाणिस्तम्भनं यन्त्रम्'

पीले द्रव्य से शिला-संपुट के मध्य त्रिकोण यन्त्र को लिखकर गोलाकार चक्र से वेष्टित कर आठ दल से सुशोभित कर, उक्त



त्रिकोण के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम तथा दलों में 'लं' बीजों को स्थापित करे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे पृ० ९१ पर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद पीतवर्ण सुगन्धित पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन कर, खीर तथा गुड़ मिश्रित पदार्थों से एक ब्राह्मण को भोजन कराके, उक्त यन्त्रों, पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोदकर गाढ़ दे तथा ऊपर से मिट्टी भर दे।

इस यन्त्र के प्रभाव से व्यवहार, विवाद, मुकद्दमा-शास्त्र, चर्चा आदि में प्रतिवादी की मुख स्त्तंभित हो जाता हैं और साधक को विजय प्राप्त होती है। यह 'वाणिस्तम्भन' यन्त्र संसार में 'प्रतिवादि-मुख-स्तम्भन यन्त्र' के नाम से भी सुप्रसिद्ध तथा परम गुप्त है।

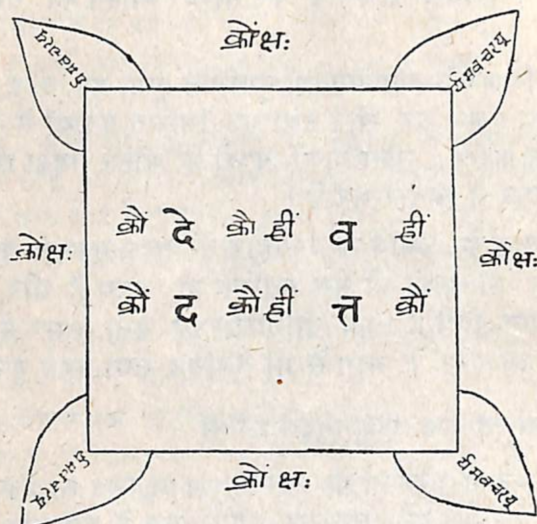
पिशुन-मुख-स्तम्भक 'पिशुनमुद्रण यन्त्रम्'

गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर प्रत्येक कोण में एक-एक दल लगाकर, उक्त यन्त्र के बहिर्भाग पूर्व-पश्चिम में 'क्रों, क्षः इन बीजों को लिखे। मध्यभाग में 'क्रों', 'ह्रीं' बीजों से संपुटित साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखे। तदुपरान्त प्रत्येक कोण में दीर्घ बीज ' य, म, व, च, र, प' इन छः वर्णों को मिश्रित कर मस्तक के ऊपर अनुस्वारयुक्त रकार लगाकर ऊकार स्वर में मिला दे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे पृ० ९२ पर प्रदर्शित किया गया है। इस यन्त्र में मध्य भाग के 'क्रों, ह्रीं' बीजाक्षरों की संख्या को साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों के अनुसार घटा-बढ़ा लेना चाहिए।

यन्त्र-लेखन के पश्चात् लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल वस्त्र तथा अपने रक्त से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा देकर एक

ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। परन्तु इस कार्य में धन की कृपणता न करे।

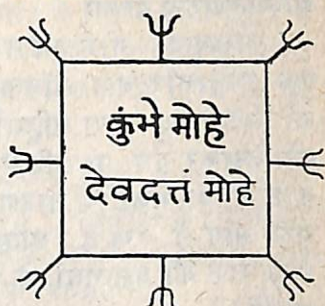


तत्पश्चात् भूमि में एक गड्ढा खोदकर उसमें यन्त्र को गाढ़ कर मिट्टी से दबा दे। इस यन्त्र के प्रभाव से पिशुन (चुगलखोर) शत्रु की बुद्धि, वाणी तथा गति का भ्रंश होता है। पिशुन व्यक्ति का मुख बन्द करने के लिए यह अत्युत्तम यन्त्र है।

यात्रा-स्तम्भन यन्त्रम्

शिला-संपुट के ऊपर पीले द्रव्य (गोरोचन, हरताल, हल्दी, मैनशिल और कुंकुम को पीला द्रव्य कहा जाता है) से एक चतुष्कोण यन्त्र लिखकर, चारों कोनों तथा चारों दिशाओं में एक-एक त्रिशूल लिखे। तदुपरान्त मध्य में दो रेखाओं की कल्पना करके, पहली रेखा में 'कुम्भे मोहे' तथा दूसरी रेखा में साध्य व्यक्ति के सानुस्वार नाम के अन्त में 'मोहे' इन दो वर्णों को युक्त करे। उदाहरणार्थ 'देवदत्त मोहे' लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



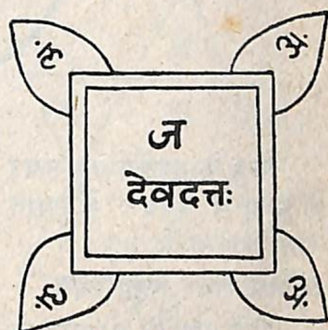
यन्त्र-लेखन के उपरान्त पीले पुष्प तथा गन्ध आदि से पूजन कर अनेक प्रकार के भक्ष्य, नैवेद्य आदि अर्पित करे। फिर पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोदकर उसमें यन्त्र को स्थापित कर ऊपर मिट्टी से भर दे।

इस विधि के द्वारा किसी भी व्यक्ति की यात्रा को स्तम्भित किया (रोका) जा सकता है।

प्रियजन-यात्रा स्तम्भन यन्त्रम्

पीले द्रव्य से लिप्त काष्ठ के टुकड़े पर खड़िया मिट्टी से दो रेखा वाले चतुष्कोण यन्त्र को खींचकर चारों कोनों में एक-एक दल कमल स्थापित करे। फिर प्रत्येक कोण में से बीज को लिखकर चक्र के भीतर जकार अक्षर की मात्रा के मध्य में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना

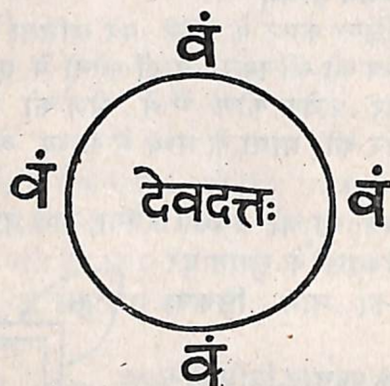


न्त्र-लेखन के पश्चात् विधिपूर्वक पजन कर, घर के भीतर अधोमख करके बाँध दे। इसके प्रभाव से जो प्रियजन मना करने पर भी जा रहा होगा, उसकी यात्रा स्तम्भित हो (रुक) जाएगी।

अग्निनिवारणं यन्त्रम्

लालचन्दन, गोरोचन तथा हिम से सुविस्तृत भोजपत्र विधानपूर्वक एक गोलाकार चक्र खींचकर उसके मध्य में साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। तदुपरान्त बहिर्भाग की पूर्वादि चार दिशाओं में 'वं' बीज को लिखकर गंध, पुष्पादि से पूजन कर, त्रिलोह के ताबीज में गन्द कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण करे अथवा दुग्ध में स्थापित कर घर के मध्य भाग में रख दे। प्रतिदिन यन्त्र का पूजन करता रहे तथा इस यन्त्र राज की प्रसन्नता के लिए प्रथम दिन एक ब्राह्मण को भोजन कराये।

जो व्यक्ति इस यन्त्र को धारण करता है, उसे अग्नि का भय नहीं होता तथा जिस घर में यह मन्त्र होता है, वहाँ अग्नि का भय कदापि नहीं होता।



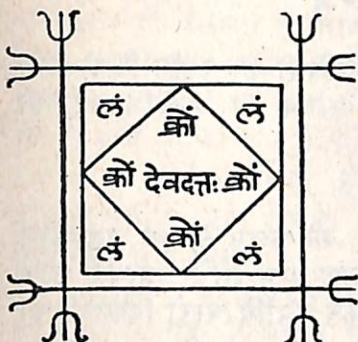
यन्त्र के स्वरूप को ऊपर की ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र के मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति अथवा गृह-स्वामी का नाम लिखना चाहिए।

अग्निस्तम्भन महामन्त्रम्

पीले द्रव्य से भोजपत्र के ऊपर दो रेखा युक्त चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर, उसके भीतर एक चतुष्कोण और लिखे तथा बहिर्भाग के

चारों कोनों पर दो-दो त्रिशूल लगाकर भीतर के चतुष्कोण के उदर में पूर्वादि चारों दिशाओं में 'क्रो' बीज को लिखकर सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे, फिर मध्य कोण के बहिर्भाग में 'लं' बीजों को लिखे।

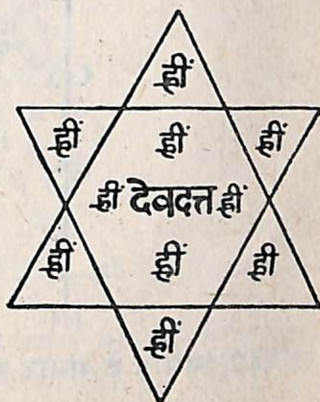
इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे बाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति अथवा गृहस्वामी का नाम लिखना चाहिए।



गंध आदि से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराके, यन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ देना चाहिए। जब तक इस यन्त्र के ऊपर पानी डाला जाता रहेगा, जब तक वहाँ अग्नि का प्रकोप न होगा। यह अग्नि-स्तम्भन-कारक यन्त्र है।

दिव्य स्तम्भन यन्त्रम्

गोरोचन तथा कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर वैसा यन्त्र लिखे, जैसा कि दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है।



इस यन्त्र को शराव-संपुट में रखकर भक्तिपूर्वक पूजन करे तथा दूसरे दिन निकाल कर शिखा में बीच बाँध ले तथा मौन रहकर फल की चिन्ता करे।

यह यन्त्रराज हर प्रकार के स्तम्भन कार्य में विशेष फल देने वाला है।

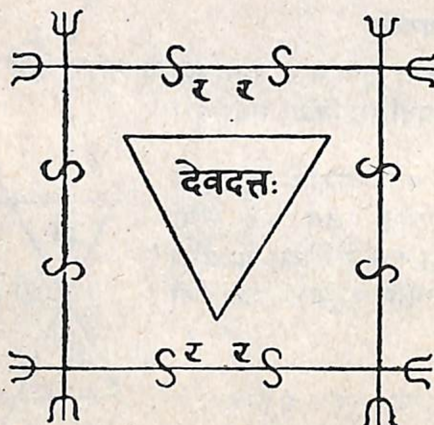
५

विद्वेषण यन्त्र

इस परिच्छेद में विद्वेषण यन्त्रों की विधियों का वर्णन किया गया है। उपयुक्त यन्त्र का विधिपूर्वक साधन साधक की मनोभिलाषा को पूर्ण करता है।

बन्धु-विद्वेषण यन्त्रम्

श्मशान-वस्त्र के ऊपर कौए के पंख की कलम से एक चतुष्कोण यन्त्र को खींचकर, उसके भीतर एक त्रिकोण यन्त्र खींचे। प्रत्येक कोण में तथा प्रत्येक रेखा में त्रिशल लिखे। फिर पूर्वादि चारों दिशाओं की रेखाओं में दुहरे 'र' कार केरेफ स्थापित करे। इसके पश्चात् भूत



रात्रि में श्मशान के अंगार को मेढ़ा के रुधिर में घिसकर उसके द्वारा

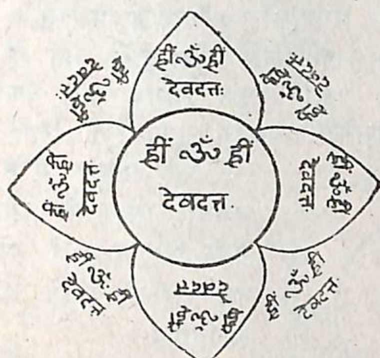
त्रिकोण के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे एवं त्रिकोण के ऊपर-नीचे दो-दो र कार वर्ण लिखे।

इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे पीछे प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद बकरी के रक्त से मिश्रित भात-नैवेद्य द्वारा इसकी बलि तथा गन्ध-पुष्पादिक से पूजन कर, सात अंगुल भूमि खोदकर दबा दे। इस यन्त्र से भाई-भाई में विद्वेष हो जायगा। यदि किसी अन्य व्यक्ति का पाँव भी इस भूमि-स्थित यन्त्र पर पड़ेगा, तो वह भी दौर्भाग्य का भागी होगा। यह यन्त्र उस स्थान की भूमि में दाबना चाहिए, जहाँ शत्रु के आने जाने का रास्ता हो।

शत्रु-विद्वेषण यन्त्रम

श्मशान के वस्त्र पर विद्वेषी के (अपने) रक्त द्वारा कौए के पंख की कलम से एक गोलाकार चक्र खींच कर दो रेखा वाले चार कमल दलों को पूर्वादि चारों भागों में स्थापित करे। तदुपरान्त उस गोलाकार चक्र के भीतर एवं चारों दलों तथा प्रत्येक दल के सन्धि भाग के



निकट 'ह्रीं, अं, ह्रीं' इन तीन बीजों को ऊपरी भाग में लिखे तथा प्रत्येक स्थान पर नीचे साध्य मनुष्य के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जों स्वरूप बनेगा उसे ९७ पर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र-लेखन के पश्चात् बकरी के रक्त से मिश्रित भात तथा नैवेद्य की बलि दे और गन्ध-पुष्पादि से रात्रि के समय यन्त्र एवं गुरु का पूजन कर एक योगिनी को भोजन कराये। यन्त्र को उद्वास शिव मन्दिर अथवा श्मशान में स्थापित करे। इस यन्त्र को भूलकर भी घर में न तो स्थापित करे और न वहाँ इसका लेखन-पूजनादि ही करे।

इस यन्त्र के प्रताप से शत्रुओं का विद्वेषण होता है। यह 'शत्रु विद्वेषण यन्त्र' अत्यन्त फलदायक है। इसका प्रयोग एकदम एकान्त स्थान में करना चाहिए। किसी भी अन्य व्यक्ति के सामने इस यन्त्र का साधन नहीं करना चाहिए।

स्वामि-भृत्य-विद्वेषण यन्त्रम

रुधिर मिले विष से कौए के पंख की कलम द्वारा श्मशान-वस्त्र के ऊपर एक गोलाकार यन्त्र खींचकर, उसके एक अंगुल के अन्तर से एक और गोलाकार यन्त्र खींचे। फिर प्रथम चक्र के भीतर सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे तथा दूसरे चक्र के मध्य में पूर्व तथा पश्चिम के भाग में यकार पुटित तीन रकार वर्णों को तथा उत्तर-दक्षिण भागों में विसर्गान्त यकार, सकारों को लिखे।



इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बायीं ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त गन्ध-पुष्पादि से यंत्र का पूजन कर स्वामी-सेवक के आने-जाने के मार्ग में भूमि खोद कर दबा दें।

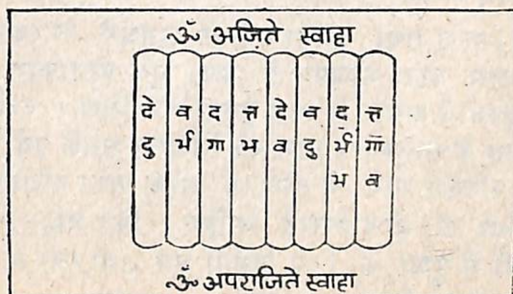
इस भूमिस्थ यन्त्र के ऊपर पांव पड़ते ही स्वामी-सेवक में विद्वेष हो जायगा।

नर-नारी विद्वेषण यन्त्रम

गोरोचन से एक बड़े भोजपत्र के ऊपर चतुष्कोण यन्त्र बनायें। उसके मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम की ओर ९ खड़ी रेखाएँ खींचे (जिनके आठ कोष्ठक बनें)। फिर प्रत्येक रेखा को मिलाकर उनके ऊपरी भाग में 'ओ३म अजिते स्वाहा' तथा नीचे के भाग में 'ओ३म् अपराजिते स्वाहा' इन पदों को लिखे तथा कोष्ठों के भीतर, ऊपरी भाग में दो बार साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखे तथा नाम के वर्णों के निचले भाग में बार-बार 'दुर्भगा भव' इन वर्णों को लिखे।

यदि साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षर कोष्ठों की संख्या से अधिक हों तो उन्हें बहिर्भाग में लिख देना चाहिए। 'दुर्भगा भव' वाक्य को स्त्री के प्रसंग में लिखना चाहिए तथा पुरुष के प्रसंग में 'दुर्भगो भव' लिखना चाहिए। अर्थात यदि यन्त्र में प्रदर्शित 'देवदत्तः' के स्थान पर किसी स्त्री का नाम लिखा जाय तो 'दुर्भगा भव' लिखना चाहिए और किसी पुरुष का नाम लिखा जाय तो 'दुर्भगो भव' लिखना चाहिए।

इस विधि से लिखने पर यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।



उक्त विधि से यन्त्र का निर्माण कर, किसी नदी के तट पर जाकर आर-पार की मिट्टी लाकर, मौन होकर, उक्त मिट्टी से गणेशजी की प्रतिमा का निर्माण करे तथा यन्त्र को उस प्रतिमा के ऊपर रखकर, गन्ध, पुष्प, मोदक आदि पदार्थों से स्तुतिपूर्वक पूजन कर, 'गणेश: प्रीयताम्' इस वाक्य का उच्चारण करके भक्ष्य-पदार्थों द्वारा बालकों का पूजन करना चाहिए।

इस भाँति गणेश-पूजन के पश्चात् यन्त्र सहित प्रतिमा को शराब-सम्पुट में स्थापित कर, भूमि में सम्पुट खोदकर, 'अघोरेति' इस मन्त्र को पढ़ते हुए प्रतिमा की स्थापना कर, पूजन करे।

इस विधि के प्रयोग से स्त्री दौर्भाग्य को प्राप्त होकर रात-दिन दु:खी रहती है। वह कितनी ही सुन्दरी क्यों न हो, फिर भी पुरुष उसको सहन नहीं कर पाता। यदि इस यन्त्र का प्रयोग पुरुष के लिए किया जाय तो उस पुरुष को स्त्री सहन नहीं कर पाती हैं, फिर वह कितना ही स्वरूपवान् एवं सज्जन क्यों न हो।

यह मन्त्र स्त्री-पुरुष में विद्वेष करा देता है। इस यन्त्र का किसी अन्य विषय में प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह यन्त्र किसी अन्य व्यक्ति को देना भी नहीं चाहिए, क्योंकि देने से यह यन्त्र विपरीत फल प्रदान करता है तथा यन्त्र देने वाले के लिए हानिकर सिद्ध होता है।

विश्व-विद्वेषण यन्त्रम

कौआ, उल्लू तथा दुर्भगा स्त्री के ऋतुधर्म के रक्त से कौए के पंख की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र लिखे। उसके अंगुलमात्र अन्तर से एक दूसरा चक्र लिखे। चक्र के मध्य में साध्य व्यक्ति के सानुस्वार नाम को लिखकर उसके पूर्व भाग में चार 'ठं' बीज, पश्चिम भाग में तीन 'ठं' बीज तथा दक्षिण और उत्तर भाग में दो-दो 'ठं' बीज लिखने चाहिए। फिर बहिर्भाग के पूर्वादि चारों भागों में पुरुष के लिए 'दुर्भगो भव' तथा स्त्री के लिए 'दुर्भगा भव' इस वाक्य को लिखना चाहिए।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



यन्त्र-लेखन के उपरान्त गन्ध-पुष्पादि से पूजन कर, यन्त्र को घर के भीतर घास इत्यादि में दबाकर रख दे।

यह यन्त्र जब तक घर में विद्यमान रहेगा, तब तक उस घर में विद्वेष शांत न होगा और उस घर के प्राणियों से सब लोगों की शत्रुता बनी रहेगी।

'जगत् विद्वेषक' नामक यह यन्त्र दौर्भाग्य की वृद्धि करने वाला है।

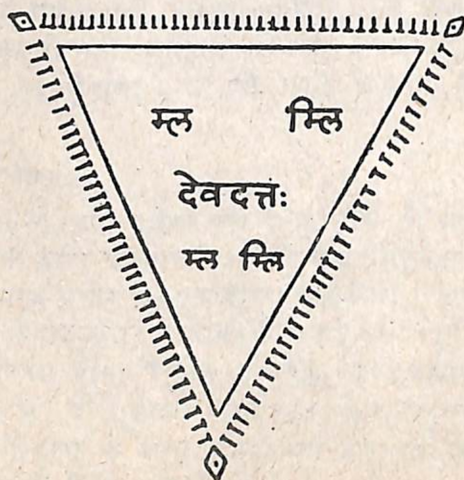
६

मारण-यन्त्र

इस परिच्छेद में मारण-यन्त्रों की विधियों का वर्णन किया गया है। इन यन्त्रों का प्रयोग केवल उसी स्थिति में करना चाहिए, जब शत्रु दुष्ट हो, अत्यन्त प्रबल हो, किसी प्रकार भी वशीभूत न होता हो और स्वयं के प्राण लेने पर उद्यत हो।

शत्रु-मारण यन्त्रम्

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में श्मशान के अंगार द्वारा, धतूरे के रस से, मनुष्य के कपाल पर इस यन्त्र को लिखना चाहिए। यन्त्र लिखते समय वस्त्रों को उतार कर, नग्न हो जाना चाहिए। यंत्र लिखने की विधि यह है—

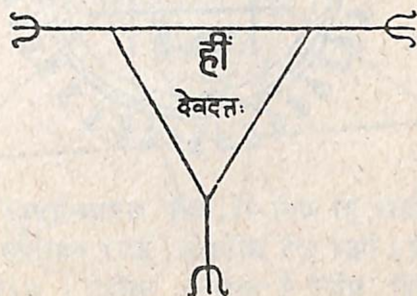


पाल के बीच में साध्य व्यक्ति के नाम कोलिखकर, ऊपर तथा नीचे 'म्ल-म्लि' इन अक्षरों को लिखे, फिर ऊपर त्रिकोण खींचकर, उसे ऊपर की मात्रा युक्त १०८ रेखाओं से युक्त करे। त्रिकोण के प्रत्येक ओर ३६-३६ रेखाएँ खींची जायगी।

इस विधि से जो यन्त्र बनेगा, उसके स्वरूप को चित्र में प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा हुआ है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। इस प्रकार जब यन्त्र लिख जायं, तब उस कपाल को शराव-सम्पुट में रखकर, बलि, मांस, पूजन-सामग्री तथा स्व-रक्त—इनसे पूजित कर उसी जगह गाढ़ दे तथा प्रत्येक रात्रि में उसके ऊपर अग्नि प्रज्वलित करता रहे। इस तरह करने से तीसरे दिन शत्रु को ज्वर आ जायगा तथा क्रमानुसार रोग प्रबल होकर, मृत्यु को प्राप्त हो जायगा। यदि वह एक जीव की बलि दे देगा, तब तो जीवित बच जायगा, अन्यथा उसे प्राणों हाथ धोने पड़ेंगे।

शत्रु प्राणनाशक यन्त्रम्

विष और हरताल को एकत्र कर कौए के पंख की लेखनी से भोजपत्र के ऊपर एक त्रिशूल युक्त त्रिकोण यन्त्र खींचकर मध्यभाग में 'ह्रीं' बीज को तथा उसके नीचे साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



यन्त्र-निर्माण के उपरान्त पूर्वोक्त यन्त्र का विधि से पूजन कर, उसे नर-नालिका में रख कर श्मशान भूमि में खोदकर गाढ़ दे।

इस क्रिया से शत्रु की अचानक मृत्यु हो जाती है।

देशान्तरस्थ शत्रु मारण यन्त्रम्

श्मशान के अंगार तथा विष को बकरी के रक्त में मिलाकर मनुष्य के कपाल के बीच में, कौए के पंख की कलम से दो रेखा युक्त गोलाकार यंत्र खींचकर उसके मध्यभाग में एक आठ दल खींचे, जैसा कि ग्रहकांडी में खींचा जाता है। फिर प्रत्येक दल में 'हुँ फट्' इस बीज-मन्त्र को लिखे। मध्य भाग में दो हुंकार के बीच साध्य व्यक्ति का नाम लिखे। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए तथा यन्त्र के ऊपरी भाग में 'हुं' बीज को लिखना चाहिए।



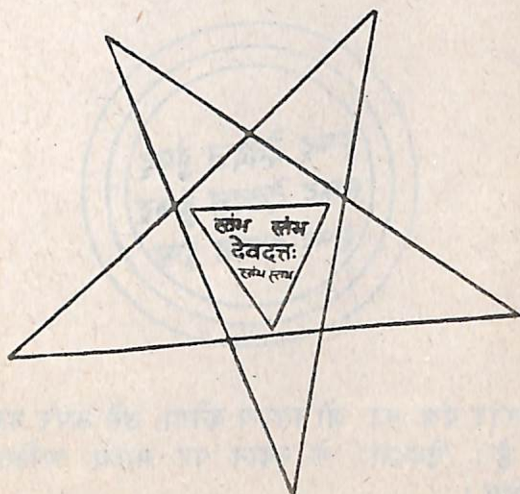
यन्त्र के तैयार हो जाने पर, उसे शराव-सम्पुट में रखकर, भस्म से पूरित कर दे। फिर उसे अग्नि के ऊपर स्थापित करे। इसे प्रति-दिन थोड़ी-थोड़ी अग्नि से जलाना चाहिए। २१वें दिन रात्रि के

समय सब जल जायगा। इसी अवधि में शत्रु को ज्वर आना आरम्भ हो जायगा तथा २१वें दिन शत्रु की मृत्यु हो जायगी।

यन्त्र के पूजन की क्रिया पूर्वोक्त यन्त्र की विधि के अनुसार ही है। यह यन्त्र देशान्तर या परदेश में स्थित शत्रु के मारण के लिए प्रयुक्त करना चाहिए।

नर-नारी मारण यन्त्रम्

स्त्री के मासिक धर्म के रक्त में श्मशान की भस्म को मिलाकर विभीतक (भिलावे) के पत्ते पर, कौए के पंख की कलम से एक त्रिकोण यन्त्र खींचकर, उसके बहिर्भाग में एक पंचकोण यंत्र खींचे। तदुपरान्त त्रिकोण के भीतर 'स्तंभ-स्तंभ' इन बीजों से पुटित साध्य व्यक्ति के सानुस्वार नाम को लिखकर, यंत्र को नर-नलिका में बन्द कर, साध्य व्यक्ति के मूत्र से सिंचित मिट्टी से पूर्ण कर, नियम-पूर्वक रात्रि के समय श्मशान की भूमि को खोदकर उसमें यन्त्र को दबा दे।



यंत्र के स्वरूप को पृ० १०५ पर प्रदर्शित किया गया है। देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

इस यंत्र के प्रयोग से शत्रु को मूत्ररोग उत्पन्न होकर सात रात्रि में उसकी मृत्यु हो जाती है। यह स्त्री अथवा पुरुष दोनों के लिए मारक है। इस यंत्र की मोक्ष पूर्वोक्त विधि के अनुसार होती है अर्थात् एक जीव की बलि देने से मोक्ष हो सकती है।

सर्वजन मारण यन्त्रम्

मनुष्य के रक्त में श्मशान के अंगारे को घिसकर, विष मिलाकर कौए के पंख की कलम से श्मशान-वस्त्र के ऊपर तीन वर्तुल रेखा वाले चक्र को खींचे। फिर उसके भीतर तीन रेखाओं की कल्पना कर, प्रत्येक रेखा में 'हुँ फट्' बीज-मंत्रों से पुटित सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।



इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे ऊपर यहाँ प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

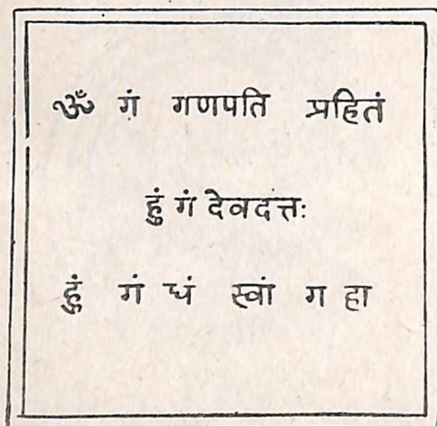
यंत्र लिखने के उपरान्त शत्रु के पाँवों के नीचे की धूलि को राजिका मिश्रित कर एक प्रतिमा बनाये। उस प्रतिमा के हृदय में 'शत्रुमारण यंत्र' को स्थापित करे। इस क्रिया से शत्रु के शरीर में दाह तथा व्याधि उत्पन्न होगी एवं तीसरे दिन मस्तिष्क में घोर पीड़ा होगी। तत्पश्चात हाथ-पाँव में दाह होकर सातवें दिन मृत्यु हो जायगी। यंत्र-पूजन की क्रिया पूर्वोक्त मंत्र के समान समझनी चाहिए।

७

उच्चाटन यन्त्र

शत्रु उच्चाटन यन्त्रम्

अपनी अनामिका उँगली के रक्त से भोजपत्र के ऊपर दो-दो रेखा मिलाकर एक चतुष्कोण यन्त्र को खींचे। फिर उसके भीतर तीन रेखाओं की कल्पना कर, पहली रेखा में ॐ गंणपति प्रहितं' दूसरी में 'हुं गं' आदि में लगाकर साध्य व्यक्ति का नाम तथा तीसरी में 'हुं गं धं स्वां ग हा' इन बीजों को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



यन्त्र-लेखन के उपरान्त साधक को चाहिए कि वह कृष्ण पक्ष की रात्रि में लाल वस्त्र धारण कर, रक्त माला एवं रक्त अनुलेपन से

युक्त हो, रक्त पुष्प, रक्त गंध तथा स्वच्छ फल से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा देकर किसी कुमार को भोजन करावे। तदुपरान्त गरोश जी का ध्यान करे।

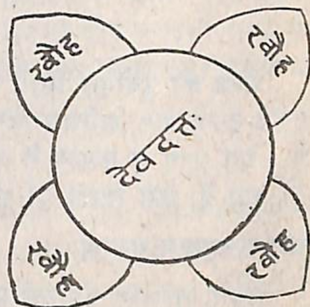
ध्यान की विधि यह है—अंजन पर्वत के समान नील वर्ण वाले गजमुख को धारण करने वाले गणेश जी शत्रु को अपने शुंडादण्ड से ग्रहण-कर आकाश मण्डल में उछाल रहे हैं।

इस विधि से २१ दिन के भीतर ही शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। आगे कहे गये सभी उच्चाटन के प्रयोगों का इसी विधि से लेखन-पूजन करना चाहिए।

लेखन-पूजन की क्रिया समाप्त हो जाने के उपरान्त यन्त्र के टुकड़े करके, जूठे भात में मिला कर अन्तिम दिन कौवों को खिला देना चाहिए।

शत्रु मरमउच्चाटन यन्त्रम्

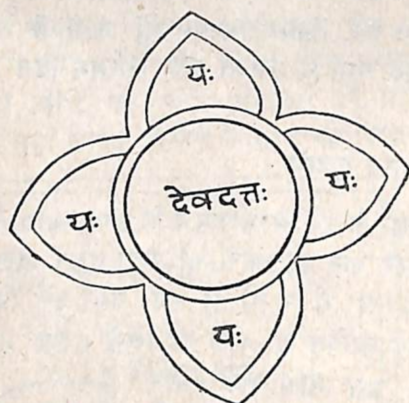
नीम के पत्तों के रस से भोजपत्र के ऊपर कौए के पंख की कलम से एक गोलाकार चक्र खींचकर दो रेखा युक्त दल चारों ओर लगा दे तथा प्रत्येक दल में 'र वौ ह' इन वर्णों को लिखकर, मध्य में सानस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे बाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। देवदत्तः के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। पूर्वोक्त यन्त्र की विधि से पूजन कर भूमि खोदकर, उसमें यन्त्र को अधोमुख दबा दे इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु चाहे देश में हो, अथवा विदेश में भ्रमण कर रहा हो, तो भी वह सातवें दिन उच्चाटन को प्राप्त हो जाता हैं।



सर्वजनोच्चाटन यन्त्रम्

कौवा और उल्लू के रक्त से भोजपत्र के ऊपर गोलाकार यन्त्र खींचकर उसके ऊपर पूर्वादि चारों दिशाओं में दो रेखाओं युक्त चार दल कमल खींचे तथा प्रत्येक दल में विसर्गयुक्त यकार वर्ण को स्थापित कर, मध्य भाग में सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा उसे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



यन्त्र का पूर्वोक्त विधि से पूजन एवं ध्यान कर अन्त में यन्त्र के टुकड़े-टुकड़े कर, अन्तिम दिन जूठे भात में मिला कर कोओं को खिला दे। इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य व्यक्ति नगर और ग्राम की तो बात ही क्या है, उस दिशा को भी छोड़कर चला जाता है।

सद्य उच्चाटन यन्त्रम्

विष, तालक, गोदन्ती हरताल और चीता—इन सब वस्तुओं को एकत्र कर कौए के पंख की कलम से शमशान-वस्त्र के ऊपर कौए की

एक मूर्ति बना कर, उसके उदर में साध्य व्यक्ति के सानुस्वार नाम को लिखे। इस विधि से जो यन्त्र बनेगा, उसे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



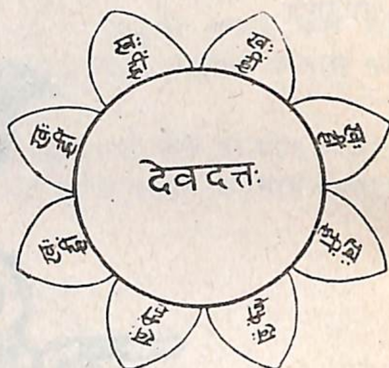
इस यन्त्र को, पूर्वोक्त विधि से पूजन करने के उपरान्त, मिलावे के वृक्ष के दायें भाग में, रात्रि के समय, नियम में तत्पर होकर अधोमुख टाँग दे।

इस क्रिया के करने से साध्य व्यक्ति का तीसरे दिन उस स्थान से उच्चाटन होगा तथा जब तक वह प्रतिमा टँगी रहेगी, तब तक वह उद्विग्न बना रहेगा। न उसे घर अच्छा लगेगा और न कहीं अन्य कहीं सुख प्राप्त होगा। विदेश जाने पर भी उसे सुख प्राप्त नहीं होगा और वह सन्देहपूर्वक जीवित रहेगा।

स्त्रियाँ उच्चाटन यन्त्रम्

गधे के रुधिर से काठ के टुकड़े पर कौए के पंख की कलम से एक गोलाकार चक्र खींचकर उसे आठ दल कमल से सुशोभित करे, तदुपरान्त विसर्गान्त 'ख' कार एवं 'ह्रीं' बीज को प्रत्येक दल में लिखकर, चक्र के मध्य में सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

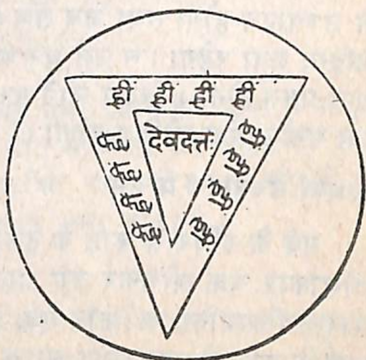
इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



यन्त्र लेखन के उपरान्त पूर्वोक्त विधि से पूजन करे। तदुपरान्त भूमि खोदकर उसमें यन्त्र को अधोमुख दबा दे तो तीसरे दिन शत्रु का उच्चाटन होगा और वह वायु से उड़ाये गए पत्ते की भाँति गमन करेगा। यह यन्त्र स्त्रियों का उच्चाटन करने के लिए अत्युत्तम है।

त्रैलोक्य-उच्चाटन यंत्रम्

काले मुर्गे के रक्त से भोजपत्र के ऊपर एक बड़ा त्रिकोण यन्त्र खींचकर उसके भीतर एक छोटा त्रिकोण यन्त्र और खींचे। तदुपरान्त दोनों को गोलाकार चक्र से गर्भित कर दे। ह्रस्व त्रिकोण के भीतर साध्य व्यक्ति का नाम तथा दीर्घ त्रिकोण की प्रत्येक रेखा के नीचे चार-चार 'ह्रीं' बीजों को लिखे।



इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

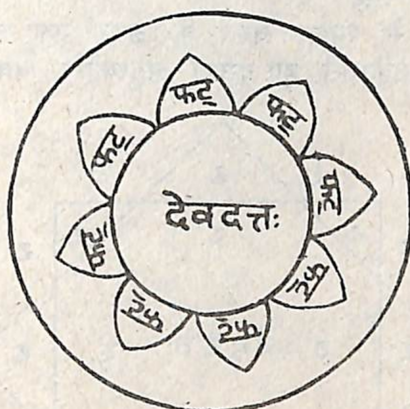
पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का पूजन करके कुत्ते के गले में बाँध दे। वह कुत्ता जहाँ-जहाँ जायेगा, वहीं-वहीं साध्य व्यक्ति भी

उच्चाटन को प्राप्त होकर जायगा। यह यन्त्र त्रिलोकी का उच्चाटन करने वाला एवं अत्यन्त फलदायक है।

परमोच्चाटन यन्त्रम्

हल्दी के वृक्ष के रस से भोजपत्र के ऊपर एक ह्रस्व (छोटा) गोलाकार चक्र खींच, उसके बहिर्भाग में अष्टदल कमल लगाकर एक और गोलाकार चक्र खींचे, ताकि सभी दल उसके गर्भगात हो जायें। फिर प्रत्येक दल में 'फट्' बीज को लिखकर ह्रस्व गोलाकार चक्र के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



यन्त्र-लेखन के उपरान्त पूर्वोक्त विधि से पूजन करके, यन्त्र का चूर्ण करके किसी खाने-पीने की वस्तु के माध्यम से साध्य व्यक्ति के उदर में पहुँचा दे। इस विधि से परम उच्चाटन होता है।

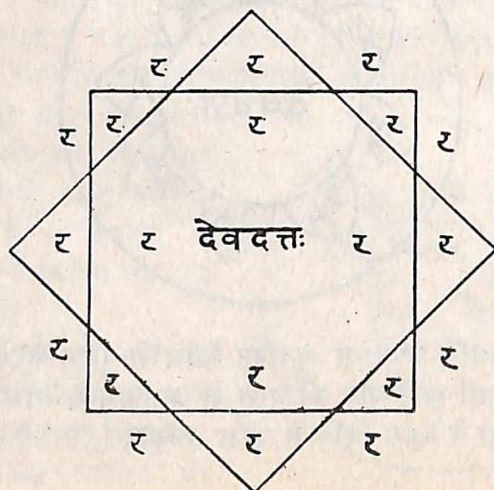
८

शान्तीकरण यन्त्र

इस परिच्छेद में ज्वर-नाशन, बालरक्षक, बन्ध्या गर्भधारण, मृतवत्सादोष-शान्ति, भूत त्तासन, सर्पादिभयनाशन, दुष्टजीवमोचन आदि शान्ति कर्म के यन्त्रों का वर्णन किया गया है। अभिलषित कार्य के लिए उचित यंत्र का प्रयोग करने से मनोकामना की पूर्ति होती है।

बालज्वर-नाशन यन्त्रम्

धतूरे के रस से श्मशान-वस्त्र के ऊपर एक चतुष्कोण चक्र खींच कर, कोण निकालते हुए दूसरा चतुष्कोण चक्र उसके ऊपर



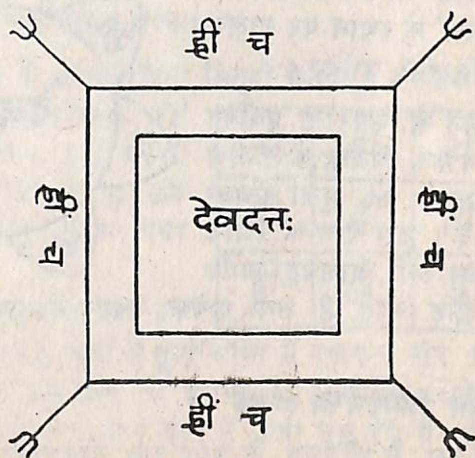
खींचना चाहिए तथा साध्य व्यक्ति के नाम को यन्त्र के मध्य भाग में लिखकर चार 'र'कार के वर्णों से वेष्टित कर देना चाहिए। तदुपरान्त प्रत्येक कोष्ठक में तथा उसके बाहर एक-एक 'र'कार वर्ण लिखना चाहिए। इस तरह २० 'र'कार लिखने चाहिए।

इस भाँति यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे पृ० ११४ पर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र-लेखन के उपरान्त मनोहर बलि, पुष्प आदि से पूजन कर, उपवास-युक्त हो, यन्त्र को भूमि में गाढ़ देना चाहिए। यह कार्य कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि को दिन के समय करना उचित है। इस यन्त्र के प्रभाव से बालकों का ज्वर दूर हो जाता है। बालकों के ज्वर-शमन के अतिरिक्त अन्य लोगों के ज्वर पर भी यह यन्त्र लाभदायक है।

बालानां ज्वरादिस्तम्भन 'ज्वलन रक्षा यन्त्रम्'

धतूरे के रस से भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं वाले चतुष्कोण यन्त्र को खींचकर प्रत्येक कोण में त्रिशूल लिखे तथा चारों दिशाओं में



'ह्रीं चं' इन बीजों को लिखकर, बीच में सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे ऊपर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र-लेखन के उपरान्त पूर्वोक्त यन्त्र का विधि से पूजनाकर, त्रिलोह के ताबीज में भरकर बालक के कण्ठ में बाँध दे। इस यन्त्र के प्रभाव से बालकों के उपसर्गज रोग, शारीरिक रोग, मानसिक रोग, ईर्ष्या, क्रोध, दाँतों के रोग, स्तन रोग तथा ज्वर आदि दूर हो जाते हैं।

बालरक्षाकर यन्त्रम्

धतूरे के रस से भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर उसमें अष्टदल लगाए तथा प्रत्येक दल में विसर्गान्त सकार को लिखकर बीच में साध्य व्यक्ति (बालक) के नाम को लिखे।



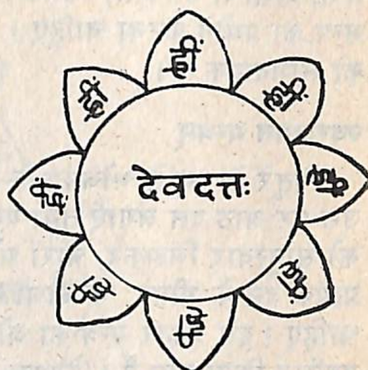
इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दांईं ओर प्रदर्शित किया गया है 'देवदत्तः' के स्थान पर बालक के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखन के उपरान्त पूर्वोक्त विधि से पूजन कर, त्रिलोह के ताबीज में रखकर बालक की भुजा अथवा कंठ में बाँध दे। इस यन्त्र के प्रभाव से डाकिनी, शाकिनी, बालग्रह आदि बालक को छोड़ जाते हैं तथा प्रत्येक उपद्रव से उसकी रक्षा हो जाती है।

बालदोषनाशन 'त्रिपुरभैरव यन्त्रम्'

धतूरे के रस से भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर

उसके बाहर आठ दल लगाकर, प्रत्येक दल में 'ह्रीं' बीज तथा मध्य भाग में साध्य व्यक्ति (बालक) के नाम को लिखे।



इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप होगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर बालक का नाम लिखना चाहिए।

पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का पूजन करके ताबीज में भरकर बालक के कण्ठ में बाँध देना चाहिए।

यह त्रिपुरभैरव नामक यन्त्र बालकों के भूत, वेताल, शाकिनी, डाकिनी आदि व्याधियों तथा मृगी, अपस्मार आदि रोगों को दूर करने वाला है।

यदि इस यन्त्र को स्वस्थ बालक के गले में बाँध दिया जाय, तो वह इन व्याधियों से बालक की रक्षा करता है अर्थात् इन व्याधियों को नहीं होने देता।

भूतत्रासन 'डाकिनीत्रासन यन्त्रम्

नये खप्पर के ऊपर खड़िया मिट्टी से बारह कोष्ठक के यन्त्र को लिखकर प्रत्येक कोष्ठक में 'ह्रीं' बीज को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है।

ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

लेखन के उपरान्त यन्त्र की पुष्पादि से पूजाकर, धूलि से पूर्ण अग्नि में रखकर, खैर की अग्नि से प्रज्वलित करे। इस यन्त्र के प्रभाव से भूतादिक रोते-काँपते हुए बालकादि को छोड़कर भाग जाते हैं तथा उस देश में भी वास नहीं

करते। जिस समय कोई बालक, वृद्ध अथवा युवा स्त्री-पुरुष भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि से ग्रस्त हो, उस समय इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। यह यन्त्र सभी आयु के स्त्री-पुरुषों को लाभदायक है।

ज्वरशमन यन्त्रम्

धतूरे के रस से भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर, उस पर आठ दल लगाए तथा यन्त्र के मध्य में साध्य व्यक्ति के नाम को सानुस्वार लिखकर, चारों ओर विसर्गान्त चार वकारों को लिखे। प्रत्येक दल के भीतर 'नं' बीजों को एवं बाहर ह्रीं बीजों को लिखना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे दायीं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

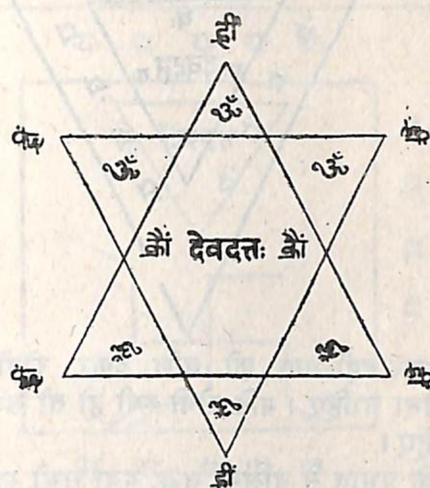


यन्त्र को लिखने के उपरान्त पूर्वोक्त विधि से पूजन कर ठंडे पानी में डाल दे। इस यन्त्र के प्रभाव से द्वन्द्वज ज्वर का रोगी तीन दिन में रोग-मुक्त हो जाता है। यह समय बाँधकर आने वाले ज्वरों को शान्त करने के लिए सर्वोत्तम है। यदि इस यन्त्र को हाथ में बाँध लिया जाय तो भूत के कारण उत्पन्न हुआ ज्वर तुरन्त दूर हो जाता है।

एकान्तर ज्वर-शमन यन्त्रम्

हल्दी के रस से पान के ऊपर बबूल के काँटे से षट्कोण यन्त्र को लिखकर, प्रत्येक कोण के भीतर ॐकार लिखकर, ऊपर के तीनों कोनों में 'ह्रीं' बीज को लिखकर, बीच में 'क्रौं' बीज से पुटित साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



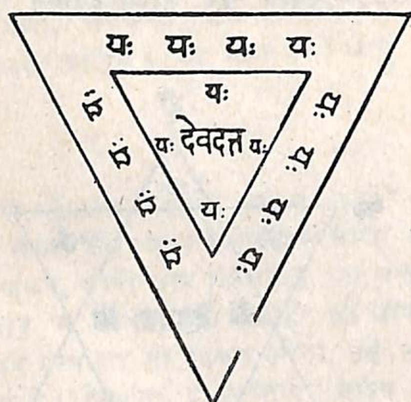
यन्त्र-निर्मित ताम्बूल का विधिपूर्वक पूजन कर, रोगी को खिला देना चाहिए।

यन्त्र के प्रभाव से रोगी को आने वाला एकान्तर ज्वर अवश्यमेव नष्ट हो जाता है। एकान्तर ज्वर को लोक-भाषा में 'इकतरा बुखार' भी कहते हैं। यह 'ज्वरनाशक यन्त्र' अत्यन्त प्रभावकारी है।

तृतीयक ज्वर नाशन यन्त्रम्

धतूरे के रस से भोजपत्र के ऊपर त्रिकोण यन्त्र को खींचकर उसके भीतर एक अन्य त्रिकोण खींचे। तदुपरान्त उसके मध्य भाग में 'य'कार पुटित साध्य नाम को लिखकर, प्रत्येक रेखा के नीचे चार-चार यकार बीज लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे

नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त:' के स्थान पर साध्य (रोगी) व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



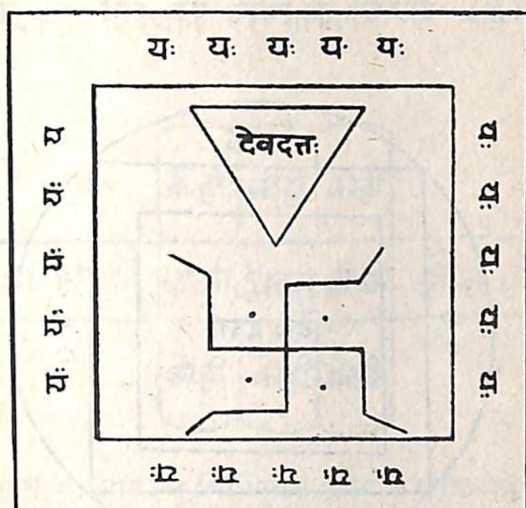
यन्त्र लिखकर दही-भात की बलि देकर रोगी पुरुष की दाईं भुजा में बाँध देना चाहिए। यदि रोगी स्त्री हो तो उसकी बाईं भुजा में बाँधना चाहिए।

इस यन्त्र के प्रभाव से बालक, वृद्ध, युवा सभी स्त्री-पुरुष तृतीयक ज्वर, जिसे लोकभाषा में 'तिजारी बुखार' कहा जाता है, से मुक्त हो जाते हैं। अन्य प्रकार के ज्वरों पर भी यह यन्त्र लाभ पहुँचाता है, परन्तु तृतीयक ज्वर के लिए मुख्य रूप से लाभदायक है।

भूतज तृतीयक ज्वरनाशन यन्त्रम्

हल्दी के रस अथवा धतूरे के रस से एक बड़े भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र खींचकर, उसके भीतर ऊपर की ओर एक त्रिकोण तथा नीचे की ओर एक स्वस्तिक लिखे। तदुपरान्त इन सबके ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र से वेष्टित करे। फिर त्रिकोण के भीतर साध्य व्यक्ति (रोगी) के नाम को लिखे तथा दूसरे चतुष्कोण के भीतर विसर्गान्त तीन या पाँच—आदि विषम 'य'कार वर्णों को पूर्वादि चारों दिशाओं में लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



यन्त्र-लेखन के उपरान्त विधिपूर्वक पूजन करे त्रिलोह के ताबीज में भरकर ज्वर के समय पुरुष को दायें तथा स्त्री के बायें हाथ में बाँधना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से भूतादि के उपद्रवों के कारण तीसरे दिन आने वाला ज्वर अवश्य दूर हो जाता है।

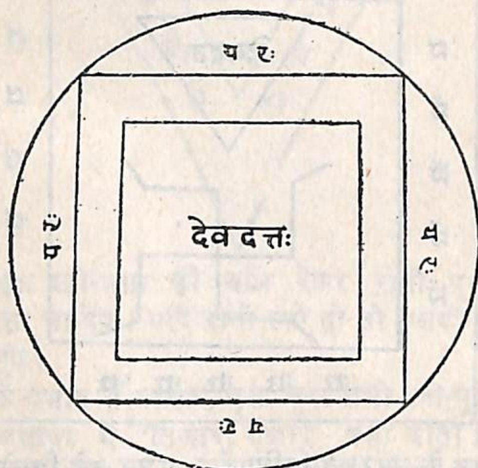
यदि ज्वर किसी रोग के कारण हो, तो इस यन्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इस यन्त्र से रोग ज्वर को लाभ नहीं पहुँचता। केवल भूत जज्वर के लिए ही यह उपयोगी है।

गर्भक रक्ष यंत्रम्

हाथी के मद से भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र को खींचकर उसकी चारों दिशाओं में कर्णिका लगाये।

फिर प्रत्येक वर्णिका में 'यः रः'—इन बीजों को लिखकर मध्य में साध्य व्यक्ति अर्थात् गर्भिणी स्त्री के नाम को लिखे।

इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर स्त्री का नाम लिखना चाहिए।



इस यंत्र का विधिपूर्वक पूजन कर चाँदी के ताबीज में रखकर गर्भिणी स्त्री के कण्ठ में बाँध देना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से सभी छल-छिद्र नष्ट होकर सुखपूर्वक प्रसव होता है तथा गर्भ की रक्षा होती है।

सुख-प्रसवकर यन्त्रम्

हाथी के मद से भोजपत्र के ऊपर पटवत् चतुष्कोण यंत्र को खींचकर चार ऊर्ध्व रेखाओं से युक्त कर, सभी रेखाओं को ऊपर से संयुक्त कर दे तथा दोनों ओर दो कर्णिकाएँ लिखें। तदुपरान्त 'ॐ ह्रीं'—इन दो बीजों से पुटित साध्य के नाम को बीच में लिखे तथा

प्रत्येक कोष्ठ में 'क्रों, ह्रीं'—इन बीजों को लिखे। दाईं-बाईं ओर की कर्णिकाओं में 'ह्रीं क्षं ह्रीं'—इन बीजों को लिखे।

इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर गर्भिणी स्त्री का नाम लिखना चाहिए।

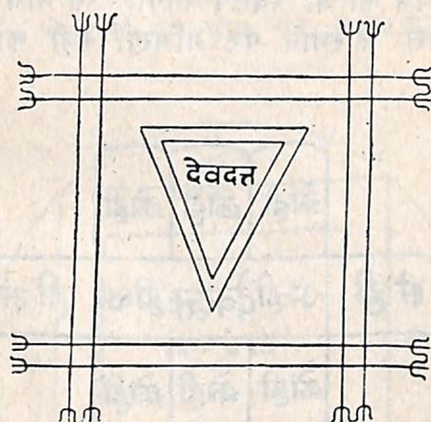


यंत्र-लेखन के उपरान्त विधिपूर्वक पूजन कर, त्रिलोह के ताबीज में बन्द कर, गर्भिणी स्त्री के गले में बाँध देना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से गर्भशूल, शिरःशूल, भूत-दोष आदि सभी उपद्रव शांत होकर सुख पूर्वक प्रसव होता है।

वन्ध्यागर्भधारण यन्त्रम्

गोरोचन, कुंकुम, कपूर और कस्तूरी द्वारा चमेली की लेखनी से भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं वाले त्रिकोण यंत्र को खींचकर उसके बहिर्भाग में दो रेखा युक्त चतुष्कोण यंत्र को खींचे तथा प्रत्येक रेखा में त्रिशूल बना दे। फिर त्रिकोण के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखकर, श्वेत तथा नील कमल, मालती, जुही, केतकी, बकुल (लाल रंग का एवं बिना गंध का फूल नहीं लेना चाहिए) ऋतुफल, कपूर युक्त तांबूल, धूप, दीप, गंध, श्वेत वस्त्र, नैवेद्य आदि से यंत्र का पूजन

करना चाहिए। यंत्र के स्वरूप को नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

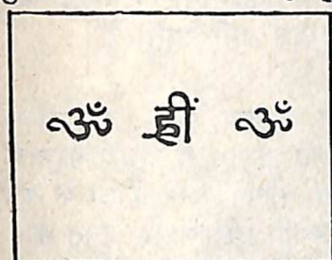


पूजन के उपरान्त यंत्र को त्रिलोह के ताबीज में रखकर, भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से वंध्या स्त्री गर्भवती होती है तथा अनेक प्रकार के सौभाग्य को प्राप्त कर, देवताओं की भाँति सुखी रहती है। जिस पुरुष की स्त्री वंध्या हो, वह पुरुष भी इस यंत्र को धारण कर सकता है। यदि पति-पत्नी दोनों ही इस यंत्र को धारण करें तो वंध्यात्व को दूर करने में विशेष लाभ पहुँचता है। यदि यंत्र को भुजा में धारण करना हो तो स्त्री की बाईं भुजा में और पुरुष को दाईं भुजा में धारण करना चाहिए। यह यंत्र स्त्री पुरुषों के दौर्भाग्य को नष्ट करने वाला प्रसिद्ध है।

बन्ध्या-गर्भधारण द्वितीय यन्त्रम्

भोजपत्र अथवा ताल-पत्र पर पूर्वोक्त द्रव्यों से चतुष्कोण यंत्र लिखे। उसके ऊपरी भाग में बाईं ओर 'हु' और दाईं ओर 'फट्'

'स्वाहा' तथा नीचे के भाग में बाईं ओर 'वषट्' बीज लिखे मध्य में 'ॐ ह्रीं ॐ' लिखे।



इस विधि से यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाईं ओर प्रदर्शित किया गया है।

यंत्र-लेखन के उपरान्त विधि पूर्वक रुद्र तथा रुद्रकाली का पूजन करे एवं यंत्र को कंठ, कमर अथवा बाईं भुजा में धारण करे।

यह यंत्र केवल वंध्या स्त्री को ही धारण करना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से वंध्या स्त्री गर्भ धारण कर, पुत्र को प्राप्त करती है।

मृतवत्सा दोष शान्ति यंत्रम्

गोरोचन अथवा कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यंत्र बनाये तथा उसमें पाँच सीधी और दो तिरछी रेखाएँ खींचे, ताकि १८ कोष्ठ बन जायँ। फिर प्रथम पंक्ति के कोष्ठों में क्रमशः 'ॐ ह्रीं क्लीं, स्त्रीं, हुँ, फट्' तथा दूसरी पंक्ति के कोष्ठों में क्रमशः 'रक्ष, गर्भ, साध्य स्त्री का नाम, गर्भ, रक्ष, रक्ष' तथा तीसरी पंक्ति में 'स्वा, हा, क्लीं, फट्, हुँ' इन बीजों को लिखे।

इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। देवदत्तः के स्थान पर साध्य स्त्री का नाम लिखना चाहिए।

ॐ	ह्रीं	क्लीं	स्त्रीं	हुँ	फट्
रक्ष	गर्भ	देवदत्त	गर्भ	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	श्रीं	क्लीं	फट्	हुँ

इस यंत्र का विधिपूर्वक पूजन कर कंठ अथवा बायीं भुजा में धारण करने से मृतवत्सा दोष की शांति होती है। अर्थात् जिस स्त्री की सन्तानें हो-हो कर मर जाती हों, वह स्त्री गर्भावस्था में इस यंत्र को धारण करती है, तो उसकी संतान जीवित बनी रहती है।

महारक्षाकारक 'शान्तिपौष्टिक यन्त्रम्

शुभ दिन तथा शुभ तिथि में गोरोचन, कुंकुम, कपूर, कस्तूरी—इन सब वस्तुओं को एकत्र कर, चमेली की कलम से कांस्य पात्र के ऊपर आठ लम्बी तथा आठ चौड़ी रेखाएँ खींचकर ४९ कोठों के यंत्र का निर्माण करे। फिर प्रत्येक रेखा के मुख को त्रिशूल से युक्त कर, पूर्व तथा पश्चिम भाग सात-सात 'क्रौं' बीज लिखकर, ईशान कोण से लेकर प्रत्येक रेखा में सानुस्वार अकारादि स्वर से युक्त व्यंजन-वर्णों को क्रमानुसार भर दे। इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।

क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ॠं
ढं	भं	मं	यं	रं	ढं	लृं
चं	बं	सं	हं	लं	णं	ॡं
ङं	फं	षं	शं	वं	तं	एं
घं	पं	नं	धं	दं	थं	ऐं
गं	खं	कं	अः	अ	औं	ओं
क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं

लेखनोपरान्त श्वेत कमल, मालती, जुही, केतकी, चमेली और बकुल के फूल (लाल रंग का तथा बिना गंध का कोई फूल न हो), ऋतुफल, कपूर-युक्त तांबूल, धूप, दीप, गंध, श्वेत वस्त्र, नैवेद्य आदि से यंत्र का पूजन कर, ब्राह्मण द्वारा सप्तशती का जप कराके, यथेष्ट पायस (खीर) तथा घृत द्वारा तीन दिन तक ब्राह्मणों को भोजन कराये एवं पृथ्वी पर शयन करे। फिर भोजन में से गंध रोचन को निकालकर, गुटिका बना, त्रिलोह के ताबीज में बन्द कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण करे। शेष भाग को पानी में मिलाकर पीवे। इस प्रकार इस यंत्र के प्रभाव से शत्रु को क्षोभ उत्पन्न होता है। यह उपद्रव, दारिद्रय, क्लेश, दौर्भाग्य तथा दूसरे के किए हुए अभिचार आदि के दोषों का पूर्णतः शमन करता है। यह यंत्र देवताओं को भी दुर्लभ तथा शीघ्र फलदायक है।

सर्वतोभद्र यंत्रम्

भोजपत्र के ऊपर कस्तूरी, लाल चंदन तथा हिम—इन सब वस्तुओं के योग से सोलह कोठे वाले एक यंत्र को खींचे। फिर प्रत्येक कोष्ठ में 'अ' आदि सोलह स्वरों को लिखे।

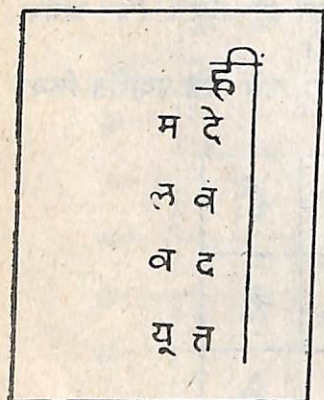
इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

लेखनोपरान्त गंध, धूप, दीप आदि से यंत्र का पूजन कर, धन, वस्त्र आदि से संतुष्ट कर ब्राह्मणों को भोजन करावे। फिर यत्नपूर्वक त्रिलोह के ताबीज में बन्द कर, पुरुष दायें हाथ में और स्त्री कण्ठ में इस यंत्र को धारण करे। इस यंत्र के प्रभाव से सौभाग्य की वृद्धि एवं सब प्रकार के भय का नाश होता है। इस यंत्र को धारण करने वाला व्यक्ति सब लोगों को प्रिय होता है। यह सब की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा सब प्रकार के अरिष्टोंको शांत करने वाला है।

सर्पादि-भयनाशक यन्त्रम्

गोरोचन, कुंकुम, कपूर और कस्तूरी इन सब वस्तुओं से चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर चतुष्कोण यंत्र को लिखकर 'ह्रीं' बीज की मात्रा के भीतर साध्य व्यक्ति के नाम को लिखने तथा ह्रीं बीज के पाद में मकार, लकार, वकार, यकार एवं ऊकार को भी मिला दे।



इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा उसे दायीं ओर प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

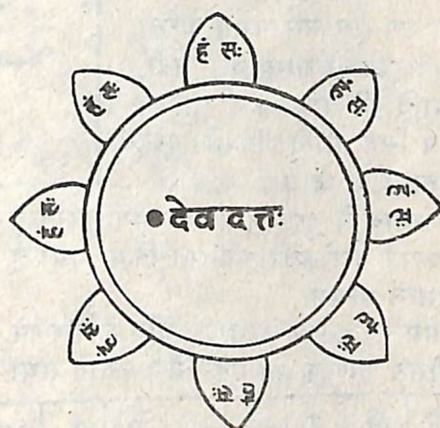
लेखनोपरान्त यंत्र का विधिपूर्वक पूजन कर, त्रिलोह के ताबीज में रखकर भुजा अथवा गले में धारण करे तो सर्प, व्याघ्र, चोर आदि के भय से मुक्ति प्राप्त हो। इस यंत्र के प्रभाव से अनेक प्रकार के उपद्रव शांत हो जाते हैं।

सर्वस्तम्भनं यंत्रम्

धतूरे के रस से बड़े भोजपत्र पर दो रेखा वाले गोलाकार चक्र का लिखे। फिर उसके ऊपर अष्टदल कमल बनाये। तदुपरान्त प्रत्येक

दल ने 'हं सः' इन बीजों को लिखकर, यंत्र के मध्य भाग में सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



पूर्वोक्त विधि से पूजन करने के पश्चात् त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके इस यंत्र को भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से सर्पादिक स्तम्भन हो जाता है। ऐसे यंत्रधारी पुरुष को देखते ही सर्पादि भाग जाते हैं और यदि प्रमादवश उनके ऊपर पाँव पड़ भी जाय तो काटते नहीं हैं। यदि काट भी लें तो उनका विष नहीं चढ़ता है। यह यंत्र सर्पादि से रक्षा के लिए सर्वोत्तम है। सर्पों का स्तम्भन करने के लिए इसे गरुड़जी ने प्रकाशित किया है। जिस स्थान पर सर्प अधिक हों, वहाँ रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह यंत्र धारण किए रहना चाहिए। इससे सर्पों के काटने का भय दूर हो जाता है।

दुष्ट सत्त्व प्रमोचन यन्त्रम्

अपने थूक से बायें हाथ के ऊपर चतुष्कोण खींचकर, मध्यभाग में 'ह्रीं' बीज को लिखे । तदुपरान्त अनामिका उँगली के रक्त से पूर्वादि चारों दिशाओं में सिंचन करे तो उसी क्षण साध्य व्यक्ति हिंस्र जीवों के भय से मुक्त होकर, सुखी हो जाता है।



इस यंत्र का उपयोग उस समय करना चाहिए जब मनुष्य किसी समय वन, नदी, झाड़ी, पर्वत आदि की यात्रा कर रहा हो और उस समय सिंह आदि किसी दुष्ट जीव का भय उत्पन्न हो जाय।

इस यंत्र के प्रभाव से दुष्ट जीवों का भय तुरन्त दूर हो जाता है। यंत्र का स्वरूप ऊपर बाईं ओर प्रदर्शित किया गया है।

द्यूतविजयकर प्रसन्न यन्त्रम्

रात्रि के समय एरंड-पत्र के ऊपर कौए के पंख की कलम से काली स्याही द्वारा चौंसठ कोष्ठक का एक यंत्र बनावे तथा विलोम से 'मै'

मे	खै	र	क्तं	द	ये	रु	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	नः
द्ध	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	षं
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्रं	मं	य	वीं	दा	द्ध
नः	च	नी	द	त	ज	जि	क
पा	रु	ये	द	क्तं	र	खै	मे

खै, र, क्तं, द, ये, रु, पा, क, जि, ज, ते, द, नी, च, नः, छ, दा, वीं, य, मं त्रं, ते, ष, हे, ष्टि, वा, मो, क्षि, ए, पा, त्रं-इन ३२ बीजों को लिखे।

इस विधि से बने यंत्र के स्वरूप को पृ० १३० पर प्रदर्शित किया गया है।

जो व्यक्ति इस यंत्र को धारण कर जुए में जायगा उसे अवश्य ही विजय प्राप्त होगी; अर्थात् इस यंत्र को धारण कर जुआ खेलने वाला व्यक्ति जीतता है। यह 'प्रसन्न यंत्र' नामक यंत्र जुआ खेलने वालों को प्रसन्नता प्रदान करता है।

यंत्र धारण करने के लिए इसे कलावे में लपेट कर दाईं भुजा में बाँध लेना चाहिए।

१

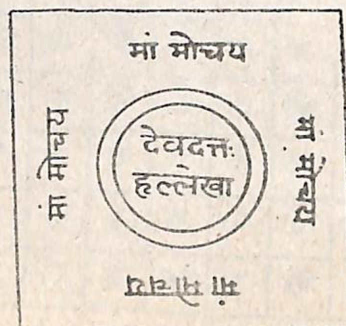
मोक्षकरण यन्त्र

इस परिच्छेद में सामान्य एवं सांसारिक बन्धनों से छुटकारा दिलाने वाले यन्त्रों का वर्णन किया गया है। इच्छित कार्य के लिए उपयुक्त यंत्र का प्रयोग लाभदायक होता है।

बन्दी-मोचन यन्त्रम्

कपूर कुंकुम को एकत्र कर एक बड़े भोजपत्र के ऊपर चतुष्कोण खींच कर उसके बीच में दो रेखा मिश्रित एक गोलाकार चक्र लिखकर उसमें विसर्गान्त साध्य व्यक्ति के नाम को लिखकर नीचे 'हृल्लेखा' लिखे। तदुपरान्त गोलाकार के बहिर्भाग में, पूर्वादि चारों दिशाओं में 'मां मोचय' वाक्य को लिखे।

इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

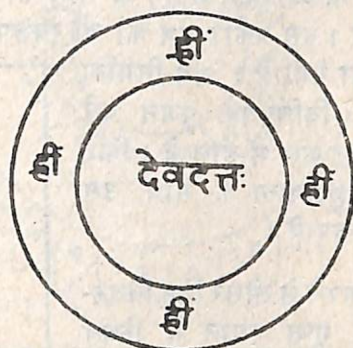


लेखनोपरान्त यंत्र का गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, त्रिलोह के तावीज में भर कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण करने से बन्दी व्यक्ति शीघ्र ही बन्धन से छूट जाता है। जो व्यक्ति इस यंत्र को हर समय धारण किए रहते हैं, उनका शरीर स्वस्थ रहता है तथा उन्हें कभी बन्धन (कैद) में नहीं पड़ना होता। इस यंत्र का उपयोग उस समय अत्यधिक लाभदायक होता है, जब किसी व्यक्ति को किसी ने रोक लिया हो और उसके निकलने का कोई उपाय न हो। यह यन्त्र तत्काल मुक्ति देने के लिए प्रसिद्ध है।

बन्दी-मोक्षण यन्त्रम्

पुए के ऊपर घी से एक गोलाकार चक्र लिखकर, उसके बहिर्भाग में एक और चक्र लिखे। फिर पहले चक्र के भीतर साध्य व्यक्ति का नाम तथा दूसरे चक्र के भीतर पूर्वादि चारों भागों में 'ह्रीं' बीज लिखे।

इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति (बन्दी) का नाम लिखना चाहिए।



यन्त्र-लेखनोपरान्त गंध-पुष्पादि से पूजन कर, पुए को साध्य व्यक्ति को खिला देना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से साध्य व्यक्ति, अर्थात् बन्दी, तीन अथवा सात दिन के भीतर ही बन्धन से छूट जाता है।

बन्दी को यंत्र-युक्त पुआ खिलाने के बाद सत्ताईस दिन तक १०८ बार निम्नलिखित मन्त्र का जप करते हुए, गुग्गुल वटिका से आहुति देता हुआ हवन करे तो बन्दी का मोक्ष अवश्य हो जाता है, अर्थात् वह कारागार से छूट जाता है।

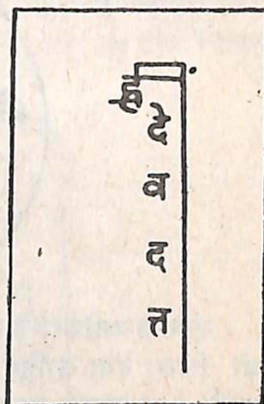
मन्त्र यह है—

'ऐं, ह्रीं, श्रीं, बन्दी देव्यै अमुकस्य बन्धमोक्षं कुरु कुरु मातर्नमः स्वाहा।'

'अमुकस्य' के स्थान पर बन्दी व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस प्रकार यंत्र तथा मंत्र की संयुक्त क्रिया करने से बन्दी का मोक्ष अवश्य हो जाता है। यह कल्प-विहित सिद्ध मंत्र अत्यन्त लाभदायक है।

बन्धमोक्षकर यन्त्रम्

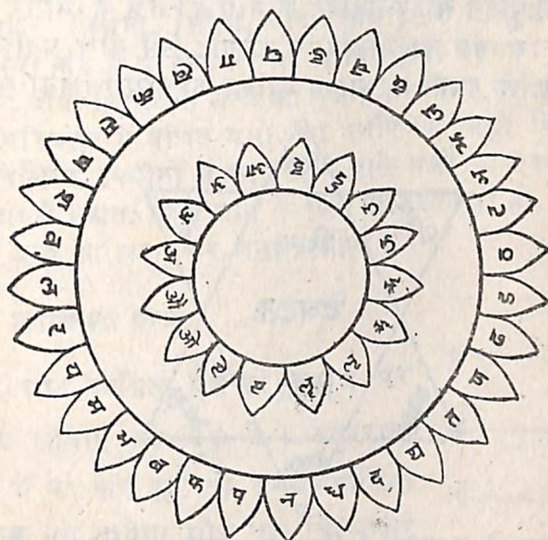
भोजपत्र के ऊपर कुंकुम से चतुष्कोण यंत्र को लिखे, फिर 'ह्रीं' बीज के मध्य साध्य व्यक्ति (बन्दी) के नाम को लिखकर यंत्र के भीतर स्थापित करे। इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाईं ओर प्रदर्शित किया गया है। यंत्र-निर्माण के पश्चात् उसका विधिपूर्वक पूजन करे तथा किसी बहते हुए जल में डाल दे। फिर उसी पानी से पके हुए अन्न के साथ उस व्यक्ति को भोजन कराये।



इस क्रिया के करने से तीसरे दिन विवरस्थ अथवा किसी गुप्त स्थान में स्थित व्यक्ति भी बन्धन-मुक्त हो जाता है। इस यंत्र के प्रभाव से कालकोठरी आदि में बन्द व्यक्ति भी छुटकारा पा जाता है।

निगड-मोचन यन्त्रम्

गोरोचन, लाल चंदन, कपूर, कस्तूरी और कुंकुम—इन सब वस्तुओं को एकत्र कर कांसी के पात्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींच कर उसके मध्य भाग में 'ह्रीं' बीज को स्थापित करे। फिर उस गोलाकार के बाह्यभाग में षोडशदलों लिखकर अकारादि सोलह स्वरों को क्रमानुसार प्रत्येक कोष्ठ में लिखे। फिर एक बड़े गोलाकार से उक्त षोडशदलों को वेष्टित करदे तथा उस बड़े गोलाकार के बाह्यभाग में बत्तीस दल स्थापित करे। इन बत्तीस दलों में क्रमानुसार ककार से लेकर सकार तक बत्तीस व्यंजनों को लिखे। नीचे यंत्र का स्वरूप है।



यंत्र लेखन के उपरान्त महापूजन कर, धूप, दीप, नैवेद्य तथा दीपदान की क्रियाएं करे तथा 'ॐ नमश्चण्डिकायै स्वाहा'—इस मंत्र का १०८ बार जाप करे। प्रतिदिन खीर, मधु, खाद्य तथा विशेषकर गुग्गल की बलि दे तथा ढक कर दिया करे। प्रतिदिन खोलने से पूर्व

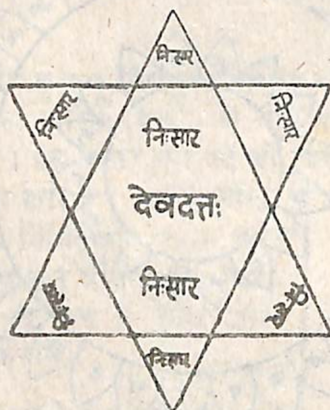
प्रणाम करे तथा गंध, धूप आदि देकर भोजन करे। इस यंत्र के आधे भाग को पीने के लिए दे तथा आधे भाग की गुटिका बनाये। इस गुटिका को धारण करने से जन्म-कैदी भी बन्धन-मुक्त हो जाता है।

यंत्र के स्वरूप को नीचे प्रदर्शित किया गया है। इसमें किसी का नाम लिखने की आवश्यकता नहीं है। इस यंत्रराज के प्रताप से सर्वाङ्गबन्दी भी बन्धन से छूट जाता है।

भवमोचन यन्त्रम्

गोरोचन तथा लाल चन्दन को मिलाकर भोजपत्र के ऊपर एक षट्कोण यंत्र खींचे तथा प्रत्येक कोण में 'निःसार' पद को लिखे एवं इसी शब्द से पुटित साध्य व्यक्ति के नाम को यंत्र के भीतर लिखे।

इस प्रकार यंत्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया है। 'देवदत्तः' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



यंत्र-लेखन के पश्चात् विधिपूर्वक पूजन कर त्रिलोह के तावीज में मस्तक के ऊपर धारण करे तो मनुष्य विरक्त होकर, ज्ञान-मार्ग का अनुसरण करता हुआ, पुत्रादि के मोह से छूटकर पर्वतादि श्रेष्ठ स्थानों में जाकर निवास करता है तथा सांसारिक माया-मोह के बन्धनों से छूटकर अन्त में भव-मुक्त हो जाता है।

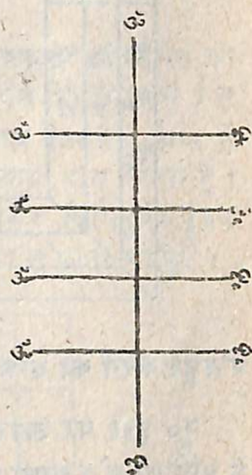
१०

स्फुट यन्त्र

इस परिच्छेद में विभिन्न ग्रन्थों से संकलित विविध यंत्रों का वर्णन किया जायगा। इनमें से कुछ यन्त्रों के साथ लेखन एवं धारण-विधि का वर्णन किया गया है और कुछ के साथ इन बातों का वर्णन नहीं है। वहाँ पर यन्त्रों को चन्दन, केशर, कस्तूरी आदि से भोजपत्र पर लिखकर त्रिलोह (सोना, चाँदी, ताँबा) के ताबीज में भरकर भुजा अथवा कंठ में धारण करना चाहिए तथा धारण करने से पूर्व पुष्प, धूप, दीप, गंधादि से यन्त्र का पूजन कर लेना चाहिए।

इस परिच्छेद में वर्णित यंत्रों का वर्गीकरण नहीं किया गया है अर्थात् विभिन्न उपयोगों में काम आने वाले यंत्रों का एक साथ वर्णन किया गया है। अतः जिस कार्य के लिए आवश्यकता हो, उसके लिए उपयोगी यन्त्र का चयन कर लेना चाहिए।

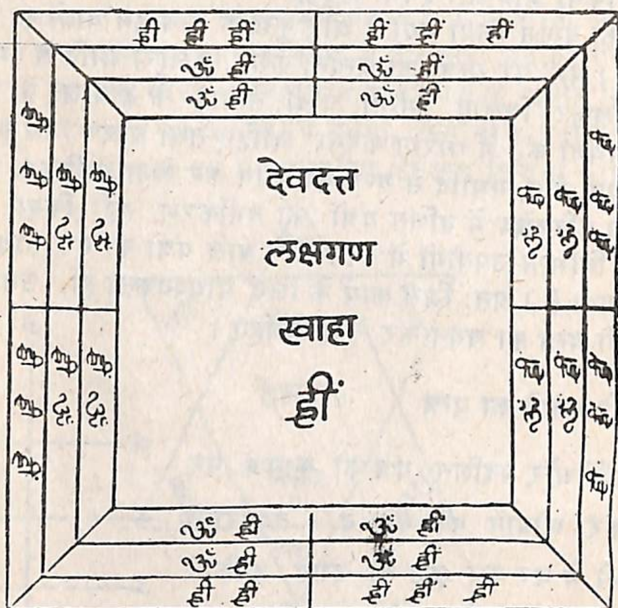
डाकिनी भगाने का यन्त्र



दाईं ओर प्रदर्शित यंत्र को कागज पर लिखकर लोबान की धूप दे। तदुपरान्त ओखली में धर कर कूटे तो इससे डाकिनी का मस्तक फूट जायेगा और वह चिल्लाकर सब कुछ बताने लगेगी। तदुपरान्त स्वग्रस्त प्राणी को छोड़कर भाग जायेगी।

सेना भगाने का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यंत्र को शंखाहूली, सूरजमुखी तथा गुलदौने के रस में नगाड़े के ऊपर लिखकर डंके की चोब देने से शत्र की सेना भाग जाती है। 'देवदत्त' के स्थान पर जिस शत्रु की सेना हो, उसका नाम लिखना चाहिए।



प्रेत दूर करने का यन्त्र

पृ० १३९ पर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर कंठ में बांधे तो प्रेत-बाधा दूर हो जाती है।

इस यंत्र को गंधादि से लिखकर, धप, दीप आदि से पूजन कर लेना चाहिए तथा ताँबे के ताबीज में भरकर कण्ठ में बाँधना चाहिए।

ॐ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रों	क्लीं
स्य	य	८	१
तं	दं	सं	जं
कं	जि	स	त
४	५	टं	टं

प्रेत दूर करने का पलीता यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यंत्र को कागज पर लिखकर, उस व्यक्ति को सुँघावे, जिसे प्रेत ने जकड़ रक्खा हो, तो इस यंत्र के प्रभाव से प्रेत बोलने लगता है और जो पूछा जाय उसका जवाब देता है। अन्त में इस यंत्र के प्रभाव से स्वग्रस्त व्यक्ति को छोड़कर भाग जाता है। यंत्र को केशर, कस्तूरी आदि किसी गंध से लिखकर, विधिपूर्वक पूजन कर लेना चाहिए, तदुपरान्त प्रेत-ग्रस्त व्यक्ति को सुँघाना चाहिए।

अ	मू	सि	ज	ज	त्र	०	०	०
द	च	जा	पै	नि	खै	०	०	०

छाय भस्म करने का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर, यंत्र का पलीता बनाकर लगाने से छाया भस्म हो जाती है।

२४	१९	२०	१	२८	३९	३०
२९	२७	१८	९	७	४७	३८
३७	३५	२६	१७	८	६	४६
४५	३६	३४	२५	५६	१४	५
४	५५	४२	३३	२४	१५	१३
१२	३	४३	४१	३२	२३	२१
२०	१२	२	४९	४०	३१	२२

यंत्र को विधिपूर्वक गंधादि से लिखना तथा पूजन कर लेना चाहिए।

जुए में जीतने का यंत्र

पृ० १४१ पर ऊपर प्रदर्शित यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर

लिखकर धूप दे तदुपरान्त ताबीज में भरकर भुजा में बाँधकर जुआ खेलने जाये तो जुए में विजय प्राप्त करे। कभी हार नहीं सकेगा।

१	२५।	२३।	२३
३१॥।	२७॥	३५॥	३६॥
११॥	८	२४॥	१९॥
२६।	१॥।	५॥।	४॥।

पानी बंद करने का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यंत्र को कागज पर लिखकर बाँधने से पानी बन्द हो जाता है।

११	१८	२	८
७	३	३४६	३०५
३४८	३४३	९	१
४	६	३४४	३४७

सर्व विषनाशक यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को कागज पर लिखकर, धोकर पिलाने से सर्प का विष उतर जाता है। चढ़ने नहीं पाता।

॥	=	।=।	=
॥। ॥	।	॥ ॥	=
≡	२	+	≡
॥।	=	।	≡।

मसान दूर करने का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गले में रोग बाँधने से मसान रोग दूर होता है।

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

चिकलबाई दूर करने का यन्त्र

नीचे ओर प्रदर्शित यन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बाँधने से चिकलबाई दूर हो जाती है।

२१६	२१६	२१६	२१६
२१६	२१६	२१६	२१६
२१६	२१६	२१६	२१६
२१६	२१६	२१६	२१६

दुःस्वप्न नाशक यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर सोते समय सिरहाने रख लेने से बुरे स्वप्नों का दीखना बन्द हो जाता है।

हुं॰	सं॰	खं॰	फं॰
षं॰	दं॰	ध्वं॰	जं॰
नं॰	पं॰	मं॰	दं॰
चं॰	यं॰	जं॰	दं॰

विघ्ननाशक यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यंत्र को मालकाँगुनी के रस से कागज पर लिखकर कण्ठ में बाँधने से भय दूर होता है तथा विघ्न नष्ट हो जाते हैं।

उ	मं		प
द	त	को	म
त	र	लं	प
	शु		ग

सर्वरक्षा यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यंत्र को कस्तूरी, चंदन तथा कपूर से

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

भोजपत्र पर लिखकर, धूप, दीप, चंदन, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य आदि से पूजे। फिर धन, वस्त्र आदि से ब्राह्मणों का पूजन कर ताँबे के ताबीज में भरकर यंत्र को पुरुष दायीं भुजा में और स्त्री कण्ठ में बाँधे। इस यन्त्र के प्रभाव से भाग्य बढ़ता है, भय दूर होते हैं तथा सब प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति एवं रक्षा होती है।

बर्तन फोड़ने का यंत्र

९	१८	२	७
	३	१५	१४
१७	१२	८	१
४	५	१३	३३

इस यंत्र को भैंस के सींग के ऊपर लिखकर, भैंस को कुम्हार के आवे की तरफ कर दे तो उसके आवे में गढ़े हुए बर्तन फूट जाते हैं।

राज-सम्मान प्राप्त करने का यंत्र

इस यंत्र को कपूर और कस्तूरी से लिखकर अपने पास रक्खे तो उस व्यक्ति को राजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता है।

४२	५०	२	७
०	२०	४७	४६
४९	४४	८	१
४	५	४५	४८

नजर लगने का यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल चंदन से लिखकर, धूप देकर, ताँबे के ताबीज में भरकर, उस बालक के गले में बाँध दे, जिसे नजर लग गई हो। इस यंत्र के प्रभाव से नज़र लगने का दोष तुरन्त दूर हो जाता है।

३	२	७	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

बलाय दूर करने का यंत्र

इस यंत्र के भोजपत्र के चार टुकड़ों पर अलग-अलग लिखकर चारों कोनों में गाढ़ देने से हर प्रकार की बलाय दूर हो जाती है।

८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
३	७५	६८	६
३६	५	४	१५

आधाशीशी-नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर मस्तक पर बाँध देने से आधाशीशी का दर्द दूर हो जाता है।

३८	४६	२	७
६	३	४३	४६
४	४०	८	१
४	५	४१	४८

नित्य ज्वर नाशक यंत्र

इस यंत्र को ठीकरी पर लिखकर उस मनुष्य के हाथ से कुएँ में गिरवाये, जिसे ज्वर आता हो, तो उसका नित्य आने वाला ज्वर दूर हो जायगा।

८२	८९	२	७
६	३	५६	५५
५८	६३	८	१
४	५	८४	५७

इकतरा ज्वर नाशक यंत्र

इस यंत्र को ठीकरी पर लिखकर भुजा में बाँध देने से इकतरा ज्वर (एक दिन छोड़कर आने वाला बुखार) दूर हो जाता है।

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

अकाल मृत्यु निवारण यंत्र

इस यंत्र को चंदन की कलम से लिखकर मस्तक पर धारण करने से अकाल-मृत्यु का भय दूर हो जाता है ।

—	=	≡	||
||	=	||	|
≡	|||		|
|||	—	≡	=

अम्बिका देवी की प्रसन्नता का यन्त्र

इस यंत्र को आम के वृक्ष के नीचे सवा लाख लिखनें सें अम्बिका देवी प्रसन्न होती हैं ।

=		=	|||
—	δ	=	≡
||	||||	≣	||||
||||	|||	=	|||

कालिका देवी की प्रसन्नता का यंत्र

इस यंत्र को कनेर के नीचे सवा लाख लिखने से कालिका देवी प्रसन्न होती हैं।

हं॰	सं॰	पं॰	फं॰
घं॰	पं॰	पं॰	जं॰
नं॰	पं॰	मं॰	०
चं	०	मं॰	ढं॰

हनुमान की प्रसन्नता का यंत्र

इस यंत्र को सिंदूर से सवा लाख लिखने पर हनुमान प्रसन्न होते हैं।

नं॰	ढं॰	जं॰	चं॰
दं॰	दं॰	चं॰	चं॰
जं॰	ढं॰	जं॰	०
ढं॰	नं	जं॰	हं॰

भूत, यक्ष, देवी की प्रसन्नता का यंत्र

इस यन्त्र को सिरस के वृक्ष के नीचे बैठकर सवा लाख लिखने से, भूत, यक्ष तथा देवी प्रसन्न होते हैं ।

तं०	तं०	तं०	तं०
पं०	पं०	पं०	पं०
दं०	दं०	दं०	दं०
लं०	लं०	लं०	लं०

अलिगधा यक्षिणी की प्रसन्नता का यंत्र

इस यंत्र को आँवले के रस से सवा लाख लिखने से अलिगधा यक्षिणी प्रसन्न होती है ।

लं०	पं०	दं०	लं०
लं०	तं०	पं०	दं०
सं०	पं०	दं०	लं०
पं०	दं०	मं०	नं०

चक्रवर्ती-वशीकरण यंत्र

इस यन्त्र को चाक फेरने की लकड़ी से लिखने पर चक्रवर्ती राजा वशीभूत होता है।

जं.	जं.	जं.	जं.
जं.	जं.	जं.	जं.
जं.	जं.	जं.	जं.
जं.	जं.	जं.	जं.

शत्रु उच्चाटन यंत्र

इस यंत्र को ताँबे के पत्र पर लोहे की कलम से लिखने पर शत्रु का उच्चाटन होता है।

लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०

गई वस्तु के आने का यन्त्र

इस यंत्र को बकरे की हड्डी की कलम से कनेर की छाया में बैठकर लिखने से गई वस्तु वापस आ जाती है।

ह्रूं.	ह्रूं.	ह्रूं.	ह्रूं.
ड्रूं.	ड्रूं.	ड्रूं.	ड्रूं.
जें.	जें.	जें.	जें.
ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.

प्रसिद्धि प्राप्त करने का यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर सवा लाख लिखने से प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

दं०	दं०	दं०	दं०
वं०	वं०	वं०	वं०
सं०	सं०	सं०	सं०
अं०	अं०	अं०	अं०

देशाटन का यंत्र

इस यंत्र को श्मशान के कोयले द्वारा शत्रु के वस्त्र पर लिखने से देशाटन की प्राप्ति होती है।

तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०

क्लेश होने के यंत्र

इस यंत्र को स्याही द्वारा कागज पर लिखकर शत्रु के दरवाजे पर गाढ़ देने से उसके घर में क्लेश होना आरंम्भ हो जाता है। जब यंत्र को उखाड़ लिया जाय, तब क्लेश बन्द होता है।

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

नजर न लगने का यंत्र

इस यंत्र को भोज पत्र पर लिखकर गले में बाँधने से नजर नहीं लगती ।

७	१८	१०	३५
१	३५	७	१८
३५	५०	१८	७
११	७	३७	१०

प्रीति उत्पादक यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर फुलेल में जलाने से प्रीति उत्पन्न होती है ।

२१	२६	२
२८	२४	२७
२३	२२	१०

४१	१८	११
१०	२०	३०
१९	२३	३२

प्रीति नाशक यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर कड़ुए (सरसों के) तेल में जलाने से प्रीति नष्ट हो जाती है।

प्रीति नाशक दूसरा यंत्र

इस यंत्र को कंटाई के पत्र पर लिख कर सुखा ले, फिर जिस स्थान सोता हो, वहाँ उस व्यक्ति के ऊपर डालने से प्रीति नष्ट हो जाती है।

४१	१८	११
२०	३०	१०
२३	३२	१९

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

तिजारी का यंत्र

इस यन्त्र को अष्ट गंध से लिखकर भुजा में बाँधने से तृतीयक ज्वर (तिजारी बुखार) दूर हो जाता है।

सुख प्रसव यंत्र

इस यन्त्र को लिखकर प्रसव के समय प्रसूता स्त्री को दिखाने से बालक सुख पूर्वक होता है।

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

शीत ज्वर नाशक यंत्र

इस यंत्र को शुभ मुहूर्त में लिखकर गले में बाँधने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

३	४	७	१४
१	६	१०	६
१५	४	३	७
७	३	१४	४

विद्या बुद्धि दायक यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर प्रतिदिन लिखने से विद्या और बुद्धि की प्राप्ति होती है। यन्त्र को चौथे घर से लिखना आरम्भ करना चाहिए।

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

सर्वोपरि यंत्र

निम्नलिखित यन्त्र को शुभ मुहूर्त में तांबे के पत्र पर, चन्दन के साथ अनार की कलम से लिखकर प्रतिदिन विधिपूर्वक पूजन करते रहने से सभी कार्यों की सिद्धि तथा सभी मनोरथों की प्राप्ति होती है।

राम	राम	राम
राम	सीताराम	राम
राम	राम	राम

वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को नागरबेल के रस से भोजपत्र पर लिख कर, विधि-पूर्वक पूजन करे तथा ताबीज में भर कर भुजा में बाँध ले। जो भी स्त्री-पुरुष देखेगा, वही वश में हो ज़ायेगा।

२३	३०	२	८
७	३	२७	२६
२८	२४	२	१
४	६	२५	२८

पुरुष वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को प्याज के रस से रोटी पर लिखकर पुरुष को खिलाने से पुरुष स्त्री के वशीभूत हो जाता है।

७	२१	२	७
६	३	१९	५१
२५	५७	८	१
४	५	७०	२४

स्त्री वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को पीक से पान पर लिखकर, स्त्री को खिला दे तो स्त्री वश में हो जाती है। इस यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में लिखना चाहिए।

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४१

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को गोभी के पत्र पर लिखकर भुजा में बाँधने से, देखने वाले सभी स्त्री-पुरुष वश में हो जाते हैं।

४९	५६	२	७
६	३	५२	५३
५५	५०	८	१
४३	४	५०	४४

पति वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को रोटी पर लिखकर काले कुत्ते को खिलाने से पति स्त्री के वशीभूत हो जाता है।

३३	४०	२	८
७	३	३६	३७
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को काँसे की कटोरी में लिखकर, तेल-भरी दिखाने तथा मस्तक पर लगाने से वशीकरण होता है।

६०	६७	२	८
७	३	६४	६३
६६	६१	६	३
४	०	६२	६५

स्त्री वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को स्त्री के बायें पाँव के नीचे के भाग (पग-तल) में लिखने से स्त्री वशीभूत हो जाती है।

५८	५५	२	८
७	३	६२	५१
५४	५९	९	१
४	६	५०	६३

वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को कुंकुम, सिन्दूर, से लोटे के नीचे लिखकर, उस लोटे में पानी भर कर जिसे पिलाया जायेगा, वही वश में हो जायेगा।

६१	६२	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	९	१
४	६	६३	६१

वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को केले के रस से श्रवण नक्षत्र में लिखकर पानी में डाल दे। उस पानी को जो कोई पियेगा, वही वश में हो जायेगा।

६३	६९	२	८
७	२	६६	६५
६८	६३	९	१
४	६	६४	६७

शत्रु वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को नगाड़े पर लिखकर, शत्रु के नाम का नगाड़ा बजाया जाये, तो शत्रु वशीभूत हो जाता है।

२७	३४	२	८
७	३	३१	३०
३३	२८	९	१
४	६	२४	२३

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को लज्जालु के रस से लिखकर, मस्तक पर धारण करने से, जो भी व्यक्ति देखेगा, वही वशीभूत हो जायेगा।

९२	९९	२	८
७	३	९६	९५
९८	९३	९	१
४	६	९४	९७

स्त्री वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को हथेली पर लिखकर स्त्री को प्रतिदिन दिखाये तो वह वश में हो जाती है।

५७	६४	२	८
७	३	६१	६०
६३	५८	९	१
४	६	६९	६२

स्त्री मोहन यन्त्र

इस यन्त्र को स्त्री के दूध से पुष्य नक्षत्र में लिखे तो स्त्री पाँवों पर आ गिरती है तथा आज्ञा का पालन करती है।

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को श्वान के नख से लिखने पर सब कार्यों की सिद्धि होती है।

५५	६२	२	८
६	३	५९	५८
६१	५६	८	१
४	५	६५	५०

सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को बाँस की कलम से सवा लाख बार लिखने पर सब काम सिद्ध होते हैं।

८	१५	२	८
७	३	१२	११
१४	९	९	१
४	६	१०	१३

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को बाँस की कलम से सवा लाख लिखने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

१३	२०	२	८
७	३	१७	१६
१९	१४	९	१
४	६	१५	१८

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को सिन्दूर, कुंकुम, कस्तूरी से लिखकर ताँबे के पात्र में पूजन करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

६७	७३	२	८
७	३	७१	६९
७२	६८	९	१
४	६	६८	७२

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टगंध से सवा लाख बार लिखने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

८१	१२	२	८
७	३	८५	८४
८७	८४	९	१
४	६	८४	८७

मनोभिलाषा-पूर्ति यन्त्र

इस यन्त्र को काकरे के रस से लिखकर वन में गाढ़ने से मनोभिलाषा की पूर्ति होती है ।

९२	५९	२	८
७	३	६६	१५
९८	९३	९	१
४	६	९४	९७

मनोभिलाषा-पूर्ति यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर हर समय अपने पास रखने से सब मनोकामनाएँ पूरी होती हैं ।

९६	१०	२	८
७	३	९७	९०
५०	४५	९	१
४	६	९५	९८

मनोभिलाषा-पूर्ति यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के नीचे बैठकर सीसे की कलम से लिखने पर मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

१	५	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

मनोभिलाषा-पूर्ति यन्त्र

इस यन्त्र को फोक के रस से लिखकर वन में गाढ़ देने से मनोभिलाषा की पूर्ति होती है।

९२	९८	२	८
७	३	९५	९५
९७	९३	९	१
४	६	९४	९६

मनोभिलाषा-पूर्ति यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के नीचे बैठ कर सीसे की कलम से लिखने पर, मन की अभिलाषा पूरी होती है।

व	प	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

प्रयोग-सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र के नीचे, जिस कार्य को करना हो, उसका नाम और लिखे। इस प्रकार सवा लाख लिखने से प्रयोग सिद्ध होता है।

२६	४३	२	७
६	३	४०	३९
४२	३७	८	१
७	५	३८	४

प्रयोग सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखने से प्रयोग सिद्ध होता है।

९१	१००	२	८
७	३	९७	९६
९९	९४	९	१
४	६	९५	९८

वचन सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को कुलिंजन के रस से लिखकर, ताबीज में मंढ़वा कर पास रखने से वचन-सिद्धि होती है।

६६	९२	२	८
७	२	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

रति स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर रति-क्रिया करे तथा यन्त्र की ओर देखता रहे तो दीर्घकाल तक स्तम्भन होता है ।

७२	७९	२	८
७	३	६२	७५
७०	७३	९	१
४	६	७४	७७

राज-सम्मान प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर, पूजन करके, ताबीज में भर कर बाँधे रहने से राज-सभा में सम्मान प्राप्त होता है ।

४४	५१	२	७
६	३	४०	५७
५०	४५	८	१
४७	४	४८	४९

राज-सम्मान प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को कपूर, कस्तूरी से लिखकर धारण करने से राजसभा में सम्मान प्राप्त होता है।

४३	५०	२	७
६	३	४७	४८
४९	४४	८	१
४	५	४५	४७

सभा सम्मान प्राप्ति यन्त्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर, सोना, चाँदी अथवा ताँबे के ताबीज में मढ़वा कर कण्ठ में बाँधने से सभी सभाओं में सम्मान प्राप्त होता है।

५६	६२	२	८
७	३	६०	५९
६२	५७	९	१
४	५	५८	६१

देवता को प्रसन्न करने का यन्त्र

इस यन्त्र को आक की लकड़ी से लिखकर मस्तक पर धारण करने से देवता प्रसन्न रहते हैं।

६५	७२	२	८
७	३	६९	६८
७१	६६	९	१
४	६	६७	७०

सुख-प्राप्ति यन्त्र

इस यंत्र को कागज पर लिखकर घर में रखने से अत्यन्त सुख प्राप्त होता है।

५९	६६	३	७
६	३	६३	६२
६५	६०	८	१
४	५	६१	६४

बुद्धि-वर्द्धक यन्त्र

इस यन्त्र को चतुर्दशी के दिन मालकाँगुनी के रस से जिह्वा पर लिखने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

८४	११	२	८
७	३	८८	८७
९०	८५	९	१
४	६	८५	८०

बुद्धिवर्द्धक यन्त्र

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन मालकाँगुनी के रस से जिह्वा पर लिखने से बुद्धि बढ़ती है।

८४	९१	२	८
७	३	८८	८७
९	८५	९१	१
४	६	८६	८०

बोध प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को शुक्ल-पक्ष के श्रवण नक्षत्र में थाली में लिखकर उस थालीं में भरकर खीर खाने से बोध प्राप्त होता है।

९३	९१	२	८
७	३	९८	९६
९०	७४	९	१
४	६	९५	९९

व्यवहार-घनिष्ठता यन्त्र

इस यन्त्र को दिवाली से दिन हाट में सामने लिखनें से व्यवहार में घनिष्ठता आती है।

७४	८१	२	७
६	३	७९	७६
८०	७५	८	१
४	५	७०	७१

व्यवहार घनिष्ठता यन्त्र

इस यन्त्र को लाल कपड़े की गाँठ में बाँधकर रखने से व्यवहार में घनिष्ठता बढ़ती है।

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७९	७४	८	१
४	५	७५	७४

व्यवहार घनिष्ठता यन्त्र

इस यन्त्र को घर के दरवाजे में गाढ़ने से व्यवहार में घनिष्ठता की वृद्धि होती है।

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५४	५३	८	१
४	५	५१	५५

स्त्री-कष्ट-मुक्ति यन्त्र

इस यन्त्र को काँसे की थाली में लिखकर कष्टित स्त्री को घोल कर पिलाने से कष्ट दूर हो जाता है।

२८	३५	२	७
७	३	३२	३१
३४	२९	९	१
४	६	३०	३२

स्त्री-विघ्न नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को प्रसूता स्त्री जापे में अपने पास रक्खे तो सब प्रकार के विघ्न दूर होते हैं।

५६	६२	२	८
७	३	६०	५९
६२	५७	८	१
४	६	५८	६१

भय-नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को घर के सामने गाढ़ने से भय दूर हो जाता है।

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	१
४	६	३३	३६

पीड़ानाशक यन्त्र

इस यन्त्र को दातुन की कूँची से पत्थर पर लिखे, फिर उस पत्थर पर बैठकर स्नान करे तो पीड़ा दूर हो जाती है।

६५	७२	२	७
६	३	६९	६८
७१	६६	८	१
४	५	७०	६७

शत्रु-भ्रामक यन्त्र

इस यन्त्र को शिकरे के पंख फर लिखकर शत्रु के घर में गाढ़ से शत्रु भटकता रहता है। एक स्थान पर टिक नहीं पाता।

१५	२६	२	८
७	३	१९	१८
२१	१६	९	१
४	६	१७	२०

शत्रुविनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को नदी के तट पर बैठकर लोहे की कलम से लिखने पर शत्रु का विनाश हो जाता है।

६७	७४	२	८
७	३	७१	७०
७३	६८	९	१
४	६	६९	७२

शत्रु बल नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को धतुरे के रस से लिखकर गले में बाँधने से शत्रु का वल नष्ट हो जाता है।

७९	६	२	८
७	३	८३	८२
१५	८०	९	१
४	६	८१	८४

शत्रु के शरीर को गलाने का यन्त्र

इस यन्त्र को चमड़े पर शत्रु के नाम सहित लिखकर, नमक में गाढ़ देने से शत्रु का शरीर गल जाता है।

८३	९०	९	८
७	३	८७	८६
८९	८९	९	१
४	६	८५	८

शत्रु का मुँह सुजाने का यन्त्र

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित गधे के मूत्र से लिखकर, ऊपर से जूता मारने पर, शत्रु का मुँह सूज जाता है।

४१	४२	२	७
६	३	४५	४०
४७	४३	८	१
४	५	४३	४०

शत्रु का मुँह सुजाने का यन्त्र

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित पनारे में लिखकर, जूता मारने से शत्रु का मुँह सूज जाता है।

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५	५८

[बैरी का नाम]

शत्रु का शरीर सुजाने का यन्त्र

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित लिखकर, छुरी से छेदने पर, शत्रु का शरीर सूज जाता है।

६७	७०	२	७
६	३	७६	७३
७६	६२	८	१
४	७	११	७२

शत्रु की छाती फटने का यंत्र

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित बकरे के रुधिर से लिखकर, धोबी की शिला के नीचे गाढ़ देने से शत्रु की छाती फट जाती है।

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	१	९	१
४	६	२२	२५

शत्रु-मारण यन्त्र

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित हाथी के नख द्वारा कागज पर लिखकर श्मशान में गाढ़ देने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

शत्रु-मारण यन्त्र

इस यन्त्र को धमासे की कलम से शत्रु के नाम सहित लिखकर, श्मशान में गाढ़ देने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

७९	८६	२	८
७	३	८२	८२
८५	८०	९	१
४	६	८३	८४

शत्रु का शरीर फटने का यन्त्र

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित धोबी की शिला पर लिखने से, शत्रु का शरीर फट जाता है।

६०	७१	२	१
६	३	५८	६५
७०	६५	८	१
४	५	५६	६९

कान न दुखने का यन्त्र

इस यन्त्र को अनार के रस से लिखकर कान में बाँध देने से कान नहीं दुखता।

२२	२९	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	९	१
४	६	२४	२१

नाथ चलने का यंत्र

इस यन्त्र को सरसों के पत्ते पर लिखकर चबाने से नाथ चलती है।

२५	३२	२	८
७	३	२९	२८
३४	२६	९	१
४	६	१७	३०

नाथ चलने का यन्त्र

इस यन्त्र को मोडल के पत्र पर लिखकर जो भी उलांघे, उसकी नाथ चलने लगेगी।

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
८१	७६	९	१
४	६	७७	८०

शूल चलाने का यन्त्र

इस यन्त्र को चित्रा नक्षत्र में जंभीरी पर लिखे। जिसका नाम लिखकर सुई गढ़ाई जायगी, उसी के शरीर में शूल चलने लगेगा।

६६	७३	२	७
६	३	७१	७०
७३	६८	८	१
४	५	६९	७२

आधा शीशी का यन्त्र

इस यन्त्र को रविवार के दिन थूहर के नीचे लिखकर गाढ़ दे। फिर उस स्थान को उलांघथे से आधा शीशी का दर्द चला जाता है।

२९	३६	२	८
७	३	३३	३२
३५	३०	९	१
४	६	३१	३४

आधा शीशी का यन्त्र

इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर सिर पर बाँधने से आधाशीशी का दर्द दूर हो जाता है।

३८	४६	२६	७१
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	९

धनंजय वायु का यन्त्र

इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर लिखकर कण्ठ में बाँधने से धनंजय वायु का रोग दूर हो जाता है।

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४८	८	१
४	५	५०	४३

धावरा-रोग नाशक यंत्र

इस यन्त्र को कागज पर लिखकर कण्ठ में बाँधने से धावरा-रोग दूर हो जाता है।

१०	१७	२	८
७	३	१४	१३
१६	१	९	१
४	६	११	५

धावरा रोग नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर कंठ में बाँधने से धावरा रोग दूर हो जाता है।

१७	२१	८	२८
७	३	१५	१४
२०	१५	१६	१९
४	६	९	९

अधूरा गर्भ जाने का यंत्र

इस यन्त्र को पेठे के रस से लिखकर स्त्री के गले में बाँधने से अधूरा गर्भ चला जाता है।

२१	२८	२	८
७	३	२५	२४
२७	२३	९	१
४	६	२२	२६

शूल होने का यंत्र

इस यन्त्र को थूहर के दूध वे लिखकर, जिसके घर में गाढ़ दिया जाय, उसके शूल होता है।

३४	४०	२	८
७	३	३७	३६
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

देईपेई भय नाशक यंत्र

इस यन्त्र को तिकोनी ठीकरी में लिखकर बालक के गले में बाँधने से देईपेई का भय नहीं रहता ।

७७	८४	२	८
७	३	८१	८१
८३	७८	९	१
४	६	१९	८३

देईपेई भय-नाशक यंत्र

इस यन्त्र को तिकोनी ठीकरी में लिखकर बालक के गले में बाँध देने से देईपेई का भय दूर हो जाता है ।

७७	८४	२	८
७	३	८१	८१
८३	७८	९	१
४	६	७९	८३

बड़कबाय जाने का यंत्र

इस यन्त्र को अड़ूसे के रस से लिखकर सिरहाने रखने पर बड़कवाय चली जाती है।

८५	९२	२	८
७	३	९९	८८
९१	९६	९	१
४	६	८७	९०

काँच न निकलने का यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधने से काँच नहीं निकलती।

७६	८२	२	८
७	१	७०	७९
८२	७७	९	१
४	६	८२	८१

नजर न लगने का यंत्र

इस यन्त्र को ताँबे के पत्र पर लिखकर बालक के गले में बाँधने से नजर नहीं लगती और बालक नीरोग रहता है।

७२	८१	३३	४२
९८	८०	९	११
१५	३७	४०	१०
४५	७७	९	१

कोख बन्द होने का यन्त्र

इस यन्त्र को बुहारी पर, नाम सहित लिखकर श्मशान में गाढ़ देने से कोख बन्द हो जाती है।

६३	७१	२	८
७	३	६७	६६
८२	७७	९	१
४	६	६५	८१

स्तन न पकने का यन्त्र

इस यन्त्र को इमली के रस से लिखकर स्त्री के गले में बाँधने से उसके स्तन नहीं पकते

१	१६	२	८
७	३	१३	१२
१५	१७	९	१
४	६	११	१४

घर में सर्प न आने का यन्त्र

इस यंत्र को मालकांगुनी के रस से लिखकर घर में रखने से घर में सर्प नहीं आता।

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	९	१
४	५	३१	३४

घर में सर्प न आने का यन्त्र

इस यन्त्र को काच के रस से लिख कर घर में गाढ़ देने से, उस घर में सर्प नहीं आता।

३४	३९	२	८
७	३	३५	३४
३८	३३	९	१
४	६	३६	३१

सर्प, भूत, प्रेत भयनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कागज पर लिखकर घर में रखने से सर्प, भूत, प्रेत का भय नहीं रहता।

८०	८७	२	७
६	३	८६	८३
८४	८१	८	१
४	५	८२	८५

भूत-प्रेत-भय नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कण्ठ में बाँधने से भूत-प्रेत का भय नहीं होता। यह यन्त्र स्त्रियों के लिये विशेष लाभकारी है।

५५	६२	२	८
७	३	५९	५८
६२	५६	९	१
४	६	५७	६०

भूत न लगने का यन्त्र

इस यन्त्र को दूधी के रस से लिखकर बालक के कण्ठ में बाँध देने से उसे भूत नहीं लगता।

८६	९६	२	८
७	३	९५	१२
४२	३७	९	१
४	६	९१	९४

बाल-भय-नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को घीग्वार (ग्वारपाटा) के रस अथवा घी से लिखकर बालक के गले में बाँध देने से बालक डरता नहीं है।

८९	९६	२	८
७	३	९४	८२
९७	९१	९	१
४	६	९०	९४

सिंह को भगाने का यन्त्र

इस यन्त्र को सहदेही के रस से लिखकर बाँधने से, यन्त्र बाँधे हुये व्यक्ति को देखकर सिंह भाग जाता है।

२३	३४	२	८
७	३	२०	३९
३३	२८	९	१
४	६	२०	३३

कलह होने का यन्त्र

इस यन्त्र को कुम्हार के आवे की ठीकरो पर लिखकर किसी के घर में डाल देने से, उस घर में कलह होना आरम्भ हो जाता है।

७९	७६	२	७
६	३	८३	८४
८५	८०	८१	१
४	५	८१	८४

विरोध होने का यन्त्र

इस यन्त्र को तंबोली की कुंडी के पानी से लिख कर शत्रु के घर गाढ़ देने से, उस घर में विरोध और क्लेश होना आरम्भ हो जाता है।

५८	६५	२	७
६	३	६२	६१
६४	६९	८	१
४	५	६०	६३

बुद्धि नष्ट होने का यन्त्र

इस यन्त्र को उल्लू के पंख पर लिखकर किसी के सिर पर डालने से उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है और वह उल्लू जैसा हो जाता है।

८४	९०	२	७
६	३	८८	९६
९१	९७	८	१
४	५	८६	९९

स्त्री-दुग्ध-नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को स्त्री के दूध से लिखकर बाये कोने में गाढ़ देने से स्त्री का दूध नष्ट हो जाता है।

	७६	२	८
७	३	७२	७३
७५	७०	९	१
५	६	७१	७४

नपुंसकता कारक यन्त्र

इस यन्त्र को रेशम के वस्त्र पर, नाम सहिम लिखकर, कुसुम के वृक्ष के नीचे गाढ़ देने से, पुरुष नपुंसक हो जाता है।

२३	८०	२	८
७	७	७७	७३
७९	७४	९	१
४	६	७५	७४

कामनानाशक यन्त्र

इस यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में लिखकर अपने पास रखने से कामना नष्ट हो जाती है।

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
६१	७६	९	१
४	६	७७	८०

बोध-प्राप्ति का यन्त्र

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के श्रवण नक्षत्र में थाली में लिखे। तदुपरान्त उस थाली में भरकर खीर खाये तो बोध प्राप्त होता है।

७३	९१	२	८
७	३	७८	८६
९०	७४	९	१
४	६	८५	८९

आम पर अधिक फल आने का यन्त्र

इस यन्त्र को आम के रस से लिखकर आम के वृक्ष पर बाँधने से अधिक फल आते हैं।

८८	९५	२	८
७	३	९२	९१
९४	८६	९	१
४	६	९०	९१

अनार पर अधिक फल आने का यन्त्र

इस यन्त्र को जंभीरी के रस से लिखकर अनार के वृक्ष पर बाँधने से अधिक फल आते हैं।

८४	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८६	९२

अधिक फूल आने का यन्त्र

इस यन्त्र को लाख के पानी से तूर के पत्ते पर लिखकर बगीचे में गाढ़ देने से अधिक फूल आते हैं।

७७	८४	२	८
७	३	८१	८३
८४	७८	९	१
४	६	७९	८५

फूल सुखाने का यन्त्र

इस यन्त्र को बगीचे में गाढ़ देने से सब फूल सूख जाते हैं, या। बहुत कम फूल आते हैं।

७६	७३	२	८
७	३	८०	७९
८२	७७	९	१
४	६	७८	८१

स्वप्न में ऊँट दीखने का यन्त्र

इस यन्त्र को आर्द्रा नक्षत्र में ऊँट की हड्डी पर लिखकर शत्रु के घर में गाढ़ देने से उसे स्वप्न में ऊँट ही ऊँट दिखाई देते हैं।

१८	२५	२	८
७	३	२	१
२४	१९	१९	१०
४	६	२१	१३

स्वप्न में ऊँट दीखने का यन्त्र

इस यन्त्र को आर्द्रा नक्षत्र में ऊँट की हड्डी पर लिखकर शत्रु के घर में गाढ़ देने से उसे स्वप्न में ऊँट ही ऊँट दिखाई पड़ते हैं।

११	१८	२	८
७	३	१५	१४
१०	१२	९	१
४	६	१३	१६

स्वप्न में वानर दीखने का यन्त्र

इस यन्त्र को वानर की हड्डी पर लिखकर शत्रु के घर में गाढ़ देने से उसे स्वप्न में बन्दर ही बन्दर दिखाई पड़ते हैं।

१२	१६	२	८
६	३	१३	१४
१८	१३	९	१
५	६	१५	१७

स्वप्न में भूत दीखने का यन्त्र

इस यन्त्र को केवड़े के रस से लिखकर, सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में भूत ही दिखाई देते हैं।

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	९	१
४	६	९	९

स्वप्न में भूत दीखने का यन्त्र

इस यन्त्र को गिलोय के रस से भोजपत्र पर लिखकर, सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में भूत ही भूत दिखाई पड़ते हैं।

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	९	९	१
४	६	९	१२

दिन की रात दिखाई देने का यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर घर के पिछवाड़े गाढ़ देने दिन की रात दिखाई देती है।

५२	५९	२	७
६	३	५६	५३
५८	६३	८	१
४	५	५५	५७

गए मनुष्य के लौटने का यन्त्र

इस यन्त्र को मार्ग के रेत में लिखकर, ऊपर कोड़ा मारने से गया हुआ मनुष्य घर लौट आता है।

७२	७६	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

गए मनुष्य के लौटने का यन्त्र

इस यन्त्र को पानी में अपने बीच की ऊगली से लिखकर पानी में कोड़ा मारने से गया हुआ मनुष्य घर को लौट आता है।

६२	६९	२	६
६	३	६८	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

गए पशु के लौटने का यन्त्र

इस यन्त्र को सेही के काँटे की कलम से खूँटे पर लिखे तथा खूँटे को गाढ़ दे। इसके प्रभाव से गया हुआ पशु लौट आता है।

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
१	६	२१	२३

सब पशुओं के आने का यन्त्र

इस यन्त्र को लकड़ी के पट्टे पर लिखकर, आसन बनाकर रखने से सभी जानवर आ जाते हैं।

६१	६८	२	७
६	३	६२	६४
६७	६२	८	१
४	५	६३	६६

अश्व-मारण यन्त्र

इस यन्त्र को घोड़े की हड्डी पर लिखकर, घोड़े के थान में गाड़ने से घोड़ा मर जाता है।

८६	७५	२	८
७	३	७२	७१
७४	७६	६	१
४	६	७०	७३

गदहे द्वारा मारने का यन्त्र

इस यन्त्र को गधे की हड्डी पर लिखकर किसी की जगह में गाढ़ दे तो उसे स्वप्न में गदहा मारता है।

१७	१४	२	८
७	३	२७	२०
२३	१८	९	१
४	६	१९	२२

अथाई के मनुष्यों के लड़ने का यन्त्र

इस यन्त्र को कुम्हार के आवे के कोयले से शिलापार अथाई में लिखे तो अथाई पर बैठे हुए सब लोग परस्पर लड़ने लगते हैं।

७०	७३	२	८
७	३	७४	७३
७६	७१	९	१
४	६	७०	७४

शुक्र स्तम्भन का यन्त्र

इस यन्त्र को थूहर के दूध से स्वाति नक्षत्र में लिखकर पुरुष अपनी कमर में धारण करे, तदुपरान्त मैथुन कर्म में प्रवृत्त हो तो उसे बहुत मस्ती आती है तथा देर तक शुक्र-स्तम्भन होता है।

७९	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	९	१
४	६	७३	७६

बहुत भोजन करने का यन्त्र

इस यन्त्र को केकड़े के रक्त तथा सीही के काँटे से लिखकर चूल्हे के पीछे गाढ़ दे। इससे जितनी भी रोटी बनाई जायेंगी, उन सबको खा लिया जायगा।

७८	७५	२	८
७	३	८२	१८
८४	८९	९	१
४	६	८	१०

मसान जगाने का यन्त्र

श्मशान की ठीकरी में इस यन्त्र को मदिरा से लिखकर, ऊपर से मदिरा की धार चढ़ाने से मसान जगता है तथा 'हाँ, हाँ' शब्द होता है।

८०	८६	२	८
७	३	८४	८३
८५	८४	९	१
४	६	८२	८२

स्त्री के बिछुवा छड़ाने का यन्त्र

इस यन्त्र को केसूले के रस से लिखकर स्त्री को सुँघाने से उसके बिछुवे छुट जाते हैं।

७४	८१	२	८
७	३	७९	७७
८०	७५	९	७
४	६	७६	७५

नाड़ा टूटने का यन्त्र

इस यन्त्र को श्वेत कपड़े पर लिखकर, तालाब, कुँआ अथवा बावड़ी के घाट पर गाढ़ देने से जो व्यक्ति उस स्थान को लाँघता है, उसी का नाड़ा टूट जाता है।

४	११	२	८
१०	३	८	७
७	५	९	१
४	६	६	९

नाड़ा टूटने का यन्त्र

इस यन्त्र को गिलहरी की पूँछ के बाल से लिखकर मार्ग में डाल दे। जो व्यक्ति इसे लाँघेगा, उसी का नाड़ा टूट जायगा।

५	१२	२	८
७	३	९	७
११	६	९	१
४	६	७	११

अन्न के सड़ने का यन्त्र

इस यन्त्र को तोते के पंख पर लिखकर अन्न में गाढ़ देने से, वह सड़ जाता है और उसमें से दुर्गन्ध आने लगती है।

૮૪	૯૦	૨	૭
૬	૩	૮૮	૮૬
૮૯	૮૪	૮	૧
૪	૫	૮૫	૮૮

डाकिनी आने का यंत्र

इस यन्त्र को खैर के कोयले से जरख के चमड़े पर लिखने से सब गाँव की डाकिनियाँ आ जाती हैं।

૭૦	૭૦	૨	૭
૬	૭૩	૭૬	૭૫
૭૬	૭૪	૮	૧
૪	૫	૭૦	૭૯

चूहों से कपड़ों की रक्षा का यंत्र

इस यन्त्र को कौंच के रस से लिखकर घर में रखने से चूहे कपड़े को नहीं काटते हैं।

६४	६१	२	८
७	३	६८	६८
७०	६५	९	१
४	६	६६	६९

कुत्ता भोंकने का यंत्र

इस यन्त्र को कुत्ते के कान के ऊपर लिख देने से वह भूँकता फिरता है।

६	७५	२	८
७	३	७२	७१
७४	७०	९	१
४	७०	११	७३

कमान न चढ़ने देने का यन्त्र

इस यन्त्र को कागली के पंख पर सिकरे के बाल की कलम से लिखने पर कमान नहीं चढ़ पाती।

१६	२६	२	८
७	३	२०	२०
३२	१७	९	१
४	६	१८	२१

ठठेरे की भट्टी में ताव न आने देने का यन्त्र

इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिख कर ठठेरे की भट्टी में गाढ़ दे तो काँसे, पीपल में ताव नहीं आयेगा।

७	८	२	८
१	३	५	४
७	३	५	४
७	६	३	६

रोगन न आने देने का यन्त्र

इस यन्त्र को मघा नक्षत्र में चमड़े पर लिख कर मनिहार की भट्टी में डालने से चूड़ी पर रोगन नहीं आयेगा।

८२	८९	२	७
६	३	८६	८५
८८	८३	८	१
४	५	८४	८७

चाक से बर्तन न उतरने देने का यन्त्र

इस यन्त्र को कुम्हार के चाक पर खैर के कोयले से लिखनें पर चाक से बर्तन नहीं उतरते।

७०	७७	२	७
६	३	७४	७३
७६	७१	८	१
४	५	७२	७५

भट्टी फूटने का यन्त्र

इस यन्त्र को बोल के छोड़ा पर लिखकर कलाल की भट्टी में डालने से भट्टी फूट जाती है।

५७	६४	२	७
६	३	६१	६०
६३	५८	८	१
४	५	५९	६२

ढोल फूटने का यन्त्र

इस यन्त्र को तालाब की मिट्टी से लिखकर ढोल बजाने वाले को दिखाये तो ढोल फूट जाए।

६९	७६	३	७
६	३	७	७२
७५	७०	८	१
४	५	६९	७

हाट उजाड़ने का यन्त्र

इस यन्त्र को अश्लेषा नक्षत्र में, शत्रु की हाट में लिखने से हाट उजड़ जाती है।

८३	८६	२	७
६	७६	७९	७८
८५	७५	८	१
४	५	७७	८२

जुए में जीतने का यन्त्र

इस यन्त्र को स्वाति नक्षत्र में लिखकर, दिवाली की रात्रि में भुजा पर बाँध कर जुआ खेलने जावे तो उसमें जीतता ही रहे। हार न हो।

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

पित्ती का यन्त्र

इस यन्त्र को रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर अष्ट गंध से लिखकर गूगल की धूनी दे तथा ताबीज में भर कर गले में बाँधे तो पित्ती न निकले।

७०	७७	२	७
६	३	७४	२३
७६	७१	८	१
४	५	७२	७५

आधासीसी का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर मस्तक पर बाँधने से आधा-सीसी का दर्द दूर होता है।

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

रोगी की पीड़ा का यन्त्र

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिखकर रोगी के गले से बाँधे तथा बालकों को मिठाई बाँटे तो रोगी की पीड़ा दूर होती है।

हं॰	सं॰	खं॰	फं॰
षं॰	दं॰	घं॰	जं॰
नं॰	पं॰	मं॰	ढं॰
चं॰	यं॰	जं॰	ढं॰

अन्न अधिक उपजाने का यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर खेत में गाढ़ने तथा क्षेत्रपाल की पूजा करने से खेत में अधिक अन्न उत्पन्न होता है।

२	१०	२	८
७	३	८४	२४
२६	८१	९	१
४	६	२२	२५

गर्भ रक्षा का यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर स्त्री की कमर पर बाँधने से गर्भ की रक्षा होती है।

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
श्रीं	ह्रीं	लं	क्षीं

कष्टा स्त्री का यन्त्र

इस यन्त्र को काँसी की थाली में लिख कर, धोकर पिलाने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

नजर लगने का यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर जिसके गले में बाँधे, उसे नजर न लगे और लगी हो तो दूर हो जाये।

३५	१०	१८	७
१८	७	३५	१०
७	१०	१०	३५
७	३५	७	१८

जुआ जीतने का यन्त्र

इस यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में लिख कर, हस्त नक्षत्र में पंवार की मूल लाकर यन्त्र में लपेटे तथा धूनी दे। फिर सवा पाव मिठाई चूहों को खिलाकर जुआ खेलने के लिए जाये तो अवश्य जीते।

१	२५१	३५।	२३।
३१।।।	२७।।	३।।५	३६।।।
१।।	९।।	२४।।	१९१।।
२४	९४।।	५।।।	४।।।।

बैरी के जूता मारने का यन्त्र

इस यन्त्र को लिखने की यह विधि है कि शनिवार के दिन ठाकुर या तेली जातिके जलते हुए मुर्दे को कमर के तले से एक अंगार लेकर उस पर मद्य अथवा तेल-पानी का कुल्ला कर दे फिर अंगार को उठाकर चल दे। पीछे फिर कर न देखे। उस कोयले को गूगल-धूनी दे कर,

५३	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५५	५९

एक बताशा अग्नि पर रखे और पुष्प चढ़ाये, जिससे भूत प्रसन्न हो। फिर उस कोयला तथा हरताल को मिलाकर एक पुराने लत्ते (कपड़े) अथवा कफन के टुकड़े पर यन्त्र को लिखे। यन्त्र के नीचे भाग में बैरी का नाम लिखे। तदुपरान्त यन्त्र पर जूता मारे तो वे जूते बैरी के माथे में लगेंगे।

बैरी के घर में कलह होने का यन्त्र

इस यन्त्र को नील तथा स्याही से निकृष्ट मास की निकृष्ट घड़ी में, शनिवार के दिन लिखे। फिर गूगल की धूनी देकर बैरी के दरवाजे

पर गाढ़ दे । जब तक यन्त्र गढ़ा रहेगा, तब तक बैरी के घर में कलह होती रहेगी ।

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

अश्व वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को कपूर, कस्तूरी और केशर से उत्तम मास के पहले रविवार को लिखकर गूगल की धूनि देकर घोड़े के गले में बाँध दे तो वह सदैव स्वामी के वश में रहेगा। कभी धोखा नहीं देगा ।

२६	३३	२	७
६	३	३०	२९
३२	२७	८	१
४	५	२८	३१

गाय का यन्त्र

इस यन्त्र को केशर, गोरोचन, तथा कुंकुम से भोजपत्र पर लिख कर गाय के गले में बाँध दे तथा गूगल की धूनी दे तो गाय बहुत दूध देती है।

२८	३५	१	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	२३

दूकान में माल की बिक्री होने के दो यन्त्र

निम्नलिखित दोनों यन्त्रों को शुभ तिथि तथा शुभ घड़ी में अलग-

व	अ	ह	ब
व	ह	अ	व
अ	व	व	ह
ह	व	व	अ

अलग लिखे। एक को शहद में रखकर, शक्कर-बूरे में डाले। तदुपरान्त मीठे अनार के पेड़ में बाँध दे और दूसरे को दुकान के दरवाजे पर बाँध दे। इसके प्रभाव से दुकान में माल की बिक्री खूब बढ़ जाती है।

८	११	१४	१
१३	१२	७	११
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

स्वप्न न आने का यन्त्र

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिखकर गूगल की धूनी दे तथा सिरहाने रखकर सोये तो स्वप्न न आए।

नं	छं	जं	चं
छं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	छं
नं	छं	जं	ठं

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को कागज के ऊपर हल्दी से लिखे तथा यन्त्र के नीचे अपने मनोरथ को लिख दे। फिर इसका पलीता बनाकर रविवार को दीपक जलाये। इस तरह ७ रविवार तक करे तो अभिलाषा पूरी हो।

८	९	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

इस यन्त्र के साथ-साथ हल्दी की माला से 'ॐ ह्रीं ह्र सः' इस मन्त्र का ११ माला जप भी करना चाहिए।

इसी यन्त्र के साधन की दूसरी विधि यह है कि रविवार को प्रातः काल स्नान करके काँसो की थाली में हल्दी से इस यन्त्र को लिखे। उस पर खड़ी बत्ती का चौमुखा घी का दिया रखकर, थालो को हाथ में लेकर सूर्य के सामने रखे तथा उपर्युक्त मन्त्र का जप करता जाए। जैसे-जैसे सूर्य घूमे, वैसे-वैसे आप भी घूमता जाये। सूर्य के अस्त होने पर अर्घ्य देकर व्रत को खोल दे। इस सम्पूर्ण क्रिया में किसी स्त्री की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए। इस विधि से ७ रविवार तक साधन करने से सभी इच्छायें परी होती हैं।

मनवांछित फलदाता यन्त्र

इस यन्त्र को लाल चन्दन से १०८ बेलपत्र के ऊपर १०८ बार लिखे और उन बेलपत्रों को शिवजी के मस्तक पर चढ़ा दे। इस क्रिया का श्रवण के महीने में ३० दिन तक करे तथा प्रत्येक सोमवार को व्रत रखे। प्रतिदिन 'ॐ नमः शिवाय' इस मन्त्र का ४४४ बार जप करे। इस विधि से साधन करने पर सन्तान, धन तथा अन्य सभी सुखों की प्राप्ति होती है,

बं	बं	बं	बं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

मनोरथ दाता यन्त्र

किसी मनोरथ की प्राप्ति के लिए इस यन्त्र को अनार की कलम से बरगद के वृक्ष के नीचे ४००० बार लिखे तो इच्छा पूरी होती है।

१	५	९
८	३	४
२	७	६

कामना सिद्धि यन्त्र

इस चिन्तामणि नामक यन्त्र को चन्दन तथा सिन्दूर से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर धारण करे तो सभी कामनायें पूरी हों।

३	६	२२
२१	३१	३
ज	२५	६

कष्टा स्त्री के लिए यन्त्र

इस यन्त्र को काँसी की थाली में लिखकर, धोकर पिलाने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।

ई अ

३३	३३	३३
३३	३३	३३
३३	३३	३३

क च

शीतला का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँधने से शीतला (चेचक) नहीं निकलती है और यदि निकल आई हो तो शान्त हो जाती है।

श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं

तिजारी का यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर दाईं भुजा पर बाँधने से तिजारी बुखार दूर हो जाता है।

७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

वशीकरण यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर ॐ नमो नृसिहाय सर्व दुष्ट विनाशाय सर्वजन मोहनाय सर्व राज्यं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा'

इस मन्त्र का प्रतिदिन १००० जप करना चाहिए। यह क्रम एक हजार दिन तक चालू रखना चाहिए। तब यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रतिदिन मन्त्र से अभिषिक्त विभूति को ७ बार मस्तक से लगाना चाहिए। यन्त्र को पहले दिन ही धारण कर लेना चाहिए। यन्त्र को धारण करने से पूर्व उसका धूप, पुष्प, गंधादि से पूजन कर लेना आवश्यक है।

हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी
हरी	हरी	हरी	हरी	हरी

सूँडी की पीड़ा का यंत्र

इस यन्त्र को प्रातःकाल लिखकर दाईं भुजा अथवा कण्ठ में बाँधने से सूँडी की पीड़ा दूर हो जाती है।

८ ५	११ ५	१४ ५	१ ५
१३ ५	२ ५	७ ५	१२ ५
३ ५	१६ ५	८ ५	६ ५
१० ५	५ ५	४ ५	१५ ५

छुहारे का गुण यन्त्र

यदि किसी छुहारे में दो गुठलियाँ मिल जायें तो दिवाली की में अनार की कलम से इस यन्त्र को पहले १०८ बार पृथ्वी पर लिखे। तदुपरान्त भोजपत्र के ऊपर अष्टगन्ध से लिखकर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर, छुहारे की दोनों गुठलियों को यन्त्र में लपेट कर, चाँदी के ताबीज़ में मँढ़वा ले।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

इस यन्त्र पूरित ताबीज को धोकर पिलानें से कष्टी स्त्री का कष्ट दूर होता है। रोगी का रोग दूर होता है। बाँझ स्त्री की कमर में बाँध देनें से उसे गर्भ रहता है। राज दरबार में पास रखने से सम्मान होता है तथा यन्त्र के प्रभाव से ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होकर सभी इच्छायें पूरी होती हैं।

हौलदिली का यन्त्र

इस यन्त्र को ४० दिन तक लाल चन्दन से कांसी की थाली में लिख कर लोबान की धूप दे। फिर थाली को जल से धोकर पीता

रहे। इससे हौलदिली (दिल की कमज़ोरी और घबराहट) दूर दूर होती है।

अ	ल	म	ल	क
ल	म	ल	क	अ
म	ल	क	अ	ल
ल	क	अ	ल	म
क	अ	ल	म	ल

११

विविध यन्त्र

इस परिच्छेद में विभिन्न ग्रंथों से संकलित यंत्रों का वर्णन किया गया है। इनमें से कुछ यन्त्र शास्त्रीय पद्धति के कुछ लोक-प्रचलित और कुछ मुसलमानी रीति के हैं। कुछ यंत्रों के साधन के लिए मन्त्र जाप की आवश्यकता भी पड़ती है। मंत्रों को यंत्रों के साथ ही दे दिया गया है।

७२ का यन्त्र

घड़े को जल से भरकर विधिपूर्वक रखे। फिर आम के पत्ते पर रोली बिछाकर अनार की कलम से यन्त्र लिख कर चन्दन, अक्षत, फल, फूल, मिष्टान्न, धूप, दीप आदि से पूजन करे तथा मन में कामेश्वरी देवी का ध्यान करे।

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

यन्त्र को लिखते समय 'श्री पार्श्वनाथाय नमः' इस यंत्र का जप करता रहे। नीचे प्रदर्शित स्वरूप वाले यन्त्र का लेखन कार्य जब पूरा हो जाय, तब पूजन करने के उपरान्त

"ओ३म नमो कामदेवाय महाप्रभाय ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा"

इस मन्त्र का ७२ बार जप करे। मन्त्र को जपने के बाद यन्त्र को मिटा दे। तदुपरान्त फिर लिखे और पूजन, जप आदि करे। इस तरह २४ बार यन्त्र को लिखे। २४वें यन्त्र के बाद मन्त्र की २१ माला जपे। प्रतिदिन इसी नियम से करता रहे। एक दिन के लिखे यन्त्र को दूसरे दिन गेहूँ के आटे में थोड़ा सा शहद, घी और बूरा मिलाकर गोली बाँध कर, नदी में बहा दे। स्वयं जौ की रोटी तथा तथा बथुआ के बिना नमक के साग को खाये। पृथ्वी पर शयन करे तथा ब्रह्मचर्य से रहे, झूठ न बोले। ७२ दिन तक इसी क्रिया को करता रहे तथा इस अवधि में सवा लाख यंत्रों का जप पूरा कर ले। जब साधन पूरा हो जाय तब होमादि करके ब्राह्मण को भोजन करावे। तदुपरान्त प्रतिदिन एक यन्त्र लिखकर उसकी पीठ पर यह लिखे—

'७२ टके चलन बाज़ार दे'

उसे आसन के नीचे रख कर ७२ यंत्र जप ले। ७२ टके चलन बाज़ार मिलें तो किसी से कहे नहीं, क्योंकि कहने से बन्द हो जायेंगे। यदि आसन के नीचे नहीं आयेंगे तो किसी तरह से कुटुम्ब के खर्च के लायक धन प्राप्त होता रहेगा। इसके उपरान्त यन्त्र को आसन के नीचे से उठाकर पाग में रखले तथा दूसरे दिन गोली बाँधकर नदी में बहादे। जो यंत्र किनारे पर आ जाये, उसे एक आले में रख दे तथा उस पर सफेद वस्त्र का पर्दा डाल दे और प्रतिदिन पुष्प चढ़ा कर धूप दे दिया करे।

इस यन्त्र की दूसरी मुसलमानी विधि यह है—

कागज़ पर नई स्याही से सूर्योदय से पूर्व एक यंत्र लिखे। यह कार्य उस महीने के पहले बृहस्पतिवार से आरम्भ करे। फिर नाभि के बराबर पानी में खड़े होकर पश्चिम की ओर मुँह करके ४४४

बार अथवा ३३३३ बार मंत्र का जप करे। मन्त्र की विधि इस प्रकार है—

एक बार 'विस्मिल्लाहिरर्हमानिर्रहीम' कहे। फिर यह मन्त्र पढ़े—

'अजिवो या जिब्राईल बहक़्क़ या वासितो'

उक्त मन्त्र के आदि और अन्त में ७१ बार दारूद पढ़े, जो इस प्रकार है—

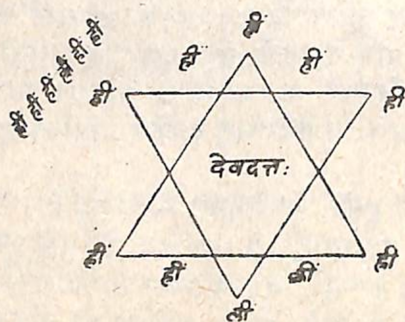
'अल्ला हुम्मासल्ले अला मुहम्मदिन व अल आले मुहम्मदिन व वारिक वसल्लम्'

इस प्रकार ७२ दिन में सिद्धि प्राप्त होती है। यन्त्र को प्रतिदिन धागे में पिरोकर अपने स्थान के दरवाज़े पर टाँग दिया करे और दूसरे दिन आटे में गोली बाँध कर, गोली को बूरे में लपेटकर यन्त्र को नदी में बहा आये। ७२ दिन पीछे एक यन्त्र लिखकर ७२ यन्त्र जप लिखा करे। इस क्रिया को आरम्भ करने के १० दिन बाद ही कहीं से भरण-पोषण योग्य धन को प्राप्ति होने लगेगी। ७२ दिन बाद दस पाँच ब्राह्मणों को भोजन करा देना चाहिए।

यह साधन रोजी-रोटी देने वाला है।

लक्ष्मी प्राप्ति का यन्त्र

नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर निम्नलिखत मन्त्र का जप करे—



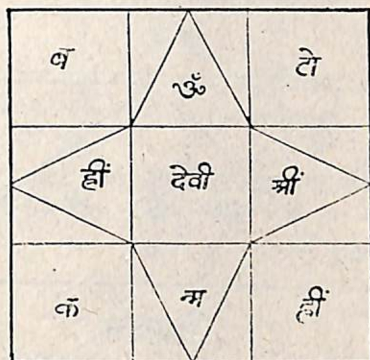
"ओ३म श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्यै नमः"

पहलें तीन लाख बार जापने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर दशांश होमादि कर ब्राह्मणों को भोजन कराये तथा प्रतिदिन यंत्र को धूप देकर १०८ बार मन्त्र का जप करे तथा यन्त्र को अपनी पगड़ी में रखे।

यंत्र के बीच में जहाँ 'देवदत्त:' लिखा हुआ है, वहाँ साधक को अपना नाम लिखना चाहिए।

बालाजी का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को दिवाली की रात्रि को लिखकर, धूप



दीप, नैवेद्य से विधिपूर्वक हनुमानजी की पूजा करे तथा यन्त्र को आगे रखकर यह मन्त्र पढ़े—

"बौरी लक्ष्मी देवी लक्ष्मी दे सिधि करणी मम
भंडार पुरी क्रियं स्वाहा'

तदुपरान्त यन्त्र को द्रव्य अथवा अन्न के भीतर रखकर ६ दिन बाद खर्च करना आरम्भ करे तो कमी न पड़ेगी।

बाल रक्षा यन्त्र

मंगलवार के दिन हनुमान् जी का पूजन कर निम्नलिखित यंत्र को १०८ बार जपे। ७ मंगलवारों को निरन्तर जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र यह है—

"ओ३म महावीर हनुमंत वीर तेरे तरकस में सौ-सौ तीर
खिण बाएं खिण दाहिने खिण खिण आगें होय
अचल गुसाइं सेवता काया भंग न होय
इन्द्रासन दी बाँध के वारे घूमें मसाण
इस काया को छलछिद्र कापे तो हनुमंत तेरी आण"

रं रं रं
रं रं रं
रं रं रं
रं रं रं
ठं ठं ठं
ठं ठं ठं
देवदत्तः
रं रं रं
रं रं रं
रं रं रं
श्री हनुमान जी
रं रं रं
श्री लक्ष्मी जी

जब मन्त्र सिद्ध हो जाये तो नीचे प्रदर्शित यन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर गुग्गल दे तथा डोरा में बाँधकर ३ गांठ दे (प्रत्येक गांठ को देते समय ७ बार मन्त्र का जाप करे) यन्त्र के बीच में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ बालक का नाम लिखे।

इस विधि से निर्मित यन्त्र को बालक की दाईं भुजा पर बाँध देने से नजर तथा भूत-प्रेतादि के दोष दूर हो जाते हैं।

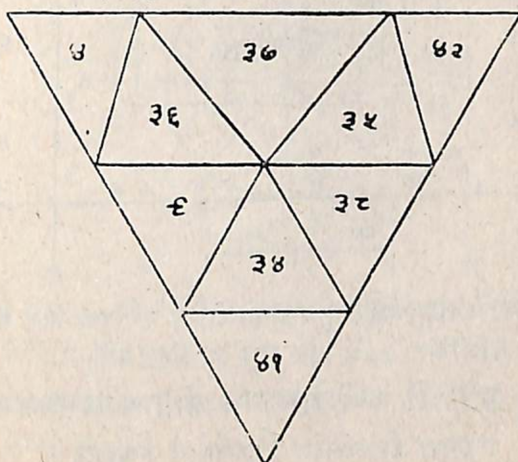
भैंस का यंत्र

जो भैंस बच्चे को न लगाये तथा दूध न दे, उसके सींगपर नीचे प्रदर्शित यंत्र को बाँध देना चाहिए। इससे वह दूध देने लगेगी तथा बच्चे को लगा उठेगी।

३४	१८	३९

शत्रु को दुःखी करने का यंत्र

वृश्चिक के चन्द्रमा में नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गधे की खाल



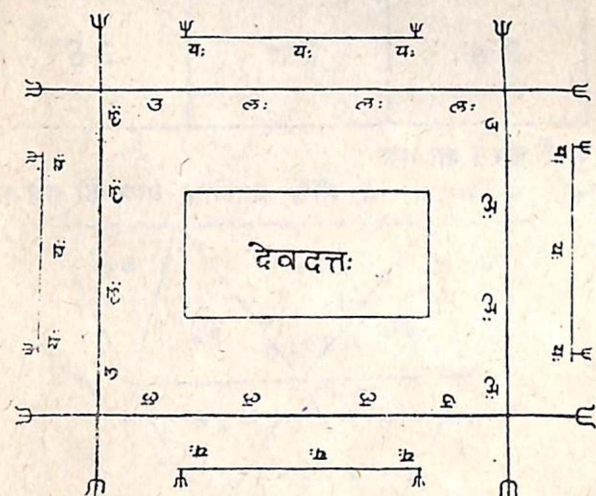
पर लिखे तथा यंत्र के नीचे शत्रु की माता का नाम लिख कर गुग्गल की धूनी दे तथा १०८ बार निम्नलिखित मंत्र पढ़े—

"ओ३म ह्लीं श्रीं त्रिपुर भैरवं वीर मम शत्रुं अमुकस्य पीड़ा कुरु कुरु स्वाहा।"

मन्त्र में 'अमुकस्य' के स्थान पर शत्रु के नाम का उच्चारण करे। इसके पश्चात् यन्त्र को शत्रु के घर की चौखट के नीचे अथवा घर के आँगन में अथवा मार्ग में गाढ़ दे तो बैरी को दुःख प्राप्त होता है।

शत्रु को नष्ट करने का यंत्र

रविवार के दिन शमशान से युक्तिपूर्वक लाये हुए कोयले तथा हरताल को पानी में घोल ले। फिर रोटी के ऊपर नीचे प्रदर्शित यंत्र



को लिखकर, बताशा और गुग्गल को अग्नि पर रख कर यन्त्र को धूनी दे तथा निम्नलिखित १०८ बार मंत्र का पाठ करे—

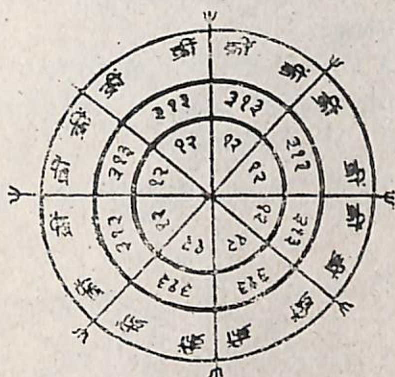
'ओ३म ह्लीं श्रीं क्लीं शमशान वीराय अमुकस्य नाशय नाशय विध्वंसय विध्वंसय स्वाहा।'

इस मन्त्र में अमुकस्य के स्थान पर शत्रु के नाम का उच्चारण करे तथा यन्त्र के जहाँ 'देवदत्तः' लिखा हुआ है, वहाँ शत्रु के नाम को लिखे।

मंत्र का जप करते के पश्चात् यन्त्र को शमशान में अथवा मार्ग के चौराहे पर गाढ़ दे तो इस यन्त्र के प्रभाव से तीन महीने की अवधि में शत्रु का विनाश हो जाता है।

गये हुए मनुष्य को लौटाने का यंत्र

यदि कोई मनुष्य रूठ कर चला गया हो, तो नीचे प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर कुँकुम और गोरोचन से लिख कर चरखे से बाँध कर, चरखे को उल्टा चलाये। जब तक रूठ कर गया हुआ



मनुष्य घर वापस लौट कर न आ जाय, तब तक प्रतिदिन चरखे में २१ उल्टे चक्कर दिया करे।

इस यंत्र के प्रभाव से रूठ कर गया हुआ मनुष्य शीघ्र ही घर लौट कर आ जाता है।

सर्ववशीकरण यंत्र

नीचे प्रदर्शित यंत्र को पत्थर पर लिखकर चूल्हे में गाढ़ कर ७ दिन रक्खे। यन्त्र के नीचे, जिसे वश में करना हो, उसकी माता का नाम लिख दे। इस यन्त्र के प्रभाव से शीघ्र ही इच्छित व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

७ मं ४४४ ७००				
१००	११७०	४७६०	३०	४
५॥	७४-२३-१::		÷	७

सर्वजन वशीकरण यंत्र

नीचे प्रदर्शित यंत्र को दीपावली की रात्रि में अष्टगंध से लिख कर धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाकर पूजन करे तथा निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जप करे। मंत्र यह है—

"ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा"

श्रीं १२ ह्रीं १२ श्रीं १२ ह्रीं १२
सं सं सं सं
गें ह्रीं यं मि
रा त्यं सं त्यं
ह्रीं श्रीं स्त्रीं ह्रीं

मन्त्र-जाप तथा यंत्र-पूजन के उपरान्त यन्त्र को अपनी पगड़ी में रखना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से सबका वशीकरण होता है।

राजा प्रजा-वशीकरण यंत्र

दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर आसन के नीचे गाढ़ देने से राजा-प्रजा वशीभूत होते हैं। यंत्र में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

४४	क्रीं	४४
ह्रीं ह्रीं	देवदत्त	यो ह्रिश्चं
४४	क्रीं	४४

सास-श्वसुर वशीकरण यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गेहूँ की रोटी पर लिखकर काले कुत्ते को खिलाने से श्वसुर और कुतिया को खिलाने से सास का वशीकरण होता है।

ॐ	ह्रीं		५
क्लीं १०		१	६
क्लीं	श्रीं		१७

वशीकरण यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को केशर-कस्तूरी से कपड़े पर लिखकर कपड़े की बत्ती बनाकर जलाये। उस राख को जिसे खिलाया जायेगा, वह वश में हो जायेगा।

यन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुकी अमुका के वश्य हो' वाक्य लिखा है, वहाँ साध्य और साधक स्त्री-पुरुष का नाम लिखना चाहिए।

स्व स्वा भा स्व

		३	६	२१	
		२१	२१	१	
३	स्व स्व अश्व	२१	६६	६	स्थानी स्वा
३	ज द्री ब्री ग्री	धी	डा	स्य	सहागार
३	स्व द्रा ब्र २०	ड्री	स्व	द	सर्वांगिन
		३ व	३३१	द्र भ्र	
		आ	३३	१८	

४४४४४४४४३३

४४४४४४४४६६

गर्भ स्थिति का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को जिस रविवार के दिन मूल नक्षत्र हो, उस दिन अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर ताबीज में भरकर स्त्री की बायीं भुजा में बाँधे। इस यन्त्र के प्रभाव से वाँझ स्त्री भी गर्भवती होकर, पुत्र को जन्म देती है। यदि पुष्प नक्षत्र के सूर्य में इस

यन्त्र को १०८ बार पान करके ऊपर दूध से लिखकर बाँझ स्त्री को खिलाये तो पुत्र उत्पन्न होता है। यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा हुआ है, वहाँ साध्य स्त्री का नाम लिखना चाहिए।



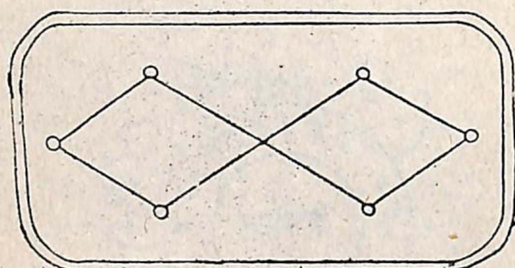
बंधन छूटने का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को कपूर, केशर, कस्तूरी, गोरोचन से वसूला पर लिखकर, उस पर लंगी करने से बन्धन में पड़ा हुआ मनुष्य बन्धन (कैद) से छूट जाता है।

हं उ	है ०	मी प्य	करि	ह्रीं [illegible]
अक राम	अर कर	सं सत	तई	मखी

धर्म न डिगने का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को दिवाली की रात्रि में, भोजपत्र के ऊपर एक साँस में लिखकर कमर में बाँधने से धर्म नहीं डिगता।



ॐ श्रीं पं पं फं यं फट् स्वाहा

भूत उतारने का यंत्र

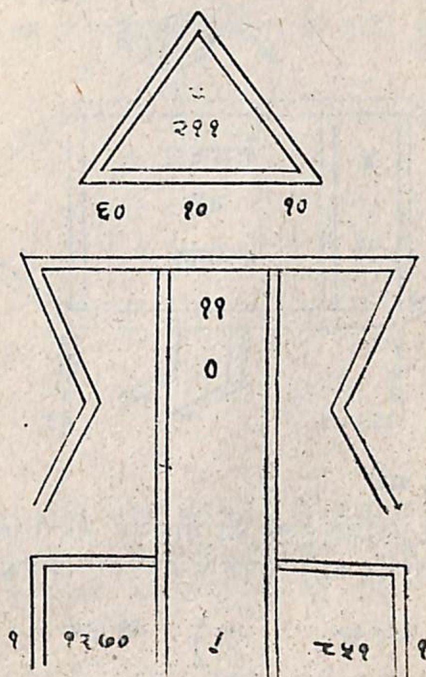
दायीं ओर प्रदर्शित यन्त्र को कागज पर लिखकर पलीता बनाकर सुंघाने तथा इस यन्त्र में राई भरकर जलाने से भूत-जिन्न उतर जाते हैं।

१२	११
२	३

प्रेत वशीकरण यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को कपड़े पर लिखकर बत्ती बनाकर दीपक में रखकर जलाने से प्रेत वशीभूत हो जाते हैं।

बत्ती बनाने से पूर्व यन्त्र का विधिपूर्वक गंधादि से पूजन कर लेना तथा धूपादि देना आवश्यक है।



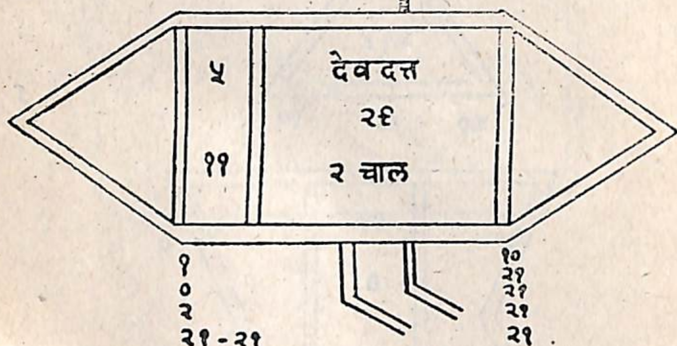
काले कौवे का यंत्र

यदि काला कौआ लगा हो तो दायीं ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोज-

पत्र पर लिखकर बाँधने से उतर जाता है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिये।

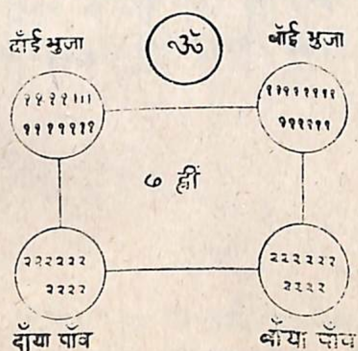
५ ४ ४ ४ ४ ८





नपुंसकता कारक यंत्र

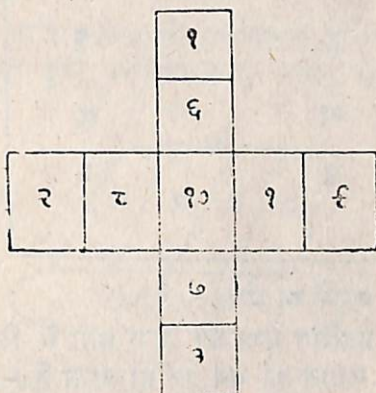
नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर पलीता बनाए तथा पलीता को काले कपड़े में लपेटकर प्रत्येक यन्त्र में सुई



रखकर काले रेशमी डोरे में पिरोकर चूल्हे में गाढ़ दे। जिसके नाम से यह विधान किया जायेगा, वह नपुंसक हो जायेगा।

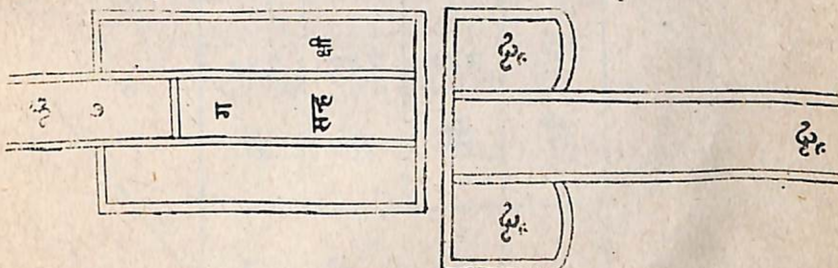
सूंड़ी की पीड़ा का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्षित यन्त्र को रविवार के दिन प्रातःकाल लिखकर कमर में बाँधने से सूंड़ी की पीड़ा दूर हो जाती है।



आकर्षण यंत्र

नीचे प्रदर्शित दोनों यन्त्रों को बहेड़े की पत्ती पर आमने-सामने लिखकर विधिपूर्वक पूजन कर पृथ्वी में गाढ़ दे। इस यन्त्र के प्रभाव से जिस किसी से मिलने की इच्छा हो, वह आकर्षित होकर स्वयं आ मिलता है।



टिड्डी से रक्षा का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को शनिवार के दिन नील से लिखकर खेत में गाढ़ देने से उस खेत को टिड्डियाँ नहीं खाती हैं।

६		५
	५	
२१		१६
	४	
४		३

मसान का भय दूर करने का यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को शुभ घड़ी में लिखकर बालक के गले में बाँध देने से मसान का भय दूर हो जाता है। यन्त्र को भोजपत्र

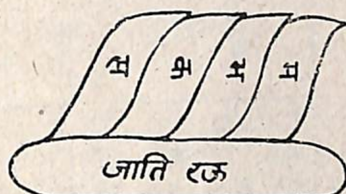
ऐं	२५	२५	ह्रीं
ह्रीं	२५	ह्रीं	२५२
२५२	२५२	२५२	२५२
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
[illegible] क्री क्री क्री क्री देवदत्त			

पर अष्ट गंध से लिखना तथा विधिपूर्वक पूजना चाहिए। यन्त्र को ताबीज में भरकर बाँधना चाहिये।

यन्त्र में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का, अर्थात् बालक का नाम लिखना चाहिए।

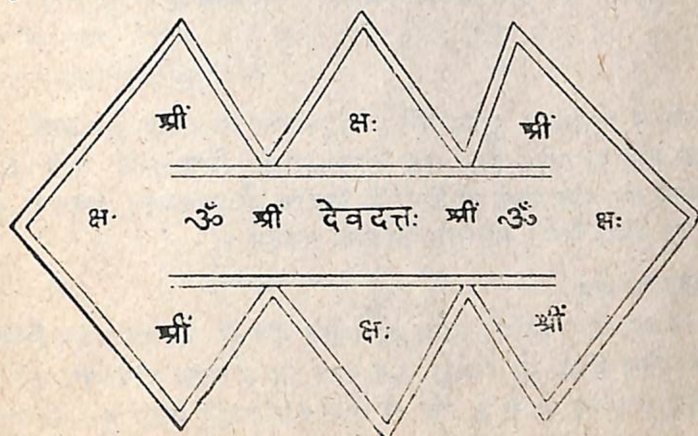
पुरुष वशीकरण यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर जो स्त्री अपनी बायीं भुजा पर बाँधती है, उसका पति उसके वशीभूत रहता है।



स्वामी वशीकरण यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन से लिखकर शराव-सम्पुट (दो सकारों) के बीच रखकर अग्नि में इस प्रकार तपावे कि

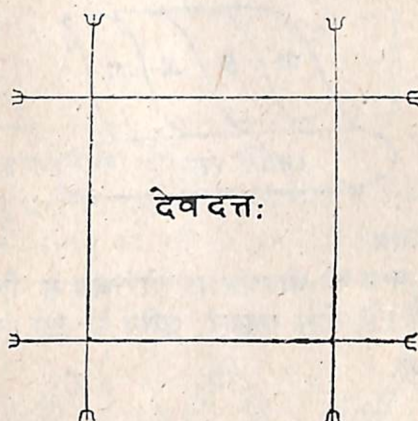


यन्त्र जलकर भस्म हो जाय। जब शराव-सम्पुट ठण्डा हो जाय, तब यन्त्र की राख को पानी में घोलकर पी जाने से स्वामी वश में हो जाता है।

यन्त्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति (स्वामी) का नाम लिखना चाहिए।

दो मित्रों में विरोध कराने का यंत्र

श्मशान के कपड़े या कफन पर मेंढा के रक्त में श्मशान के कोयले को मिलाकर नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को कौये के पंख

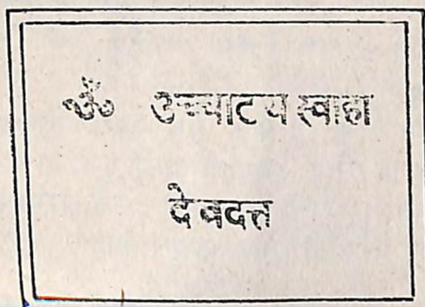


की कलम से लिखकर पूजन करे। तदुपरान्त यन्त्र को उस मार्ग में ७ अंगुल नीचे गाढ़ दे, जिस पर होकर दोनों मित्र आते जाते हों। इस स्थान पर पाँव पड़ते ही दोनों में विरोध हो जायगा। 'देवदत्त' के स्थान पर दोनों मित्रों का नाम लिखना चाहिए।

सर्वसिद्धदाता यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिखे तथा ३१ दिन में 'ॐ ह्रीं स्वाहा' इस मन्त्र का ३ लाख बार जप करे। फिर इस यन्त्र को पगड़ी में रखे तो श्रेष्ठ वशीकरण होता है। मारण

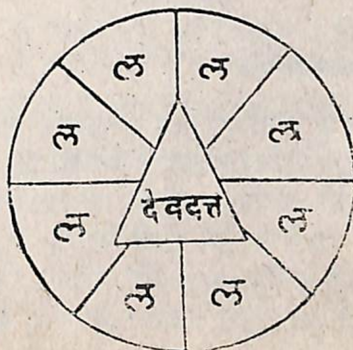
के लिए करं के तेल की आहुति देनी चाहिए। आकर्षण के लिये इस यन्त्र को काली ठीकरी पर लिखकर अग्नि में रखना चाहिये तथा उच्चाटन के लिए शत्रु के घर में गाढ़ देना चाहिए।



यन्त्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त:' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए तथा जहाँ 'उच्चाटय' लिखा है, वहाँ वशीकरण, आकर्षण, मारण में से जो भी मनोरथ हो, उसे लिखना चाहिये।

वाचास्तम्भन यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से लिखकर केशर, घृत, मूँग तथा काले और पीले रंग के फूलों से पूजन करना चाहिये।

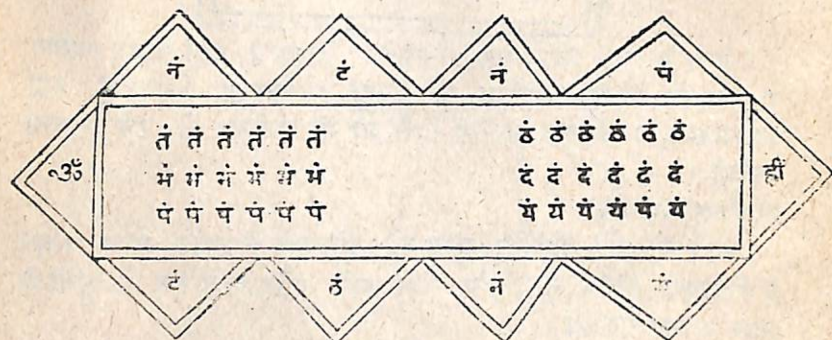


यन्त्र लेखन के उपरान्त एक ब्राह्मण को खीर तथा गुड़ का भोजन कराना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से वाणी का स्तम्भन हो जाता है। यदि मन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ दिया जाय तो शत्रु कुछ भी बुराई नहीं कर पाता। यन्त्र के मध्य में जहाँ 'देवदत्त' लिखा हुआ है, वहाँ साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

सम्मानदाता यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्ट गंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर विधि पूर्वक पूजन करने के उपरान्त दायीं भुजा में बाँधे तो वह यन्त्र-धारी व्यक्ति जहाँ भी जाता है, वहीं पर उसे सम्मान प्राप्त होता है।

निम्नलिखित यन्त्र को शाह अब्दुल कादर जीलानी को प्रणाम



भूतादिक दोष निवारण यंत्र

करके लिखे। यन्त्र में रोगी का नाम लिखकर, यन्त्र को नए वस्त्र में लपेटकर बत्ती बनाले। फिर दीपक में चमेली का तेल भरकर, उसमें यन्त्र वाली बत्ती को डालकर, दीपक को पवित्र स्थान पर रखकर जलाये। दीपक रखने से पूर्व पीली मिट्टी से जमीन को पोत ले। तदुपरान्त दीपक के समीप फूल और मिठाई रक्खे यन्त्र की बत्ती बनाने से पूर्व उसके ऊपर फूल चढ़ाकर धूप-दीप से पूजन करले।

दीपक के जल जाने पर रोगी की दृष्टि को दीपक की लौ पर जमाने के लिये कहे। जैसे ही रोगी की दृष्टि दीपक की लौ पर जायेगी, वैसे ही भूतादि का दोष निवारण हो जायगा और रोगी स्वस्थ हो जायेगा।

यन्त्र को इस प्रकार लिखना चाहिए—

या बुदूह या बुदूह

या कयूत
या कयूत
या कयूत
या कयूत
या कयूत
या कयूत
या कयूत

याहू	११	१४	१	८	या वसत
याहू	४	५	१०	१५	या वसत
याहू	६	३	१६	९	या वसत
याहू	१३	१२	७	२	या वसत

याहू
याहू
याहू

या वसत
या वसत
या वसत

या बुदूह या बुदूह

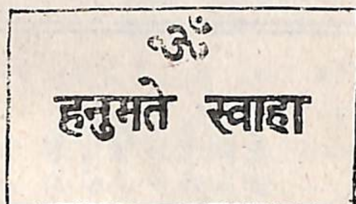
बहक्क या जिब्राईल
या मीकाईल या इस्राफील
या इज्राईल
जो कोई अमुक की देही को दुख दे रहा है
उसे इस फलीते से जला दीजिए

उक्त यन्त्र में 'अमुक' के स्थान पर रोगी का नाम लिखना चाहिए।

अखाड़ा स्तम्भन यंत्र

नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को मृगमद (कस्तूरी) से भोजपत्र के ऊपर लिखकर विधि पूर्वक पूजन करे। तदुपरान्त त्रिलोह के ताबीज में

भरकर दायीं भुजा में अथवा गले में बाँधकर कुश्ती लड़ने के लिए जाये तो उसे विजय प्राप्त हो। यह अखाड़ा स्तम्भन यन्त्र कुश्ती लड़ने वाले पहलवानों के लिये अत्यन्त लाभदायक है।



पेट का दर्द दूर करने का यंत्र

इस यन्त्र को काँसी के पात्र में लिखकर धोकर पीने से पेट के दर्द में तत्काल लाभ होता है।

१६	२	ग्रुवार
२	५।१	हे
अज	कुंन	मलमा

दोनों प्रकार की बवासीर का यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर भुजा में बाँधने से दोनों प्रकार की खूनी और बादी बवासीर दूर होती है।

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४.२	४६	३
४८	४	५	४३

चेचक पर लाभदायक यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर चेचक के रोगी की भुजा पर बाँध देने से रोग का प्रकोप शान्त हो जाता है।

१	२१६९	११	८
११	७	२	१२६८
६	९	३१७९	३
३१७	४	५	१०

प्रीति उत्पन्न करने का यंत्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर तथा पूजनादि कर, अपने प्रेमी (वह चाहे स्त्री हो या पुरुष) के घर की जमीन में दबा देने से उसके हृदय में प्रीति उत्पन्न हो जाती है और वह स्वयं आकर मिलता है।

१	१५	६	५
११	१९	६	१९
७	८	१२	८

वशीकरण यंत्र

इस यन्त्र को कपड़े पर लिखकर उसका फलीता बनाकर तिल के तेल में धीरे-धीरे जलाते रहने से जिस प्रेमी की कामना होगी, वह कुछ दिनों में स्वयं ही आकर मिल जायगा।

१४	१०	८	९
७	१२	१२	२
९	६	१	६
४	१८	१०	५

बच्चे का रोना बन्द करने का यंत्र

जो बच्चा अधिक रोता हो उसके गले में इस यन्त्र को बाँध देने से उसका रोना कम या बन्द हो जाता है। यन्त्र को साफ कागज पर केशर से लिखकर, ताबीज या मोमजामे में भरकर पहना देना चाहिए।

२	९	४
७	५	३
६	१	८

स्त्री वशीकरण यंत्र

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर से अपनी हथेली पर लिखकर प्रणाम करने से स्त्री शीघ्र वशीभूत हो जाती है।

६१	१७	१६
१७	कुं	९५
४॥	९	८१

कैदी को छुड़ाने का यंत्र

यदि कोई व्यक्ति कैद में पड़ा हो और उसे छुड़ाना हो तो निम्न-प्रदर्शित यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। विधि इस प्रकार हैं—

रविवार के दिन एक जंगली काला कबूतर लावे और उस कबूतर के गले में ऊपर बताये गये यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, बाँध दे तथा कबूतर को उड़ा दे। यन्त्र लिखते समय साधक को पवित्र रहना चाहिए तथा लिखने के उपरान्त यन्त्र का विधिपूर्वक

या हाफ़िज	३३२	३३८	२२१०
या हाफिज	३३२	३३४	२३६
६ ६	३३७	३३०	३३५
कैदी का नाम कैदी के पिता का नाम	या हाफिज	या हाफिज	या हाफिज

पूजन भी कर लेना चाहिए। जिस स्थान पर कैदी का नाम तथा पिता का नाम लिखा है, वहाँ कैदी का और उसके पिता का नाम लिख देना चाहिए।

चूहे भगाने का यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर, घर में रखने से चूहे घर को छोड़ कर भाग जाते हैं। यदि यन्त्र को खेत में रखा जावे, तो चूहे खेत को भी छोड़ जाते हैं।

५१	२	४२	७
४८	८	५०	२
५	४७	३	५३
४	५२	२	४६

बच्चे का भय दूर करने का यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिखकर, यथाविधि पूजन करने के उपरान्त, त्रिलोह के ताबीज में भर कर, उस बालक के गले में बांध दे, जिसे बुरे स्वप्न दिखाई देते हों अथवा जिसे भय अधिक लगता हो। इस यन्त्र के प्रभाव से बालक का भय

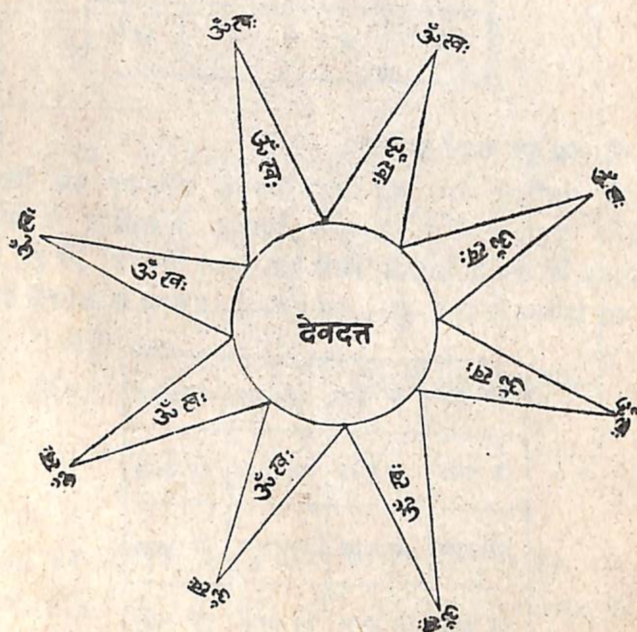
या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता

दूर हो जायगा और उसे बुरे स्वप्न दीखने भी बन्द हो जायेंगे। यन्त्र के ताबीज को काले डोरे में डाल कर गले में बाँधना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से बालक के ऊपर यदि कोई ऊपरी साया हो, तो वह भी दूर हो जाता है।

शत्रु वशीकरण यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, विधिपूर्वक पूजन करे तथा पुष्प चढ़ावे। तदुपरान्त यन्त्र को शहद में डाल कर रख दे।

इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु वशीभूत हो जाता है। यन्त्र के मध्य भाग में जहां 'देवदत्त' लिखा है, उस स्थान पर शत्रु का नाम लिखना चाहिए।



व्यापार बुद्धि यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को दड़े भोजपत्र पर अष्ट गंध से लिखकर यथाविधि पूजन करे, तदुपरान्त उस भोजपत्र को शीशे में मढ़वाकर

६९	८२	८१	८६
८१	७५	७६	८१
७४	७८	७५	७१
८४	७२	७२	७६

दूकान के भीतर किसी स्थान पर टँगवा दे तो व्यापार में बहुत वृद्धि होती है। इस यन्त्र को घी में सिन्दूर मिला कर दूकान की दीवाल के ऊपर भी लिखा जा सकता है।

समाप्त